श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य

मूल संस्कृत ग्रन्थ श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् पर आधारित

(भावार्थ सहित)

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान पर्थ,
ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव से भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- <u>ब्रह्म मनोभाव</u>: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- <u>आत्मा मनोभाव</u>: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- <u>माया मनोभाव</u>: माया प्रकृति के तीन गुण (सत, रज और तमस) के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य

मूल संस्कृत ग्रन्थ श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् पर आधारित

(भावार्थ सहित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, पर्थ

ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

Website: https://shriramkatha.org

Email: srkperth@outlook.com

प्रार्थना

भगवान् के अनन्य भक्त पितामह श्री भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को कलियुग में अल्प प्रयास से सुख शांति एवं समृद्धि प्राप्त करने का साधन भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों का जपन करना बताया है, जिसको महर्षि वेद व्यास ने संस्कृत के श्लोकों में लिपिबद्ध किया है। इसके महात्मय एवं जपने से चमत्कारिक शक्तियों द्वारा जन कल्याण कोई नया विषय नहीं है। अनगनित ग्रन्थ एवं ऋषियों ने भी इसके महात्मय के बारे में वर्णन किया है। संस्कृत लिपिवद्ध होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल ग्रन्थ के भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों को यथाचित रखते हुए हिंदी काव्य में भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है। कविता रूप में पाठ करने से स्वर उच्चारण पर अति आनंद आता है, तथा गायन तरंगों द्वारा भगवान् के प्रति आकर्षण बढ़ता है।

आप सभी जानते हैं कि जब कलियुग का आगमन हुआ तो भारतवर्ष में सत्य धर्म पालनहार, धर्म के अनुयायी एवं न्याय प्रिय सम्राट शिरोमणी परीक्षित का शासन था। अब काल का चक्र देखिये। एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। महाराज परीक्षित एक दिन आखेट करने निकले। उन्होंने उस दिन स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। उन्होंने स्वयं ही कलियुग को स्वर्ण में निवास करने की अनुमति दे रखी थी। कलियुग उसमें घुस गया, और उसने सम्राट शिरोमणी परीक्षित की बुद्धि पलट दी।

आखेट करते हुए सम्राट शिरोमणी परीक्षित ने एक हिरन के पीछे अपना घोड़ा लगा दिया। बहुत दूर तक पीछा करने पर भी वह हिरन न मिला। थकावट के कारण उन्हें भूख और प्यास लग रही थी। एक मुनि आश्रम दिखाई दिया। यह एक वृद्ध मुनि महर्षि शमीक जी का आश्रम था। महर्षि ध्यान में मग्न थे। सम्राट ने ध्यानमग्न सम्राट से जल माँगा। ध्यानमग्न मुनि को सम्राट शिरोमणी परीक्षित का स्वर सुनाई ही नहीं दिया। कलि के प्रभाव से सम्राट की बुद्धि भ्रमित हो चुकी थी। थके और प्यासे सम्राट परीक्षित को मुनि के इस व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया। कलि के प्रभाव से सम्राट परीक्षित ने सोचा कि मुनि ने घमंड के कारण हमारा तिरस्कार किया है। इस अपराध का उन्हें कुछ दंड देना अवश्य चाहिए। पास ही एक मरा हुआ साँप पड़ा था। सम्राट परीक्षित ने कमान की नोक से उसे उठाकर मुनि के गले में डाल दिया, और अपनी राह ली। मुनि के श्रृंगी नाम के एक महातेजस्वी पुत्र थे। वह स्नान ध्यानादि करने पास की नदी में गए हुए थे। जब आश्रम लौटे तो पिता के गले में मृतक सर्प देख क्रोध में आ गए। कोपशील महर्षि श्रृंगी पिता के इस अपमान को सहन नहीं कर पाए और उन्होंने कमंडल से जल लेकर (संकल्प

कर) श्राप दिया कि जिस पापात्मा ने मेरे पिता के गले में मृत सर्प की माला पहनाई है, आज से सात दिन के अंदर तक्षक नाम का सर्प उसे डस लेगा। पिता के ध्यानावस्था से वापस आने पर पुत्र महर्षि श्रंगी ने उपर्युक्त उग्र श्राप सम्राट शिरोमणी परीक्षित को देने की बात कही। महर्षि को पुत्र के अविवेक पर दुःख हुआ। उन्होंने एक शिष्य द्वारा सम्राट परीक्षित को श्राप का समाचार कहला भेजा। सम्राट परीक्षित ने ऋषि के श्राप को अटल समझकर अपने पुत्र युवराज जनमेजय को राजगद्दी पर बिठा दिया, और सब प्रकार से मरने के लिये तैयार होकर अनशन व्रत करते हुए महर्षि श्री शुकदेव से श्रीमद्भागवत की कथा सुनी। सातवें दिन सर्पराज तक्षक ने आकर उन्हें डस लिया। विष की भयंकर ज्वाला से उनका शरीर भस्म हो गया।

सम्राट परीक्षित की मृत्यु के बाद कलियुग को रोक टोक करने वाला कोई न रहा और वह उसी दिन से अकंटक भाव से शासन करने लगा।

सम्राट जनमेजय इस प्रकरण से बहुत आहत हुए। उन्होंने सारे सर्पवंश का समूल नाश करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने सर्प सत्र (सर्प यज्ञ) के आयोजन का निश्चय किया। यह यज्ञ इतना भयंकर था कि विश्व के सारे सर्पों का महाविनाश होने लगा। उस समय एक बाल ऋषि अस्तिक उस यज्ञ परिसर में आए। उनकी माता मानसा एक नाग थीं तथा उनके पिता एक ब्राह्मण थे। बाल ऋषि अस्तिक के आग्रह पर सम्राट जनमेजय ने सर्प सत्र (सर्प यज्ञ) तो समाप्त कर दिया परन्तु उनसे एक निवेदन किया। सम्राट जनमेजय बोले, 'हे बाल ऋषिवर, कलि के कारण मेरे पिता की बुद्धि भ्रम हुई क्योंकि उन्होंने स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। महर्षि कश्यप, जो मेरे पिता को बचा सकते थे, लोभ वश कलि द्वारा धन देने पर धन की प्राप्ति होने पर पिता को बचाने नहीं आए। अब सांसारिक व्यक्तियों के पास स्वर्ण भी होगा ही। लोभ से भी बचना असंभव। अतः कलि से कैसे रक्षा की जा सकती है?'

तब बाल ऋषि अस्तिक ने अपने गुरु एवं महर्षि वेद व्यास के परम शिष्य महर्षि वैशम्पायन जी का आवाहन किया। महर्षि वैशम्पायन तब वहां पधारे।

महर्षि वैशम्पायन ने तब अपने गुरु महर्षि भगवान् वेद व्यास रचित श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का उल्लेख करते हुए वरदान दिया कि जो भी नर नारी श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का जाप करेंगे उनके गृह में कलि का वास नहीं होगा। श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता,

सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होगा, तथा उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः ।।

यह ग्रन्थ सबके लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है। इस काव्य में ३६५ चौपाइयां हैं। अगर एक चौपाई का भी हृदय से प्रतिदिन गायन किया जाए तो एक वर्ष में सम्पूर्ण काव्य पढ़ा जा सकता है एवं भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

मैं कोई संस्कृत का ज्ञानी पंडित नहीं हूँ, अतः शब्दार्थ अथवा शब्द-विन्यास में कोई त्रुटि हो गई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरा उद्देश्य साहित्यिक न होकर भक्ति पूर्ण भावना से प्रेरित है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हरि विष्णु से आप सब के स्वास्थ्य, ऐश्वर्य, धन-धान्य, यश, ईश-प्रेम एवं प्रभु कृपा की कामना करते हुए, प्रभु के चरणों में आपका अपना,

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान पर्थ
ऑस्ट्रेलिआ - ६०२५

श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य

मूल संस्कृत ग्रन्थ श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् पर आधारित

(भावार्थ सहित)

स्तुति

वन्दे श्री कृष्णचन्द्रम्, श्री सच्चिदानंद स्वरूपं ।
बुद्धि प्रदायणं सद्गुरुम्, सर्वकार्य सम्पूर्णम् ।।(१)

भावार्थ: *सच्चिदानंद स्वरूप, सुबुद्धि दायक, सद्गुरु एवं सर्व शुभ कार्य सम्पूर्ण करने वाले भगवान् श्री कृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ।*

वन्दे कृष्णद्वैपायनम्, जनकल्याण हेतु तत्परं ।
वेद रुपीकमलसूर्यम्, शमादिक आश्रयदातम् ।।(२)

भावार्थ: *जनकल्याण हेतु सदैव तत्पर कमल एवं सूर्य रूपी वेद के दाता, शांति प्रदायक भगवान् महर्षि श्री वेद व्यास जी को मैं नमन करता हूँ।*

वन्दे सहस्त्र मुख च नेत्रं, सहस्त्रनाम पुरुषोत्तम ।
आदि अनंत न ज्ञानम्, ह्रदय शांति प्रदायनं ।।(३)

भावार्थ: *सहस्त्र मुख, सहस्त्र नेत्र एवं सहस्त्र नाम वाले पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम की मैं वन्दना करता हूँ, जिनका ज्ञानी भी 'आदि और अंत' पाने में असमर्थ हैं, तथा जिनके स्मरण मात्र से ह्रदय को शान्ति प्रदान होती है।*

धर्मराज युधिष्ठिर एवं पितामह भीष्म संवांद

धर्मराज विचारहिं इकबारा, केहि विधि तरहिं जन संसारा ।
सुनहिं ना जस को उपदेसा, जो तारहिं जग हरि प्रेयसा ।।(४)

भावार्थ: *धर्मराज युधिष्ठिर ने एक बार ऐसा विचार किया कि भगवत प्रेमी जन साधारण को भवसागर से अल्प समय में तार दे, ऐसा कोई उपदेश नहीं सुना। (पौराणिक कथाओं के अनुसार यह उस समय की घटना है जब पितामह भीष्म महाभारत युद्ध में बाणों की शैया पर अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस समय धर्मराज युधिष्ठिर ने उनसे यह प्रश्न पूछा।)*

गयउ समीप शांतनु पुत्रा, जायत बैठ नावत निय सीसा ।
तात बखानउँ तुम वह धर्मा, साधक सुफल सुखी सम्पन्ना ।।(५)

भावार्थ: *तब वह पितामह भीष्म के समीप गए और नत मस्तक हो उनसे विनय भाव से प्रश्न पूछा, "हे पितामह ,आप मुझे ऐसे धर्म की शिक्षा दीजिये जिसकी साधना से जन्म सफल, सुखी और संपन्न हो जाए।"*

कौन देव सबहित लोकपाला, देतहिं ज्ञान करहिं उजाला ।
नाचत जग जस शासन पाहीं, सुमिरत पार होहिं सहजाहीं ।।(६)

भावार्थ: *हे तात, समस्त देवों में वह कौन से देव हैं जो सर्वहित करते हैं। ज्ञान रूपी प्रकाश से इस जग को जगमग करते हैं। जिनकी आज्ञा का सब अनुसरण करते हैं, एवं जिनके स्मरण मात्र से जन भवसागर को प्राप्त होते हैं।*

हर भय करें अंत दुष्कर्मा, भजत जाहि ना होइ दुइ जनमा ।
को धर्म सब धरमन में श्रेष्ठा, जनम मरण भय मुक्ती देता ।।(७)

भावार्थ: *हे पितामह, वह कौन देव हैं जो भय-हरता एवं दुष्कर्मों का अंत करने वाले हैं तथा जिनके जपने से पुनर्जन्म नहीं होता। वह कौन सा श्रेष्ठ धर्म है जो जन्म और मरण के भय से मुक्ति देता है।*

सुनहिं जस जनहेतू प्रश्ना, पितामह अति सुख हिय पवना ।
सुविज्ञ भीष्म बोले तब वचना, सुनहु पुत्र कथन हिय धरना ।।(८)

भावार्थ: *इस प्रकार के जन कल्याण हेतु धर्मराज के मुख से प्रश्न सुनकर पितामह भीष्म अत्यंत प्रसन्न हुए। तब महाविज्ञानी पितामह बोले "हे पुत्र मेरे कथन को हृदय में धारण कर सुनो।"*

एकहि सुर सामंत संसारा, सुमिरन सहस्त्रनाम जस तारा ।
भजें निरंतर जो प्रभु हिया, उनहिं नमन देवहिं सब किया ।।(९)

भावार्थ: *भीष्म पितामह बोले, "हे पुत्र, एक ही देव इस संसार के स्वामी हैं जिन्हें हर देवता नमन करते हैं, तथा जिनके सहस्त्र नाम का हृदय से जाप करने से जन साधारण भवसागर पार कर सकता है।"*

अनादि अनंत नारायण जपहूँ, जप अरचन स्तवन करहूँ ।
दुखातीत जन होएं सुखारी, नैन अश्रुधर प्रभुहिं पुकारी ।।(१०)

भावार्थ: *"ज्ञानी भी जिनके आदि और अंत को नहीं जानते, ऐसे प्रभु का जप, अर्चन एवं स्तवन जब प्रेम से नयनों में अश्रु भरकर किया जाता है, तो दुखी जन को भी अत्यंत प्रसन्नता प्राप्त होती है।"*

ब्रह्म ब्राह्मण श्रुति हितकारी, यश बढ़ावहिं जग नरनारी ।
भृकुटिसन नचावहिं जगता, मिटहिं अघ जब नर है भजता ।।(११)

भावार्थ: *वही ब्रह्म एवं श्रुति ज्ञानियों के अत्यंत हितकारी हैं। अपनी भृकुटी के इशारे मात्र से इस जग पर शासन करते हैं। उनके जपने से घोर पापों से मुक्ति मिलती है तथा नर नारियों को यश की प्राप्ति होती है।"*

धरम श्रेष्ठ यही जग जाना, भजहिं पुण्डरीक भगवाना ।
वासुदेव गुण बरनत करउँ, अरचन वंदन पूजन करउँ ।।(१२)

भावार्थ: *"भगवान् पुण्डरीक को भजना, उनके गुणों का वर्णन करना, उनकी अर्चन, वंदन एवं पूजा करना, बस यही एक सर्व श्रेष्ठ धर्म है।"*

प्रकाश देत जगहिं पुरारी, जपहिं तबहिं सो भक्त सुखारी ।
परम तेज परध्येय ब्रह्मा, परम परायण नाशित अह्मा ।।(१३)

भावार्थ: *"जिनका तेज स्वयं ब्रह्मा का ध्येय है, जो इस जग को प्रकाशित करते हैं, ऐसे भगवान् को भजने से भक्त अत्यंत सुख और परम गति को प्राप्त होते हैं और उनका अह्म नष्ट होता है।*

परम पवित्र एकहि बस नामा, सुमिरन जाय नष्ट हों पामा ।
ध्यान धरहिं मिटें सब पापा, वही देव सब भाँति निष्पापा ।।(१४)

भावार्थ: *बस एक ही नाम पवित्र है जो रोगों को हर लेता है एवं जिसके ध्यान धरने से समस्त पापों का नाश होता है।*

जन्म पिता जो सब ही प्रानी, नासें सभी प्रलय जब आनी ।
जाके तेज से जीवन ज्योती, अंत समय जो मुक्ति देती ।।(१५)

भावार्थ: *यही जग के जन्मदाता हैं। प्रलय के समय सब इन्हीं में लीन हो जाते हैं। इन्हीं का तेज जीविका प्रदान करता है और मृत्यु होने पर मोक्ष देता है ।*

सुनउँ नरेश तुम गुन अनंता, मोह हरन जो जग नियन्ता ।
हरहिं ऐहिक पाप सुन राम, सुमिरन विष्णु सहस्त्रनाम ।।(१६)

भावार्थ: *हे नरेश, इन के गुण अनंत हैं। ये मोह को हर लेते हैं। हे राम स्वरूपी सर्वश्रेष्ठ धर्मराज, इनके सहस्त्रनामों के स्मरण मात्र से सांसारिक पापों का विनास होता है।*

एहि नाम आचरन अनंता, भजत सतत मुनि और संता ।
सिद्ध मनोरथ गावत नामा, पद दुष्कर पावहिं जग जाना ।।(१७)

भावार्थ: *इनके अनन्य आचरणों को भक्त, मुनि एवं संत सदैव भजते रहते हैं। उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं और प्राणी दुष्कर पद (मोक्ष) को प्राप्त करता है।*

अथ सहस्त्रनामम्

विश्वम जग जीवन दीना, विष्णु नाम जग पालन कीना ।
वषट्कार प्रभु यज्ञ आहुती, एहिनाम यज अर्पण देती ।।(१८)

भावार्थ: विश्वम *जग प्रजनन देव है।* ***विष्णु*** *जग के पालनकर्ता हैं।* ***वषट्कार*** *यजमान द्वारा (अग्नि देव को) समर्पित करने वाली यज्ञ आहुति हैं।*

भूतभव्यभवत्प्रभुः नामा, जानहुँ तीन काल परनामा ।
भूतकृत रचित संसारा, भूतभृत जग पालनहारा ।।(१९)

भावार्थ: *भूत, वर्तमान एवं भविष्य ,तीनों कालों के ज्ञानी* ***भूतभव्यभवत्प्रभुः*** *हैं।* ***भूतकृत*** *इस संसार के रचयिता है, एवं* ***भूतभृत*** *इसका पालन करते हैं।*

अन्तर्यामी प्रभु भूतात्मा, दे जनम जीव सो भूतभावना ।
नाम प्रभु पावन पूतात्मा, परम सार सुर है परमात्मा ।।(२०)

भावार्थ: *जीवों के गूढ़ रहस्य जानने वाले अन्तर्यामी प्रभु* ***भूतात्मा*** *हैं।* ***भूतभावना*** *प्रकृति को जन्म देते हैं। पवित्र आत्मा प्रभु का नाम* ***पूतात्मा*** *है। इस ब्रह्माण्ड की परम श्रेष्ठ आत्मा* ***परमात्मा*** *हैं।*

परम गति दे मुक्तानामा, अजर अमर अव्यय हैं नामा ।
पुरुष नाम तू शयन शरीरा, साक्षी प्रभु देखत सब पीरा ।।(२१)

भावार्थ: *परम गति (मोक्ष) देने वाले प्रभु* ***मुक्तानामा*** *हैं। अजर अमर भगवान् को* ***अव्यय*** *नाम से सम्बोधित किया गया है। पुर (शरीर) में शयन करने वाले अथवा नौ द्वार वाले पवित्र शरीर को व्याप्त करके शयन करने वाले हरि* ***पुरुष*** *हैं। भगवान् सर्वदर्शी* ***साक्षी*** *हैं। वह सब की पीड़ा का अनुभव करते हैं।*

क्षेत्रज्ञ जाने शुद्ध अशुद्ध, क्षीणहीन अमर अक्षर सिद्ध ।
इन्द्रियजित प्रभु नाम है योगा, योगविदनेत हरैं सब रोगा ।।(२२)

भावार्थ: *शुद्ध अशुद्ध के ज्ञाता* ***क्षेत्रज्ञ*** *हैं। अजर अमर अविनासी प्रभु* ***अक्षर*** *हैं। इन्द्रिय नियंत्रित प्रभु* ***योगा*** *हैं।* ***योगविदनेत*** *रूप से वह हर प्रकार के रोगों का नाश करते हैं।*

हैं प्रधानपुरषेश्वर जगत ईश्वर, नारसिंहवपु हैं नरसिंहेश्वर ।
श्रीमान हिय लक्ष्मीवासा, केशव केश सुभग अतिभावा ।।(२३)

भावार्थ: *संसार के ईश्वर* ***प्रधानपुरषेश्वर*** *हैं जिन्हें नरसिंह अवतार स्वरुप में* ***नारसिंहवपु*** *से सम्बोधित किया गया है। श्री (लक्ष्मी जी) के हृदय में वास होने से प्रभु को* ***श्रीमान*** *कहा गया है। अति सुन्दर केश वाले भगवान्* ***केशव*** *हैं।*

मारो केशी अभद्र दुष्टव, जग यशस्वी तब प्रभु केशव ।
पुरुषोत्तम क्षर अक्षर ज्ञाता, पुरुष श्रेष्ठ सब ग्रंथन गाता ।।(२४)

भावार्थ: *अभद्र राक्षश केश का वध करने के कारण भी उन्हें* ***केशव*** *नाम से संसार में प्रसिद्धि मिली। प्रभु को क्षर (विनास) एवं अक्षर दोनों का ज्ञान होने के कारण सब ग्रंथों ने उन्हें श्रेष्ठ पुरुष अथवा* ***पुरुषोत्तम*** *नाम से पुकारा है।*

सर्व नाम तुम हो सर्वज्ञाता, शर्व तुम्हीं मृत्यु के दाता ।
शिव त्रि-अवगुण रहिता, नाम स्थाणु सदैव स्थिरता ।।(२५)

भावार्थ: *सर्वज्ञानी होने से उन्हें* ***सर्व*** *कहा जाता है। प्रभु मृत्यु के स्वामी तथा दाता हैं अतः* ***शर्व*** *हैं। तीनों अवगुणों (सत, रजस एवं तमस) के प्रभाव से रहित होने के कारण उन्हें* ***शिव*** *कहा गया। भगवान् सदैव समाधी में स्थिर रहते हैं इस कारण* ***स्थाणु*** *हैं।*

भूतादि हेतु जन्म अघनाशी, निधि श्री अव्यय अविनासी ।
संभव प्रगट हो स्वैच्छा, भावन भरें भक्तन की इच्छा ।।(२६)

भावार्थ: *जीवों के जन्म का कारण प्रभु* ***भूतादि*** *हैं जो पापों का नाश करते हैं।* ***निधि*** *सम्पदा के स्वामी एवं* ***अव्यय*** *अविनासी हैं। अपनी स्वैच्छा से अवतरित होने से* ***संभव*** *हैं। भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले* ***भावन*** *हैं।*

तुम्ही हो प्रानन के भर्ता, प्रभव प्रगट होत महाभूता ।
प्रभूरीश्वर देवन के ईशा, सर्वेश्वर प्रभु हो जगदीशा ।।(२७)

भावार्थ: *समस्त प्राणियों का* ***भर्ता*** *भरण पोषण करते हैं। सभी जीवों की उत्पति उन्हीं से होती है, अतः* ***प्रभव*** *हैं। देवताओं के स्वामी* ***प्रभूरीश्वर*** *सब से श्रेष्ठ एवं जगत के ईश हैं।*

स्वयंभू तुम स्वावलम्बक, शम्भू प्रभु सब सुखदायक ।
अदिति हो धरा के स्वामी, पुष्कराक्ष पद्म नैन समानी ।।(२८)

भावार्थ: *अपने ईश्वर प्रभु स्वयं हैं (अर्थात उनका स्वामी कोई नहीं है) इसलिए* ***स्वयंभू*** *हैं।* ***शम्भू*** *भक्तों के लिए सुख की भावना उत्पन्न करते हैं। पृथ्वी के स्वामी* ***अदिति*** *हैं। भगवान् के नैन अति सुन्दर कमल के सामान हैं, अतः* ***पुष्कराक्ष*** *हैं।*

महास्वन स्वर उत्पन्ना, अनादिनिधन न अंत न जन्मा ।
अनन्तरूप भूतल के धाता, पंच करम फल देत विधाता ।।(२९)

भावार्थ: *प्रभु में महान स्वर उत्पन्न करने की क्षमता है, इसलिए* ***महास्वन*** *हैं (श्रुति में ऐसा वर्णित हैं कि प्रभु अपने दिव्य स्वर से वेदों का गायन करते हैं)। प्रभु का जन्म और अंत कोई नहीं जान सका इसलिए* ***अनादिनिधन*** *हैं। अनंत (शेष नाग) रूप से पृथ्वी को धारण करने वाले* ***धाता*** *हैं। पांचो प्रकार के कर्म, उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन, का फल देने वाले* ***विधाता*** *हैं।*

धातुरुत्तम चेतन धरता, प्रपंच छल माया के हरता ।
शास्त्र प्रमाणित अप्रमेय, दमन इन्द्रिय ऋषिकेश अमेय ।।(३०)

भावार्थ: *सम्पूर्ण चेतना (धातु) भगवान् से ही उत्पन्न होती है इसलिए* ***धातुरुत्तम*** *हैं। श्रुति में कथित है कि इस रूप में भगवान् प्रपंच, छल और माया आदि दुर्गुणों का नाश करते*

*हैं। शास्त्रों में प्रमाणित सर्वेश्वर **अप्रमेय** हैं। हृषीक (इन्द्रियां) जिनके अधीन हैं ऐसे असीम प्रभु **ऋषिकेश** हैं।*

नाभी स्थित नीरज आभा, जग चैतन्य हैं प्रभु पद्मनाभा ।
नायक तू ही सर्व देवता, अमरप्रभु हम तेरे सेविका ।।(३१)

भावार्थ: *जिनकी नाभि में कमल रूपी आभा विद्यमान है और जगत के लिए चैतन्य स्वरुप हैं, वह **पद्मनाभा** हैं। अमरत्व प्राप्त हुए देवताओं के नायक और सब के स्वामी **अमरप्रभु** हैं।*

करमभूमि हरि की यह सृष्टी, सेवित हैं विश्वकर्म संसृती ।
मनु मनन मार्ग दर्शिता, त्वष्टा नष्टे अशक्त अस्मिता ।।(३२)

भावार्थ: *विश्व (श्रष्टि) ही जिनकी कर्मभूमि है और जो सब जीवों से सेवित हैं, वह प्रभु **विश्वकर्म** हैं। भगवान् सदैव मनन (समाधि) में रहते हैं एवं मार्ग दर्शिता हैं, इसलिए शास्त्र उन्हें **मनु** कहकर पुकारते हैं। प्रलय के समय प्रभु जीवों को क्षीण कर देते हैं जिस से विलय में सरलता हो, इसलिए **त्वष्टा** नाम से जाने जाते हैं।*

स्थविष्ठ अतिसय स्थाई, स्थविर ध्रुव समान अचलाई ।
करम इन्द्रियाँ हीन प्रभावा, अग्राह्य नाम ईश तस पावा ।।(३३)

भावार्थ: *अत्यंत स्थिर प्रकृति होने से **स्थविष्ठ** हैं। पुरातन **स्थविर** ध्रुव के समान स्थिर हैं। प्रभु कर्मेन्दियों के प्रभाव से रहित हैं, इसलिए **अग्राह्य** हैं।*

समागत सर्व काल में होऊ, शाश्वत तुम अभियाचित होऊ ।
तुम्हरी सत्ता मंगलदाता, सचिदानंद कृष्ण कहलाता ।।(३४)

भावार्थ: *भगवान् हर युग में उपस्थित रहते हैं इसलिए **शाश्वत** नाम से जाने जाते हैं। प्रभु का आश्रय मंगल और आनंददायक है, अतः वह **कृष्ण** हैं।*

शुभ लाल हरि के नैना, लोहिताक्ष भज हिय प्रसन्ना ।
प्रलयकाल मोक्ष के दाता, प्रतर्दन प्रभु तुम कहलाता ।।(३५)

भावार्थ: *भगवान् के नेत्र शुभ लोहित (लाल) रंग के होने से वह* ***लोहिताक्ष*** *हैं। उनके भजने से हृदय को प्रसन्नता प्राप्त होती है। प्रलय काल में प्रभु जीवों को मोक्ष दान देते हैं, इसलिए* ***प्रतर्दन*** *हैं।*

सर्वगुण हो तुम सम्पन्ना, प्रभूत नाम विश्व प्रतिष्ठना ।
ऊंची नीची मध्य दिशाएँ, स्वामी त्रिककुबधाम कहाएं ।।(३६)

भावार्थ: *सर्वगुण (ज्ञान, ऐश्वर्य आदि) संपन्न होने से वह* ***प्रभूत*** *नाम से विश्व में विख्यात हैं। ऊपर, निचली एवं मध्य भेद वाली तीनों दिशाओं के आश्रयदाता होने से प्रभु* ***त्रिककुबधाम*** *हैं।*

भजत नाम पवित्र तन होई, पवित्रम प्रभु नाम तब होई ।
जपत परम मंगल जीवा, नाशें ईशान तम जस दीवा ।।(३७)

भावार्थ: *जिनके स्मरण मात्र से तन को पवित्रता मिलती है वह ईश्वर* ***पवित्रम*** *हैं। जिनके भजने एवं जपने से आनंदता एवं श्रेष्ठता की प्राप्ति होती है वह प्रभु* ***मंगल*** *और* ***परम*** *हैं। अंधकार को दूर कर दीप समान जो प्रकाश देते हैं, वह* ***ईशान*** *हैं।*

प्राणद प्रभु जीव पोषिता, प्राण ईश जग जीवन दाता ।
ज्येष्ठ न कोई वय जानता, श्रेष्ठ न कोई सम समानता ।।(३८)

भावार्थ: *सभी जीवों को आहार प्रदान कर जो प्राणदान देते हैं, वह* ***प्राणद*** *हैं। जो प्रभु जीवनदान देते हैं, वह* ***प्राण*** *हैं (यहां अप्रत्यक्ष रूप से वायु प्रदान करने का उल्लेख किया गया है जो स्वास द्वारा हमें जीवनदान देती है)। प्रभु अत्यंत पुरातन हैं, कोई उनकी आयु नहीं जानता, अतः* ***ज्येष्ठ*** *हैं। उनकी श्रेष्ठता की कोई समानता नहीं है, अतः* ***श्रेष्ठ*** *हैं।*

प्रजापति भूपती त्रिलोका, हिरण्यगर्भ स्वामी सब लोका ।
मही विराजत हरि के गरभा, भूगर्भ तुझे विश्व समझता ।।(३९)

भावार्थ: *प्रभु भूलोक सहित तीनों लोकों के स्वामी हैं अतः* ***प्रजापति*** *हैं। समस्त लोक रूपी हिरण्यमय कोष के स्वामी* ***हिरण्यगर्भ*** *हैं। पृथ्वी उनके गर्भ में वासित हैं, इस कारण विश्व उन्हें* ***भूगर्भ*** *नाम से पुकारता है।*

श्रीपति हे माधव भगवन, मारो मधु दैत्य मधुसूदन ।
ईश्वर तू ही सर्वशक्तिमान, है विक्रमी ना सूर समान ।।(४०)

भावार्थ: *माँ श्री (लक्ष्मी) के स्वामी होने से प्रभु* ***माधव*** *हैं। मधु नाम दैत्य का संहार करने के कारण* ***मधुसूदन*** *नाम से विख्यात हुए। सर्वशक्तिमान* ***ईश्वर*** *हैं। प्रभु के समान कोई और शूरवीर नहीं, अतः* ***विक्रमी*** *हैं।*

हैं धरेश धन्वी धनुर्धारन, हैं मेधावी पुन्य ग्रन्थ चेतन ।
बाली बचनबद्ध जग नापो, विक्रम तब जग अभियाचो ।।(४१)

भावार्थ: *भूपति धनुषधारण कर्ता श्री राम रूप में अवतारित प्रभु* ***धन्वी*** *हैं। भगवान् पुण्य ग्रथों को धारण करते हैं अतः* ***मेधावी*** *हैं। बामन अवतार में बाली को वचनबद्ध कर तीनों लोकों को अपने पग से नापने पर विश्व में वह* ***विक्रम*** *कहलाये।*

जग नापन कदम विस्तारा, बामन देह क्रम अवतारा ।
अनुत्तम तुम सम न श्रेष्ठा, दुराधर्ष डरपहिं सब दुष्टा ।।(४२)

भावार्थ: *जब त्रिलोक नापने के लिए भगवान् ने बामन रूप का विस्तार किया तो वह* ***क्रम*** *कहलाये। प्रभु से श्रेष्ठ कोई नहीं है अतः* ***अनुत्तम*** *हैं। प्रभु का* ***दुराधर्ष*** *रूप सभी दैत्यों को भय प्रदान करता है।*

अल्प समर्पन जबहिं कीन्हा, कृत्यज्ञ तुरंत सुगति दीना ।
कृति जनक्रिया आधारा, आत्मवान हरि श्रुत संसारा ।।(४३)

भावार्थ: *अल्प समर्पण से ही प्रसन्न होकर* ***कृत्यज्ञ*** *प्रभु तुरंत भक्तों को सद्गति प्रदान कर देते हैं। जीवों की कर्मक्रिया का आधार* ***कृति*** *हैं। आत्मा में लीन प्रभु* ***आत्मवान*** *नाम से संसार में जाने जाते हैं।*

सुर स्वामी है नाम सुरेश, दुःख हरण शरण रमेश ।
शर्म हर्ष अभिरामम देता, हेतु वर्ग जनन विश्वरेता ।।(४४)

भावार्थ: *सभी देवताओं के स्वामी* ***सुरेश*** *हैं। सभी जीवों का दुःख दर्द हरण करने वाले प्रभु* ***शरण*** *हैं। हर्ष एवं परमानंद दाता प्रभु* ***शर्म*** *हैं। विश्व की उत्पत्ति का हेतु भगवान्* ***विश्वरेता*** *हैं।*

प्रजाभाव जग जननकर्ता, प्रकाशमय अहः जगमगकर्ता ।
संवत्सर प्रभु छोर न जाना, जटिल व्याल है सर्प समाना ।।(४५)

भावार्थ: *भगवान् समस्त प्रजा की उत्पति के हेतु है, अतः* ***प्रजाभाव*** *हैं। प्रकाशरूप होने से जगत को* ***अहः*** *प्रकाशित करते हैं। प्रभु के आदि और अनंत का किसी को ज्ञान नहीं, अतः वह* ***संवत्सर*** *हैं। सर्प के समान ग्रहण करने में न आ सकने के कारण* ***व्याल*** *हैं।*

प्रत्यय भगवन प्रज्ञा रूपी, सर्वदर्शन करहिं सब प्रीती ।
जन्म न अंत किंचित काला, तब ही प्रभु अज कहलाता ।।(४६)

भावार्थ: *भगवान् श्रेष्ठ एवं बुद्धिमान हैं, अतः* ***प्रत्यय*** *हैं। सर्वरूपी एवं सर्वदर्शी होने से* ***सर्वदर्शन*** *हैं। प्रभु सदा स्थित हैं। न उनका कभी जन्म हुआ, न ही अंत, इसलिए* ***अज*** *हैं।*

हो सर्व देव देवा सर्वेश्वर, नित्य सिद्धि हो तुम परमेश्वर ।
आदिकारण सब प्रानन का, सर्वादि सुर हरि भूतल का ।।(४७)

भावार्थ: *समस्त देवों के स्वामी होने से प्रभु* ***सर्वेश्वर*** *हैं। समस्त रिद्धि सिद्धि भगवान् को प्राप्त हैं, अतः* ***सिद्धि*** *हैं। इस पृथ्वी के स्वामी होने के कारण वही सभी जीवों के जन्म के हेतु हैं, अतः* ***सर्वादि*** *हैं।*

स्वरूपशक्ति से स्थिरता, अच्युत अभिधान मंगलता ।
वर्ष करें पूर्ण कामना, अवतरे कपि भू धरम पालना ।।(४८)

भावार्थ: *मंगल देने वाले प्रभु अपनी स्वरुप-शक्ति से न कभी च्युत हुए, न होते हैं और न होंगे, अतः* ***अच्युत*** *हैं। भक्तों की इक्षा पूर्ण करने वाले प्रभु धर्मरूपी* ***वर्ष*** *हैं। भगवान् ने धर्म पालन के लिए वराह रूप धारण किया, इसलिए* ***कपि*** *नाम से जाने जाते हैं।*

असंभव हरि अस्त्वित मापना, जस प्रभु हैं अमेयात्मा ।
हैं ममता बंधन रहित कृत, नाम हरि सर्वयोगविनसृत ।।(४९)

भावार्थ: *प्रभु के आत्मा स्वरुप का माप परिच्छेद करना असंभव है, अतः वह* ***अमेयात्मा*** *हैं। प्रभु ममता रहित हैं, इसलिए उन्हें* ***सर्वयोगविनसृत*** *कहा जाता है।*

बसत हिय जगत आत्मा, वसु नर सुर असुर सर्वात्मा ।
मन प्रशस्त पुष्प समाना, प्रभु उत्कृष्ट वसुमना जाना ।।(५०)

भावार्थ: *भगवान् में सब जीव बसते हैं। वही सब नर, असुर, सुर आदि की जीवात्मा हैं, अतः वह* ***वसु*** *हैं। प्रभु सदैव पुष्प समान प्रसन्नचित्त एवं उत्कृष्ट रहते हैं, इसीलिये उन्हें* ***वसुमना*** *के नाम से जाना जाता है।*

स प्राण त अन्न व् य सूर्या, सत्य मूर्ति करें शुभ कार्या ।
हैं रहित राग दुर्गण सम ईशा, समात्मा सार जगदीशा ।।(५१)

भावार्थ: *श्रुति के अनुसार* ***स*** *प्राण है,* ***त*** *अन्न है और* ***य*** *सूर्य है, अतः प्राण, अन्न और सूर्य रूप होने के कारण प्रभु सत्यमूर्ति एवं* ***सत्य*** *हैं। जिनकी आत्मा राग द्वेष और दुर्गुणों से रहित है, वह* ***सम*** *हैं। समस्त प्राणियों में सम (अर्थात एक) आत्मा है, इसलिए भगवान्* ***समात्मा*** *हैं।*

स्थित समान सब जीव सम्मित, अमोघ करें निर्भय सुमिरत ।
बसें हिय कमल सम मध्या, पुण्डरीकाक्ष प्रभु तुम हो पूज्या ।।(५२)

भावार्थ: *भगवान् हर जीव में समान रूप से स्थित हैं, अतः* ***सम्मित*** *हैं। स्मरण मात्र से ही* ***अमोघ*** *प्रभु निर्भय कर देते हैं। ह्रदय कमल के मध्य में स्थित होने के कारण पूज्यनीय प्रभु* ***पुण्डरीकाक्ष*** *हैं।*

धर्मरूप हैं प्रभु वृषकर्मा, करें हरि वृषाकृति सतकर्मा ।
प्रलयेश हैं रुद्र महावीरा, अगनित शीश अतः बहुशिरा ।।(५३)

भावार्थ: *जिनके कर्म धर्मरूप हैं, वह* ***वृषकर्मा*** *हैं। जो धर्म और सत्य कर्म के लिए ही अवतरित होते हैं, वह* ***वृषाकृति*** *हैं। प्रलय काल में महावीर रूप धारण कर जो संहार करते हैं, वह* ***रूद्र*** *हैं। अनगनित शीश होने के कारण प्रभु* ***बहुशिरा*** *हैं।*

बभ्रु तुम्हीं हो अन्नपूरना, हैं विश्वयोनि प्रभु विश्वपूरना ।
श्रवन शुचिश्रवा हों पवित्र, हैं हरि अजर अमिट अमृत ।।(५४)

भावार्थ: *समस्त प्राणियों का भरण करते है, अन्नपूर्णा हैं, इसलिए* ***बभ्रु*** *हैं। विश्व के पूरक हैं, भगवान् रहित विश्व का कोई अस्तित्व नहीं, इसलिए* ***विश्वयोनि*** *हैं। भगवान् के नाम का श्रवण अत्यंत पावन है, अतः वह* ***शुचिश्रवा*** *हैं। भगवान् अजर, अमर हैं इसलिए उन्हें* ***अमृत*** *नाम से पुकारा जाता है।*

शाश्वत हैं सत नित्यानंद, स्थाणु दृढ़ सम हैं हिमनंद ।
प्रभु तुम मोक्ष के दाता, हैं वरारोह जग विख्याता ।।(५५)

भावार्थ: *प्रभु सत्य एवं अनश्वर है, अतः* ***शाश्वत*** *हैं। हिमालय की तरह भगवान् दृढ बुद्धि हैं, इसलिए* ***स्थाणु*** *हैं। प्रभु में आरूढ़ हुए जीवों को इस संसार में वापस नहीं आना पड़ता,अर्थात मोक्ष प्राप्ति होती है, इसलिए भगवान्* ***वरारोह*** *के नाम से विख्यात हैं।*

विश्व विषयक चिंतन ज्ञाता, महातपा पुकारहिं लिखिता ।
जग व्यापक सर्वग अनिरुद्ध, सर्व ज्ञानी हैं हरि सर्वविद्ध ।।(५६)

भावार्थ: *भगवान् का सृष्टि-विषयक तप ज्ञान अत्यंत महान है, इसलिए वह* ***महातपा*** *हैं। सर्व व्यापी होने के कारण उन्हें* ***सर्वग*** *पुकारा गया। सर्व ज्ञानी हैं अतः* ***सर्वविद्ध*** *हैं।*

विष्वक्सेन रणभूमि देखता, भागहिं रिपु हों भयभीता ।
रक्षक संत परन्तु रिपु दुष्टा, जनार्दन याचें तब शिष्टा ।।(५७)

भावार्थ: *भगवान् के* ***विष्वक्सेन*** *रूप को रण में देखते ही शत्रु भयभीत होकर रणस्थली छोड़ भाग जाते हैं। संतों की रक्षा करने वाले तथा दुष्टो का संहार करने वाले* ***जनार्दन*** *प्रभु की सभी शिष्ट जन वंदना करते हैं।*

वेदरूप अतः हरि वेद, हैं ज्ञाता वेदविद चतुर्वेद ।
पूर्ण ज्ञानेश हैं अव्यंगा, वेद वेदांग हरि के अंगा ।।(५८)

भावार्थ: *भगवान् स्वयं ही* ***वेद*** *हैं। चारों वेद जिनमें समाहित हैं (वेद तथा वेदों के अर्थ भलीभांति समझते एवं अनुभव करते हैं), इसलिए* ***वेदविद*** *हैं। ज्ञानादि से परिपूर्ण प्रभु* ***अव्यंगा*** *हैं। वेद ही जिन के अंग रूप हैं, ऐसे भगवान् को श्रुति ने* ***वेदांग*** *कहकर पुकारा है।*

करें वेदवित चिंतन वेद, कवि जानें सभी के भेद ।
हैं लोकाध्यक्ष ईश संसार, सुराध्यक्ष सुर आधार ।।(५९)

भावार्थ: *वेदों का चिंतन एवं विचरण करते हैं, अतः* ***वेदवित*** *हैं। प्रभु* ***कवि*** *रूप में सभी के भेद अर्थात गूढ़ रहस्य जानते हैं। समस्त लोक उनके अधीन हैं एवं उनका निरंतर धर्म दृष्टिकोण से निरीक्षण करते रहतें हैं, अतः* ***लोकाध्यक्ष*** *हैं। लोकपाल आदि समस्त देवताओं के वह स्वामी हैं, इसलिए* ***सुराध्यक्ष*** *हैं।*

धर्माध्यक्ष धरम के देवा, कृताकृत रत करम सदैवा ।
होत प्रगट भू चतुरात्मा, प्रजा काल जीव और ब्रह्मा ।।(६०)

भावार्थ: *धर्म नियम के नियंता हैं, अतः* ***धर्माध्यक्ष*** *हैं। कार्यरूप से सदैव बिना फल की इक्षा किये कार्यरत रहते हैं, इसलिए* ***कृताकृत*** *हैं। सृष्टि की उत्पति के लिए चार विभूतियों (आत्मा) - ब्रह्मा, दक्ष (प्रजा), काल एवं जीव, में प्रगट होते हैं, अतः* ***चतुरात्मा*** *हैं।*

करें चार व्यूहों की रचना, हरि चतुर्व्यूह लब्धप्रतिष्ठना ।
हैं चतुर्दंत नरसिंह अवतारा, चतुर्दंष्ट्र प्रभु नाम तुम्हारा ।।(६१)

भावार्थ: *पावन प्रभु चार व्यूह (वासुदेव आदि मूर्तियों) बनाकर सृष्टि की रचना करते हुए जग में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, अतः* ***चतुर्व्यूह*** *के नाम से जाने जाते हैं। नरसिंह अवतार में प्रभु चार दाढ़ों के साथ प्रगट हुए, अतः* ***चतुर्दंष्ट्र*** *हैं।*

चार भुजाओं से तुम युक्ता, चतुर्भुज प्रभु तुम नियंता ।
धर्म सत्य प्रकाश स्वरूपा, भ्राजिष्णु प्रकाश पुंजता ।।(६२)

भावार्थ: *प्रभु की चार भुजाएं हैं अतः वह* ***चतुर्भुज*** *हैं। भगवान् धर्म, सत्य और प्रकाश के स्वरुप हैं तथा उनकी उपस्थिति प्रकाश का भण्डार है, इस कारण वह* ***भ्राजिष्णु*** *हैं।*

भोजन भोगें भोजित माया, भोक्ता भोगें भेंट सम सस्या ।
करें वहन भक्तन के दोषा, सहिष्णु हरें संतन के रोषा ।।(६३)

भावार्थ: *भोज्यरूप होने से माया रूपी भोज का अर्पण स्वीकार करते हैं, इसलिए* ***भोजन*** *हैं। अर्पित माया को अनाज की तरह भोगते हैं, अतः* ***भोक्ता*** *हैं। भक्तों को पापों से मुक्त कर संतों को क्रोधजित बनाते हैं , अतः प्रभु* ***सहिष्णु*** *हैं।*

अवतरे पूर्व तुम जगता, जगदादिज हो तुम्हीं अनंता ।
निष्पाप पावन हरि जाना, अनघ सकल सुवेद बखाना ।।(६४)

भावार्थ: *सृष्टि उत्पति से पहले ही प्रभु अवतरित हुए और जिनका कोई अंत नहीं जान सका, ऐसे प्रभु को* ***जगदादिज*** *नाम से पुकारा गया। भगवान् पापहीन एवं पवित्र हैं ऐसा वेद उन्हें वर्णित करते हुए उन्हें* ***अनघ*** *नाम से पुकारते हैं।*

जीते भूतल अपने सगुना, विजय विभूति तुम्हरे चरना ।
मन हो मोहित पा उत्कर्षा, जेता सुमर जन हिय हर्षा ।।(६५)

भावार्थ: *अपने सद्गुणों के कारण प्रभु पृथ्वी को जीत ख्याति प्राप्त करते हैं (अर्थात दुष्टों से विहीन करते हैं), इस हेतु उन्हें* ***विजय*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। प्रभु के* ***जेता*** *नाम स्मरण से जीवों का ह्रदय प्रसन्नता से भर जाता है तथा वह उन्नति को प्राप्त करता है।*

तुम्हीं हो विश्व तुम्हीं हो योनी, विश्वयोनि हो अघ उन्मूलिनी ।
अवतरे भूतल कई बारा, तब पुनर्वसु प्रभु तुम कहलावा ।।(६६)

भावार्थ: *प्रभु स्वयं विश्व (जीव) एवं योनि (आत्मा) हैं जो जीवों के पापों को उन्मूलन करते हैं, अतः* ***विश्वयोनि*** *हैं। हरि ने कई बार पृथ्वी पर (धर्म रक्षा हेतु) अवतार लिया, इसलिए* ***पुनर्वसु*** *हैं।*

सुरेश पति उपेंद्र कहावें, बामन बालि यज्ञ में आवें ।
विस्तार पग लांघें त्रिलोक, प्रांशु रूप नापे सब लोक ।।(६७)

भावार्थ: *इंद्र के स्वामी होने से प्रभु* ***उपेंद्र*** *हैं। बाली के यज्ञ में प्रभु* ***बामन*** *रूप में अवतरित हुए। अपना शरीर विस्तार कर प्रभु ने तीनों लोकों को नाप लिया इस कारण उन्हें* ***प्रांशु*** *नाम से पुकारा जाता है।*

व्यर्थ कभी ना प्रभु प्रयास, सुमर अमोघ हों पूरन आस ।
जो सुमिरें अविरत हरि नाम, मरण शुचि भेजें स्वधाम ।।(६८)

भावार्थ: *प्रभु की चेष्टा कभी व्यर्थ नहीं जाती और उनके स्मरण मात्र से भक्तों की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं, इसलिए उन्हें* ***अमोघ*** *नाम से उच्चारित किया जाता है। जो जन* ***शुचि*** *पवित्र नाम का स्मरण करते हैं, उन्हें मरण पश्चात प्रभु अपने धाम में भेज देते हैं।*

ना कोई प्रबल प्रभु समान, ऊर्जित हरें पापिन के प्रान ।
सुर ना कोई हरि समान, अतीन्द्र हरि हैं जग प्रतिष्ठान ।।(६९)

भावार्थ: *पापहारी प्रभु के समान कोई बलशाली नहीं है, अतः वह* ***उर्जित*** *हैं। समस्त देवताओं से श्रेष्ठ होने के कारण वह* ***अतीन्द्र*** *नाम से विख्यात हैं।*

संग्रह संग्रह करें जगात्मा, प्रलय काल जब पहुँच आत्मा ।
रचहिं शरीर सर्ग जन जन्मा, जन्म रहित प्रभु हैं धृतात्मा ।।(७०)

भावार्थ: *प्रलय काल में प्रभु सब जीवात्माओं को एकत्रित करते हैं, अतः* ***संग्रह*** *हैं। सृष्टि की उत्पत्ति में प्रभु जीवों के शरीर की रचना करते हैं, इस कारण* ***सर्ग*** *कहलाये जाते हैं। भगवान् जन्मादि से रहित रहकर अपने स्वरुप का एक रूप धारण किये रहते हैं अतः* ***धृतात्मा*** *हैं।*

हैं नियम निर्णायक देवा, शाश्वत प्रभु यम आयुषदेवा ।
हों प्रगट जन हिय सहजहिं, वेद्य नाम ग्रंथन सब कहहिं ।।(७१)

भावार्थ: *भगवान् धर्म नियंत्रणकर्ता हैं, अतः* ***नियम*** *हैं। अविनासी प्रभु* ***यम*** *रूप में आयु प्रदानकर्ता हैं। भक्तों के हृदय में सहज ही प्रगट हो जाते हैं, इसलिए शास्त्र* ***वेद्य*** *के नाम से उन्हें सम्बोद्धित करते हैं।*

सभी शास्त्र तुम्हरे ही लेखा, वैद्य नियंत्रक जीवन रेखा ।
सदायोगी हरि सर्वव्यापी, वधें वीरहा असुर और पापी ।।(७२)

भावार्थ: *सर्व शास्त्रों के रचियता जीवनदाता भगवान्* ***वैद्य*** *नाम से जाने जाते हैं। सर्व-व्यापी प्रभु* ***सदायोगी*** *हैं। दुष्कर्म समर्थक राक्षसों का संहार करते हैं, अतः* ***वीरहा*** *हैं।*

करें माधव विद्या वाचन, मृदु मत मधु ह्रदय भावन ।
हैं अतीन्द्र रहित विषयक, महामाय हैं माया नायक ।।(७३)

भावार्थ: *विद्या (मा) के स्वामी एवं शिक्षक होने से उन्हें* ***माधव*** *नाम से बुलाया जाता है। शहद की भांति मधुर ह्रदय को भाने वाले भगवान्* ***मधु*** *हैं। विषयरहित हरि* ***अतीन्द्र*** *हैं। मायावियों के भी आप नायक हैं, इसलिए* ***महामाय*** *है।*

तत्पर हरि जग पालन हेतू, महोत्साह भव नैया चप्पू ।
भीम भीम भूवास पुकारा, महाबलः ना बली अनुसारा ।।(७४)

भावार्थ: *संसार सागर तारण की नैया के किलवारी प्रभु जगत पोषण के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, अतः* ***महोत्साह*** *हैं। जगत में आपके समान कोई बलशाली नहीं, अतः* ***भीम*** *प्रभु आपको ग्रन्थ* ***महाबलः*** *के नाम से सम्बोद्धित करते हैं।*

मेधावी अतुलित सतनामा, महाबुद्धि नामक भगवाना ।
तुम्हरे शुक्र ही जन्में माया, महावीर्य तब ग्रंथन गाया ।।(७५)

भावार्थ: *अत्यंत बुद्धिमान प्रभु* ***महाबुद्धि*** *हैं। आपके वीर्य से ही माया की उत्पत्ति हुई है, अतः आप* ***महावीर्य*** *हैं।*

परम बली प्रभु हो परमेश्वर, महाशक्ति तुम हो संतेश्वर ।
ज्योति जलत हरि अंतर्भागा, सुमरत महाद्विती दुःख भागा ।।(७६)

भावार्थ: *हे संतेश्वर आपका बल अपरिमित है, अतः आप* ***महाशक्ति*** *हैं। जिनके अन्तः मन में सदैव ज्योति (ज्ञान ज्योति) जलती रहती है, तथा जिनके स्मरण मात्र से जीव दुःख रहित हो जाते हैं, ऐसे प्रभु* ***महाद्विती*** *हैं।*

स्वाधीन विधि पालनकर्ता, अनिर्देश्यवपु जनहितकर्ता ।
श्रीमान प्रभु श्री आत्मा, जानें न थाह जग हैं अमेयात्मा ।।(७७)

भावार्थ: *जो स्वाधीन हैं (जिनका कोई स्वामी नहीं है) तथा प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं, ऐसे जनहित कर्ता प्रभु को* ***अनिर्देश्यवपु*** *कहा गया है। प्रभु माँ श्री (लक्ष्मी) के पति है, अतः* ***श्रीमान*** *हैं। भगवान् अनंत है, उनकी थाह कोई नहीं जान सकता, इसलिए* ***अमेयात्मा*** *हैं।*

धारो अंगुल गोवर्धन पर्वत, महाद्रिधृक प्रभु जग पूजत ।
हैं पुरुषोत्तम परम धनुर्धरा, महेष्वास अवतरे वंसुधरा ।।(७८)

भावार्थ: *सर्व पूजित एवं गोवर्धन पर्वत को उंगली पर धरने वाले प्रभु* ***महाद्रिधृक*** *हैं। परम श्रेष्ठ धनुर्धरी श्रीराम* ***महेष्वास*** *स्वरुप में पृथ्वी पर अवतरित हुए।*

प्रलय काल जल डूबे धरा, महीभर्ता धारें शीश धरा ।
हिय निवास धन माता, श्रीनिवास प्रभु सुख दाता ।।(७९)

भावार्थ: *जब प्रलय काल में प्रभु ने जलमग्न पृथ्वी को धारण कर उसका उद्धार किया तो उन्हें* ***महीभर्ता*** *नाम से बुलाया गया। सुख देने वाले भगवान् के ह्रदय में माँ लक्ष्मी (श्री) का निवास है, अतः वह* ***श्रीनिवास*** *हैं।*

दें साधु संत सुगति सुमती, आनंददायक हरि सतामगती ।
निष्पक्ष नियंत हो तुम सर्वदा, अनिरुद्ध हरि दें प्रेम सदा ।।(८०)

भावार्थ: *आनंददायक* ***सतामगती*** *प्रभु साधु संतों को सुमति एवं सुगति प्रदान करते हैं। सदैव निष्पक्ष प्रेमदायी प्रभु* ***अनिरुद्ध*** *हैं।*

हों प्रसन्न सुर सुमर सुरानंद, हैं गोविद्पति गौरक्ष गोविंद ।
अति तेजस्वी हरि मारीचि, बधें दुष्ट दमन अस्थि दधीचि ।।(८१)

भावार्थ: *देवता भी जिनके स्मरण से आनंदित होते है, वह प्रभु* ***सुरानन्द*** *हैं। वाणी के ज्ञानी* ***गोविदपति*** *एवं गौ माँ के रक्षक प्रभु* ***गोविन्द*** *हैं। तेजस्वियों में भी तेजस्वी प्रभु* ***मारीचि*** *हैं। दुष्टों का नाश उसी प्रकार करते हैं जैसे महर्षि दधीचि जी की अस्थियों ने किया, अतः* ***दमन*** *हैं।*

दूर होएं भय सुमर प्रभु हंसा, हैं वाहन गरुड़ सुपर्ण ईशा ।
हस्त बलवान भुजगोत्तम, हिरण्डयनाभ की नाभी मृगसम ।।(८२)

भावार्थ: *जिनके स्मरण मात्र से ही भय का नाश होता है, वह प्रभु* ***हंसा*** *हैं। जिनके वाहन गरुड़ पक्षी हैं वह* ***सुपर्ण*** *हैं। जिनकी भुजाओं में अतुलित बल है, वह प्रभु* ***भुजगोत्तम*** *हैं। जिनकी नाभि अति सुन्दर मृग समान है, वह* ***हिरण्डयनाभ*** *हैं।*

तप नारायण करें बदरिका, सुतपा मग्न समाधि अग्रिका ।
नाभि नियंत नीरज जैसी, पद्मनाभ प्रभु सोभित ऐसी ।।(८३)

भावार्थ: *बद्रिकाश्रम में नर नारायण रूप में तप करने वाले समाधी में अग्रिम भगवान्* ***सुतपा*** *हैं। भगवान् की नाभि कमल के समान शोभित है, अतः वह* ***पद्मनाभ*** *हैं।*

प्रजापति हैं सब के स्वामी, विनाशहीन वह अमृत्यु जानी ।
सर्व भूत सर्वदृक विद्यमाना, सिंह शौर्य ना कोई समाना ।।(८४)

भावार्थ: *प्रभु सभी जीवों के स्वामी हैं, अतः* ***प्रजापति*** *हैं। भगवान् अविनाशी तथा अमर हैं, इसलिए* ***अमृत्यु*** *हैं। सर्वव्यापक प्रभु* ***सर्वदृक*** *है। भगवान् के समान कोई शौर्यवान नहीं, इसलिए* ***सिंह*** *हैं।*

शुभाशुभ प्रतिफल के दाता, दें सहज सुख सुर सन्धाता ।
भोगत फल स्वयं सन्धिमान, रहें स्थिर हर स्थिति समान ।। (८५)

भावार्थ: *कर्मों के अनुसार शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले एवं सभी को सहज सुख प्रदान करनेवाले देव* ***संधाता*** *है। फलों के भोगने वाले भी वही स्वयं हैं, इसलिए* ***सन्धिमान*** *हैं। सदा एक रूप में स्थित होने के कारण भगवान्* ***स्थिर*** *हैं।*

हिय बसत अज सब संतन, दुर्मर्षण हरि पाप निवारन ।
शास्ता हैं नियम नियंत, श्रवण करें विश्रुतात्म वेदांत ।।(८६)

भावार्थ: *भक्तों के हृदय में बसने वाले प्रभु* ***अज*** *हैं।(वास्तविक में अज का अर्थ समाना अथवा फेंकना होता है। प्रभु संतों के हृदय में समाते हैं एवं दुष्टों को फेंकते हैं, इसलिए अज हैं।) पापों का निवारण उनकी ही कृपा से होता है, अतः* ***दुर्मर्षण*** *हैं। प्रकृति के नियम नियंत्रक हैं, इसलिए* ***शास्ता*** *हैं। वेदों का श्रवण करने वाले प्रभु* ***विश्रुतात्म*** *हैं।*

रक्षक सुर मर्दक सब दुष्ट, हैं सुरारिहा देवों के इष्ट ।
गुरु ज्ञानमूल उत्पन्ना, गुरुतम ज्ञान ब्रह्म भी दीना ।।(८७)

भावार्थ: *देवतओं के इष्ट, उनकी रक्षा करने वाले तथा सभी दुष्टों का मर्दन करने वाले भगवान्* ***सुरारिहा*** *हैं। भगवान् ही ज्ञान मूल एवं ज्ञान शिक्षक हैं, अतः* ***गुरु*** *हैं। ब्रह्मा को भी ज्ञान देने वाले प्रभु को* ***गुरुतम*** *कहकर पुकारा गया हैं।*

परमज्योति अतैव हैं धाम, हैं धर्मरूप सत्य सतकाम ।
शूरवीर प्रभु धर्मरक्षिता, सत्यपराक्रम भूजन भजता ।। (८८)

भावार्थ: *भगवान् परम ज्योति हैं, इसलिए उन्हें* ***धाम*** *नाम से उच्चारित किया जाता हैं। धर्म और सत्यरूप होने से उन्हें* ***सत्य*** *कहा गया हैं। धर्म की रक्षा करने वाले अत्यंत शूरवीर प्रभु को सभी पृथ्वीवासी* ***सत्यपराक्रम*** *नाम से भजते हैं।*

रहें योग साधन में नियंत, देखें निमिष जग नेत्र बंद ।
अनिमिष हरि अद्वैतीश्वर, स्त्रग्वी प्रभु हैं बैजंतीश्वर ।।(८९)

भावार्थ: *प्रभु योगासन में समाधिष्ट मुंदे नेत्र से विश्व को देखते हैं, अतः* ***निमिष*** *हैं। आत्मा परमात्मा से अभिन्न (अद्वैत) होने के कारण* ***अनिमिष*** *हैं। सदैव कंठ में माला (वैजयंती) धारण करते हैं अतः* ***स्त्रग्वी*** *हैं।*

वाक् चतुर प्रभु वाचस्पती, सर्वभूत सत रूप रुदारती ।
सुमिरें तब प्रशस्त पद पावें, अग्रणी जप जीव तर जावें ।।(९०)

भावार्थ: *भगवान् वाक् चतुर हैं, अतः* ***वाचस्पति*** *हैं। सर्वव्यापी सत्य स्वरुप एवं न्यायी प्रभु* ***रुदारती*** *हैं। जिनके स्मरण मात्र से उच्च पद की प्राप्ति होती हैं तथा भवसागर से तर जाते हैं वह प्रभु* ***अग्रणी*** *हैं।*

ग्रामणी श्रीमान जग नायक, नेता तुम्हीं विश्व संचालक ।
हो तुम्हीं प्रभु न्यायदाता, न्याय हरि सब जीव पूजिता ।।(९१)

भावार्थ: *आप* ***श्रीमान*** *(माँ लक्ष्मी के स्वामी) एवं विश्व के नायक हैं, अतः* ***ग्रामणी*** *हैं। विश्व का संचालन (नेतृत्व) करते हैं, अतः* ***नेता*** *हैं। आप ही दुखियों के न्यायदाता एवं उनसे पूजित हैं, अतः* ***न्याय*** *हैं।*

दाता श्वांस अतैव समीरणा, सहस्त्रमूर्ध के सहस्त्रमुखणा ।
सार विश्व के तुम विश्वात्मा, करें दूर भ्रम हरि निवृत्तात्मा ।।(९२)

भावार्थ: *प्रभु श्वांस (वायु) के दाता हैं, अतः* ***समीरणा*** *हैं। हरि के एक सहस्त्र मुख हैं, इसलिए* ***सहस्त्रमूर्ध*** *हैं। विश्व की आत्मा होने के कारण* ***विश्वात्मा*** *हैं। भ्रम दूर करने वाले प्रभु* ***निवृत्तात्मा*** *हैं।*

सहस्त्र पग के तुम हो स्वामी, सहस्त्रपात हरि सर्वगामी ।
भवसागर पारें आवर्तना, सहस्त्राक्ष के सहस्त्र लोचना ।।(९३)

भावार्थ: *सत्यव्रत सर्वव्यापी प्रभु सहस्त्र चरणों (पाद) के स्वामी हैं, अतः* ***सहस्त्रपात*** *हैं। संसार चक्र (भवसागर) से* ***आवर्तना*** *प्रभु पार करते हैं। सहस्त्र चक्षु धारण करते हैं, अतः* ***सहस्त्राक्ष*** *हैं।*

संवृत करें दूर अशुभता, करें सम्प्रमर्दन दूर दुष्टता ।
अहःसंवर्तक हैं सम रवि, वह्नि स्वीकारें यज्ञ हवि ।।(९४)

भावार्थ: *अशुभता को नष्ट करनेवाले प्रभु* ***संवृत*** *हैं। दुष्टता को नष्ट करने वाले हरि* ***सम्प्रमर्दन*** *हैं। सूर्य की तरह प्रकाश देने वाले भगवान्* ***अहःसंवर्तक*** *हैं। यज्ञ हवि को स्वीकार कर मनोवांछित फल देने वाले प्रभु* ***वह्नि*** *हैं।*

अनिल हैं अनादि सर्वभूता, धारी शीश भू धरनीधरा ।
करें उपकार जो अपकारा, सुप्रसाद प्रभु अति कृपाला ।।(९५)

भावार्थ: *अनादि एवं सर्वव्यापी होने से प्रभु* ***अनिल*** *हैं। सिर पर पृथ्वी को धारण करते हैं, अतः* ***धरनीधरा*** *हैं। कृपाल हरि अपकार करने वालों का भी उपकार करते हैं, इसलिए* ***सुप्रसाद*** *हैं।*

प्रसन्नात्म सदैव आनंदम, विश्वधृक धरें भूभार सुगम ।
हैं विश्वभुग विश्व पालक, विभु प्रभु अति आनंददायक ।।(९६)

भावार्थ: *प्रभु का अन्तः करण सदैव आनंदित रहता हैं, अतः वह* ***प्रसन्नात्मा*** *हैं। अत्यंत सहजता से ही जो विश्व को धारण (विश्व का भार) कर लेते हैं, वह* ***विश्वधृक*** *हैं। समस्त विश्व के पालनकर्ता* ***विश्वधृक*** *हैं। दिव्य आनंद देने वाले प्रभु* ***विभु*** *हैं।*

तीनहुँ लोक पूजें सत्कर्ता, विरक्त जग हरि साधु कहता ।
पूजें संत सत्कृत प्रभु पुन्या, साधु कर्म नहीं कोई अन्या ।।(९७)

भावार्थ: *तीनों लोक जिनका पूजन अर्चन करते हैं, वह भगवान्* ***सत्कर्ता*** *हैं। वेद भी जिनको धार्मिक सदाचारी वर्णित करते हैं, वह प्रभु* ***साधु*** *हैं। संत समाज पर दिव्य भगवान्* ***सत्कृत*** *की पूजा अर्चना के अतिरिक्त कोई और कार्य नहीं हैं।*

काल प्रलय समाहित जीवा, जह्नु नाम तब ग्रंथन दीवा ।
तुम्हीं हो नर तुम्हीं आत्मा, नरनारायण अखिल जगात्मा ।।(९८)

भावार्थ: *प्रलय काल में जीव भगवान में विलीन हो जाते हैं, अतः ग्रंथों ने उन्हें* ***जह्नु*** *नाम से सम्बोद्धित किया है। हरि नर एवं आत्मा दोनों हैं, इस प्रकार विश्व की आत्मा होने के कारण उन्हें* ***नरनारायण*** *नाम से पुकारा जाता है।*

अनेक नाम हरि असंख्येया, अप्रेयात्मा स्वरुप अप्रमेया ।
सुरहुँ हरि आकार ना जाना, विशिष्ट प्रभु महाबलवाना ।।(९९)

भावार्थ: *प्रभु के असंख्य नाम होने से वह* ***असंख्येया*** *हैं। (श्री विष्णुसहस्त्रनाम में भगवान् के सहस्त्र नामों का उल्लेख करते हुए भगवान् वेद व्यास जी कहते हैं कि यह तो प्रभु के कुछ ही नाम हैं)। प्रभु के रूप को मापा नहीं जा सकता, वह अनंत हैं अर्थात* ***अप्रेयात्मा*** *हैं। देवता भी प्रभु के स्वरुप और आकार जानने में अनभिज्ञ हैं, ऐसे महाबलशाली प्रभु को* ***विशिष्ट*** *कहकर सम्बोद्धित किया गया है।*

हरि हैं अति कुशल शासक, शिष्टकृत प्रभु हैं अभिभावक ।
पावन तन और पावन आत्मा, शुचि हरि हैं श्रेष्ठ परमात्मा ।।(१००)

भावार्थ: *इस सृष्टि को प्रभु* ***शिष्टकृत*** *अभिभावक बन कुशलता से शासित करतें हैं। जिनका तन एवं मन, दोनों ही पवित्र हैं, ऐसे परमात्मा को* ***शुचि*** *कह कर बुलाते हैं।*

सिद्धार्थ हैं संपन्न सत्कर्मा, दें सिद्धिद प्रभु फल करमा ।
सिद्धसंकल्प सिद्धि पूरना, सिद्धिसाधन सिद्धि साधना ।।(१०१)

भावार्थ: *सत्य कर्मों से संपन्न प्रभु* ***सिद्धार्थ*** *हैं।* ***सिद्धिद*** *भगवान् कर्मों का फल देते हैं।* ***सिद्धसंकल्प*** *सिद्धियों (मनोरथ) को पूर्ण करते हैं। सिद्धिओं के साधक हरि* ***सिद्धिसाधन*** *हैं।*

धर्म पालक तुम हो परमात्मा, वृषाही परम पवित्र आत्मा ।
वृषभ करें सब पूर्ण कामना, विष्णु व्यापित ब्रह्म सृजना ।।(१०२)

भावार्थ: *परम पूज्य धर्म पालक प्रभु* ***वृषाही*** *हैं।* ***वृषभ*** *रूप में (भक्तों) की समस्त कामनाएं पूर्ण करते हैं।* ***विष्णु*** *ब्रह्मदेव सर्जित विश्व में सर्वव्यापी हैं।*

साधन स्वर्ग सुजय स्वरूपा, वृषपर्वा तुम परम सुरूपा ।
वृषोदर हैं जग अन्नपूरना, मान बढे जब सुमर वर्धना ।।(१०३)

भावार्थ: *अति सुन्दर रूप वाले* ***वृषपर्वा*** *विजय एवं स्वर्ग प्राप्ति के साधन हैं। (वृषपर्वा भगवान् का स्मरण जीवों को विजय दिलाता है और मरणोपरांत स्वर्ग का पथ निश्चित करता है)। इस जग का पोषण करने वाले अन्नपूर्णा भगवान्* ***वृषोदर*** *हैं। प्रभु का* ***वर्धना*** *नाम स्मरण करने से यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।*

सुमरत ही हों प्रगट सवेगा, वर्धमान की गति अति वेगा ।
विविक्त प्रपंचहीन नियंता, श्रुतिसागर दुःख हरण अनन्ता ।।(१०४)

भावार्थ: ***वर्धमान*** *नाम के स्मरण से (भक्तों की रक्षा हेतु) प्रभु शीघ्र विकट रूप में प्रगट हो जाते हैं (विकट रूप का उल्लेख किया गया है ताकि वह दुष्टों का संहार कर सकें)। प्रभु का स्वभाव प्रपंचहीन है अतः वह* ***विविक्त*** *हैं। दीन दुखियों के दुःख हरण करने वाले प्रभु* ***श्रुतिसागर*** *हैं।*

हैं सुभुजा महान भुजावान, दुर्धर दूभर मिलन भगवान् ।
गाएं वेद वाग्मी मधुरता, हैं इंद्रपति प्रभु महेंद्र नियंता ।।(१०५)

भावार्थ: *बलशाली भुजा से युक्त हरि* ***सुभुजा*** *हैं।* ***दुर्धर*** *भगवान् कठिनता से प्राप्त होते हैं (यहां तप और श्रद्धा को महत्वा दी गयी है)। मधुर वेद वाणी से युक्त ज्ञानी* ***वाग्मी*** *हैं। इंद्रदेव को नियंत्रित करने वाले एवं उनके स्वामी* ***महेंद्र*** *हैं।*

धनपति वसुद श्री के स्वामी, दें धन वसु संत अनुगामी ।
अनेक रूप अवतरित धरा, नैकरूप तब ग्रंथन कहा ।।(१०६)

भावार्थ: *माँ लक्ष्मी (श्री) के पति* ***वसुद*** *हैं।* ***वसु*** *रूप में वह संत अनुगामियों को धन वितरित करते हैं (सम्पन्नता देते हैं)। भगवान् अनेक रूपों से इस धरा पर अवतरित होते हैं, अतः* ***नैकरूप*** *हैं, ऐसा सब ग्रन्थ गायन करते हैं।*

बृहत रूप तुम नापो जगत, बृहदरूप देख बालि हर्षित ।
शिपविष्ट हरि गौ में स्थित, प्रकाशन करें प्रकाशित जगत ।।(१०७)

भावार्थ: *भगवान् के त्रिलोक नापने वाले बृहत रूप को देखकर बाली अत्यंत हर्षित हुए, इसलिए उन्हें* ***बृहदरूप*** *नाम से जाना गया। प्रभु के अंदर गौ माता का वास है, अतः वह* ***शिपविष्ट*** *हैं। प्रभु का स्वरुप जग को प्रकाशित करता है, इसलिए* ***प्रकाशन*** *हैं।*

तुम्हीं हो तेज तपस्विन का, ओजस्त दीप हो संतन का ।
तुम्हीं हो बल बलवानों का, हो द्युतिधर वैभव शूरों का ।।(१०८)

भावार्थ: *संतों के दीपरूप एवं साधकों के तेज प्रभु* ***ओजस्त*** *नाम से पुकारे जाते हैं। शूर वीरों के वैभव अति बलशाली प्रभु* ***द्युतिधर*** *हैं।*

प्रकाशात्मा हरि अति पावन, ओज रवि सम प्रतापन ।
धर्मबोध से ऋद्ध सम्पन्न, स्पष्टाक्षर हरि रहें प्रसन्न ।।(१०९)

भावार्थ: *भगवान् का अन्तः करण अत्यंत पवित्र (उज्जवल) है, अतः वह* ***प्रकाशात्मा*** *हैं। सूर्य के सामान जिनका तप है वह* ***प्रतापन*** *हैं। धर्म, ज्ञान आदि से संपन्न प्रभु* ***ऋद्ध*** *हैं। भगवान् सदैव प्रसन्न रहने वाले है, अतः* ***स्पष्टाक्षर*** *हैं।*

ज्ञानी चतुर्वेद हरि मंत्रण, चन्द्रांशु की शीतल किरण ।
समाहित सूर्य सम ज्योति,भास्करद्युति ज्ञान प्रेरति ।।(११०)

भावार्थ: *जिनमें चारों वेदों का ज्ञान समाहित है, वह प्रभु* ***मंत्रण*** *हैं। शीतल किरणों से युक्त भगवान्* ***चन्द्रांशु*** *हैं (यहाँ संसार ताप रूप सूर्य के ताप से संतप्त चित्त जीवों को शीतल किरणों के सामान शीतलता प्रदान करने का उल्लेख किया गया है)। प्रभु में सूर्य के समान तेज समाहित है, और वह ज्ञान प्रेरणा हैं, अतः* ***भास्करद्युति*** *हैं।*

प्रगट सोम जब सागर मन्थन, इच्छा अमृतांशूद्भव कारन ।
भानु सूर्य समान है तपता, हैं शशबिन्दु प्रभु औषिधिदाता ।।(१११)

भावार्थ: *समुन्द्र मंथन के समय चद्रमा की उत्पति प्रभु* ***अमृतांशूद्भव*** *के कारण हुई। सूर्य के समान तप वाले भगवान्* ***भानु*** *हैं।* ***शशबिन्दु*** *औषिधियों का पोषण करते हैं।*

सुरेश्वर हरि पूजित सुरपति, हो जग निरोग औषध कृति ।
जगतसेतु तारें भवसागर, सत्यधर्मपराक्रम पूजित आगर ।।(११२)

भावार्थ: *इंद्र आदि समस्त देवताओं से पूजित प्रभु* ***सुरेश्वर*** *हैं। प्रभु जग को निरोग करते हैं, अतः* ***औषध*** *हैं।* ***जगतसेतु*** *भवसागर को बांधने वाले हैं (मोक्ष देने वाले हैं)। सत्य और धर्म की राह पर चलने वाले अत्यंत पराक्रमी प्रभु* ***सत्यधर्मपराक्रम*** *अति पूज्य हैं।*

जानें भूत भविष्य वर्तमान, भूतभव्यभवन्नाथ हैं भगवान ।
हो पवित्र जप पवन ईशा, चले समीर पावन निर्देशा ।।(११३)

भावार्थ: *जो भूत, वर्तमान और भविष्य जानते हैं, वह* ***भूतभव्यभवन्नाथ*** *प्रभु हैं। जिनके जपने से हृदय पवित्र हो जाता है, ऐसे भगवान्* ***पवन*** *हैं। जिनके आदेश से वायु प्रवाहित होती है वह ईश्वर* ***पावन*** *हैं।*

अनल को प्रिय आत्मभावना, कामहा करें अंत कामना ।
पूर्ण करें पूर्ण अभिलाषा, हैं कामकृत संतन की आशा ।।(११४)

भावार्थ: *जीवों की आत्मभावना प्रभु को अत्यंत प्रिय है, अतः वह* ***अनल*** *है।* ***कामहा*** *भगवान् कामनाओं का अंत करते हैं (यहाँ ऐहिक कामनाओं का उल्लेख है)।* ***पूर्ण*** *प्रभु भक्तों की सभी कामनाएं पूर्ण करते हैं।* ***कामकृत*** *संतो के हित के लिए उनकी कामनाओं को पूर्ण करते हैं।*

अति सुन्दर कान्त नियंत, पाएं लक्ष्य काम जब अर्चित ।
पूर्ण करें भक्त कामना, जब हिय कामप्रद हरि धरना ।।(११५)

भावार्थ: *अति सुन्दर काया के स्वामी* ***कान्त*** *हैं।। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए* ***काम*** *भगवान् की पूजा की जाती है। जब* ***कामप्रद*** *प्रभु को हृदय में सदैव धारण किया जाता है तो वह भक्तो के हित की कामनाओं को प्रदान करते हैं।*

युग आरम्भ प्रभु के कृत्य, हैं युगादिकृत संसार पूज्य ।
युग आवर्तन करें नियंत, युगावर्त तुम हरि अनंत ।।(११६)

भावार्थ: *विश्व पूजित* ***युगादिकृत*** *प्रभु के कृत्य से ही युग का प्रारम्भ होता है। प्रभु ही समस्त युगों, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, का आवर्तन करतें हैं, जग पूजित हैं, अतः* ***युगावर्त*** *हैं।*

धारें बहु माया हैं पूजित, हैं नैकमाय भ्रमहरित नियंत ।
ग्रसें जीव कल्प के अंत, महाशन हरि हैं मोक्ष नियंत ।।(११७)

भावार्थ: *पूजित भ्रमरहित प्रभु अनेक मायाओं को धारण करते हैं, इसलिए* ***नैकमाय*** *हैं। कल्प के अंत में (प्रलय काल) सभी जीवों का आहार बनाकर उन्हें मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं, अतः* ***महाशन*** *हैं।*

विषय रहित श्री भगवाना, हैं अदृश्य सम काल दुर्जना ।
करे प्रकाश सुन्दर रूपा, व्यक्तरूप योगी अनुरूपा ।।(११८)

भावार्थ: *विषयों से रहित* ***अदृश्य*** *भगवान् संत समाज को सताने वाले जन के शत्रु हैं। स्वयं प्रकाशित सुन्दर रूप वाले योगी सदृश्य प्रभु* ***व्यक्तरूप*** *हैं।*

संहारे रण असंख्य असुर, हैं सहस्त्रजित संगी संत सुर ।
अचिन्त्य ओजमय अनंतजिता, इष्ट हरि हैं हवि ग्रहणता ।।(११९)

भावार्थ: *असंख्य असुरों का रण में संहार करने वाले संतों के मित्र, प्रभु* ***सहस्त्रजित*** *हैं। अचिन्त्य तेज वाले प्रभु* ***अनंतजिता*** *हैं। यज्ञ में अर्पित हवि को ग्रहण करने वाले भगवान्* ***इष्ट*** *हैं।*

हैं अन्तर्यामी अमर अविशिष्टा, शिक्षक पंडित हैं शिष्टेष्टा ।
शिखंडी हैं मोर पंख धारी, पालें गौ हरि गोपवेशधारी ।।(१२०)

भावार्थ: *अन्तर्यामी और अजन्मा प्रभु* ***अविशिष्टा*** *हैं। विद्वानों के भी शिक्षक* ***शिष्टेष्टा*** *हैं। मस्तक पर मयूर पंख का धारण करने वाले* ***शिखंडी*** *प्रभु गौ माँ पालक एवं* ***गोपवेशधारी*** *हैं।*

हों माया भृमित चकित असुर, नहुष सुमर भवसागर तर ।
हैं वर्ष शिक्षक ऋषि-धर्म, क्रोधहा नाशें जो करें कुकर्म ।।(१२१)

भावार्थ: *माया से असुरों को भ्रमित एवं चकित करने वाले प्रभु जिनके नाम स्मरण से भवसागर तर जाते हैं, वह प्रभु* ***नहुष*** *हैं। ऋषि और धर्म पालन करने वालों के शिक्षक* ***वर्ष*** *हैं। कुकर्म करने वालों का प्रभु* ***क्रोधहा*** *नाश करते हैं।*

करें कोप हो नष्ट अधर्मी, क्रोधकृत पूजित श्री कर्मी ।
हे कर्ता तुम्हीं हो भर्ता, हैं विश्वबाहु आलम्बन संता ।।(१२२)

भावार्थ: *सभी संतों द्वारा पूजित* ***क्रोधकृत*** *प्रभु के क्रोध करने से दुष्टों का संहार होता है। भगवान्* ***कर्ता*** *ही भर्ता हैं। संतों के आलम्बन (आश्रयदाता)* ***विश्वबाहु*** *भगवान् हैं।*

धार शीश की रक्ष वसुंधरा, हुए विख्यात प्रभु महीधरा ।
हैं अच्युत षष्ट विकारहीना, प्रथित जीव उत्पत्ति कीना ।।(१२३)

भावार्थ: *पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रभु ने इन्हें शीश पर धारण किया, अतः वह विश्व में* ***महीधरा*** *के नाम से विख्यात हुए। छै भाव विकारों से विहीन होने के कारण वह* ***अच्युत*** *हैं। (जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश, ये छै विकार शास्त्र वर्णित हैं)। जीव उत्पत्ति करने वाले प्रभु* ***प्रथित*** *हैं।*

हैं प्राण प्रभु जीवन आधार, हैं प्राणद सुर नर बलाधार ।
इन्द्रानुज रूप अवतारा, वासवानुज तुम बालिहिं तारा ।।(१२४)

भावार्थ: *इस सृष्टि के आधार प्रभु* ***प्राण*** *हैं। देव एवं नर के बल आधार भगवान्* ***प्राणद*** *हैं। इन्द्र के अनुज के रूप में अवतार लेकर (कश्यप जी द्वारा अदिति से इन्द्र के अनुज के रूप में अवतरित हुए थे) आपने* ***वासवानुज*** *नाम से बालि का उद्धार किया।*

हैं हरि ईश विभूति सागरा, अपांनिधि स्वामी जन धरा ।
स्थित अन्तर्भाग सब जीव, अधिष्ठान हैं सकल शरीर ।।(१२५)

भावार्थ: *जन जीवों के आधार* ***अपांनिधि*** *भगवान् समुद्र के स्वामी एवं इनकी विभूति हैं। समस्त जीवों के अन्तः करण में स्थित* ***अधिष्ठान*** *प्रभु साकार रूप में अवतरित हुए।*

अप्रमत्त दें न्याय सब कर्मी, प्रभु प्रतिष्ठित अति पराक्रमी ।
हैं स्कन्द अमर परमेश्वर, स्कन्दधर हैं धर्म के ईश्वर ।।(१२६)

भावार्थ: *सब कर्मियों को यथोचित न्याय देने वाले प्रभु* ***अप्रमत्त*** *हैं। महान पराक्रमी भगवान्* ***प्रतिष्ठित*** *हैं। अजर अमर एवं अमृत रूप से बहने वाले प्रभु* ***स्कन्द*** *हैं। धर्म मार्ग पर चलने वाले ईश्वर* ***स्कन्दधर*** *हैं।*

धुर्य सहें सहज भार जन, दें फल वरद कर्म भूजन ।
पवन प्रवाह प्रभु आदेशा, हैं वायुवाहन वेगनिर्देषा ।।(१२७)

भावार्थ: ***धुर्य*** *भगवान् समस्त जीवों का भार सहजता से सहते हैं। सृष्टि के लोगों को* ***वरद*** *उनके कर्मों का फल देते हैं।* ***वायुवाहन*** *प्रभु के आदेश से पवन बहती है और वही उसके वेग को निर्देशित करते हैं।*

वासुदेव बसें हिय देवा, वृद्धभानु दिनकर सम तेजा ।
प्रथम देव प्रभु सब जाना, आदिदेव हम करें प्रनामा ।।(१२८)

भावार्थ: *समस्त देवों के ह्रदय में बसने वाले प्रभु* ***वासुदेव*** *हैं। सूर्य के समान तेज वाले भगवान्* ***वृद्धभानु*** *हैं। प्रथम देव* ***आदिदेव*** *को सभी प्रणाम करते हैं।*

ध्वस्त करें नगर असंतन, तब पाणिनी पुरंदर निपातन ।
है दोष शोक ग्रंथ बखाना, हैं अशोक दोषहीन जगजाना ।।(१२९)

भावार्थ: *प्रभु दुष्टों और दैत्यों के नगरों को ध्वस्त करते हैं इसलिए पाणिनी महिषी ने उन्हें* ***पुरंदर*** *नाम से सम्बोधित किया है। शोक एक प्रकार का उर्मि दोष शास्त्रों ने वर्णित किया है, भगवान्* ***अशोक*** *इस दोष से मुक्त हैं, ऐसा विश्व जानता है।*

तारें भगवन भव सागरा, हैं तारण हरि मोक्ष आधारा ।
जो हरें जनम मरण संवेगा, सुमर तार भागें दुःख वेगा ।।(१३०)

भावार्थ: *भगवान् का* ***तारण*** *नाम स्मरण भवसागर पार कर मोक्ष का आधार बनाता है। जन्म मरण की घबराहटों को हर कर* ***तार*** *भगवान् का जप दुखों को शीघ्र भगा देता है।*

न कोई बली शूर समान, हैं शौरि वीर वसुदेव संतान ।
हैं जनेश्वर लोक नियंता, करें अनुकूल मंगल सब संता ।।(१३१)

भावार्थ: *भगवान् के समान कोई वीर नहीं, इसलिए वह* ***शूर*** *हैं। वीर वासुदेव के पुत्र होने से हरि* ***शौरि*** *हैं। इस विश्व के नियंत्रक प्रभु* ***जनेश्वर*** *हैं।* ***अनुकूल*** *भगवान् सब संतों का मंगल करते हैं।*

लें रक्षा मही हेतु अवतार, शतावर्त प्रगटे शत बार ।
है शोभित हस्त नीरज, पद्मी सुभग समान सूरज ।।(१३२)

भावार्थ: *पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रभु ने सैकड़ों (बहुत) अवतार लिए, इसलिए वह* ***शतावर्त*** *नाम से विख्यात हुए। सूर्य के समान प्रतिभाशाली प्रभु के हाथों में कमल पुष्प शोभायमान है, इसलिए वह* ***पद्मी*** *हैं।*

लाल नयन कमल समाना, पद्मनिभेक्षण प्रभु सब जाना ।
देह स्थित है कमल नाभिका, पद्मनाभ है मध्य कर्निका ।।(१३३)

भावार्थ: *भगवान् के लाल नेत्र कमल के समान हैं, अतः उन्हें जग* ***पद्मनिभेक्षण*** *नाम से बुलाता है। प्रभु के शरीर में कमल रूपी नाभिका स्थित है जो कर्णिका के बीच में विद्यमान है, इसलिए उन्हें* ***पद्मनाभ*** *नाम से जाना जाता है।*

अति सुन्दर नियंत के नैना, अरविंदाक्ष के कमल लोचना ।
हैं स्थित हिय उत्पल के मध्य, रहें मनन में पद्मगर्भ पूज्य ।।(१३४)

भावार्थ: *भगवान् के अति सुन्दर चक्षु कमल समान हैं, अतः वह* ***अरविंदाक्ष*** *हैं। हृदय रूपी कमल के मध्य में पूजित भगवान्* ***पद्मगर्भ*** *को स्थित कर उनकी साधना की जाती है।*

करें पोषण अन्न सतकर्मा, हैं शुभ शरीरभृत के कर्मा ।
विपुल विभूति विधि भगवान्, करें महर्द्धि सिद्धि प्रदान ।।(१३५)

भावार्थ: *अन्नरूप सत्यकर्म प्रभु स्वयं ही विश्व को पोषण करने हेतु अवतरित होते है, अतः* ***शरीरभृत*** *हैं। रिद्धि सिद्धि को प्रदान करने वाले विपुल विभूति के स्वामी* ***महर्द्धि*** *हैं।*

प्रपंच रूप हैं रिद्ध स्वरूप, वृद्धात्मा अजन्मा प्रभु रूप ।
महाक्ष के सहस्त्र लोचन, प्रभु गरुड़ध्वज गरुड़ चिन्ह ।।(१३६)

भावार्थ: *प्रपंच रूप होने से प्रभु को* ***रिद्ध*** *सम्बोधित किया जाता है। प्रभु का रूप अजन्मा है, अतः वह* ***वृद्धात्मा*** *हैं। हरि के सहस्त्र (अनगिनित) नेत्र हैं, अतः* ***महाक्ष*** *हैं। प्रभु की ध्वजा गरुण के चिह्न वाली है, इसलिए वह* ***गरुड़ध्वज*** *हैं।*

हैं महायशी अतुल्य परमात्मा, अतुल अमर अजर आत्मा ।
अमर शरीर तुम सर्वभूता, हैं दृढ़ संकल्पी शरभ अजेता ।।(१३७)

भावार्थ: *अतुलनीय अजर अमर आत्मा के स्वामी महायशी प्रभु* ***अतुल*** *हैं। दृढ संकल्पी अमरत्व प्राप्त अजेय सर्व व्यापी भगवान्* ***शरभ*** *हैं।*

महाबलशाली प्रभु हैं भीम, हैं समयज्ञ समद्रष्ट अति दीम ।
पावन यज्ञ हवि सुहाना, करें हविर्हरि अभीष्ट अनुदाना ।।(१३८)

भावार्थ: *महाबलशाली प्रभु* ***भीम*** *हैं। अत्यंत वैभवशाली सभी को सामान दृष्टि से देखने वाले भगवान्* ***समयज्ञ*** *हैं । पवित्र यज्ञ की कल्याणमयी हवि को भेंट रूप में स्वीकार कर मनोरथ पूर्ण करते हैं, अतः* ***हविर्हरि*** *हैं।*

परम ज्ञान है हरि समाहित, हैं सर्वलक्षणलक्ष्णय कहावत ।
लक्ष्मीवान हिय श्री वासा, हैं समितिज्जय समर श्री आशा ।।(१३९)

भावार्थ: *प्रभु के अन्तः करण में श्रेष्ठ ज्ञान समाहित है, अतः उन्हें* ***सर्वलक्षणलक्ष्णय*** *नाम से पुकारा जाता है। श्री के पति श्री (लक्ष्मी) को अपने ह्रदय में धारण करते हैं, इसलिए*

लक्ष्मीवान *हैं । युद्ध में प्रभु के* ***समितिज्जय*** *नाम का स्मरण जीत की आशा दिलाने वाला हैं।*

अविनासी विक्षर भगवाना, रोहू रूप रोहित सब जाना ।
दें मार्ग प्रेरणा मिले आनंद, मिले हरि हेतु से निर्वानन्द ।।(१४०)

भावार्थ: *जिनका कभी नाश नहीं होता (अविनासी), ऐसे प्रभु* ***विक्षर*** *हैं। रोहू मत्सय के रूप में अवतरित हुए, इस कारण उन्हें* ***रोहित*** *नाम से जाना जाता है। सदैव आनंद पथ की खोज में लगे रहते हैं, अतः* ***मार्ग*** *हैं। (अपने भक्तों में) मोक्ष का आनंद देने के लिए प्रभु* ***हेतु*** *नाम से अवतरित हुए।*

बांधो यशोदा हरि खम्भा, दामोदर हरि संत स्तम्भा ।
सहें सभी जन के विकार, हैं प्रभु महीधर पर्वताकार ।।(१४१)

भावार्थ: *संतों के आधार प्रभु को जब माँ यशोदा ने खम्भे से बांधा तो जग ने उन्हें* ***दामोदर*** *नाम से सम्बोधित किया। नर और नारियों (अपने भक्तों) के विकारों को सहन करने के कारण उनका नाम* ***सह*** *पड़ा। प्रभु का आकार पर्वत रूप होने के कारण (अति विशाल) उन्हें* ***महीधर*** *नाम से बुलाया गया।*

भाग्यवान कोई हरि सम नाहीं, महाभाग सब ग्रंथन गाहीं ।
जस पवन चले तीव्र गति, तस वेगवान मन द्रुत प्रवाहति ।।(१४२)

भावार्थ: *भगवान् के सामान कोई भाग्यशाली नहीं है, अतः शास्त्रों ने उन्हें* ***महाभाग*** *नाम से पुकारा है। जिस प्रकार वायु अत्यंत तीव्र गति से बहती है उसी प्रकार प्रभु* ***वेगवान*** *का मन अत्यंत वेग से प्रवाहित आता है।*

हो समाहित जग कुक्ष प्रलय, अमितासन हैं हरि अतिदिव्य ।
उद्भव शासक सब भू-जीवा, करें क्षोभण पापी भयभीता ।।(१४३)

भावार्थ: *प्रलय के समय दिव्य प्रभु* ***अमितासन*** *के उदर में संसार समाहित हो जाता है। पृथ्वी के समस्त जीवों के स्वामी होने के कारण उन्हें* ***उद्भव*** *नाम से पुकारा जाता है। पापियों को भयभीत करने वाले भगवान् का नाम* ***क्षोभण*** *है।*

स्तवन पूजन से हों पवित्र, हैं हरि देव स्थित सर्वत्र ।
श्री समाहित हरि उदरा, दें श्रीगर्भ धन-धान्य धरा ।।(१४४)

भावार्थ: *सर्वत्र स्थित एकरूप प्रभु का* ***देव*** *नाम से सब स्तवन और पूजन करते हैं। श्री (माँ लक्ष्मी) प्रभु के उदर में वास करती हैं, अतः उन्हें* ***श्रीगर्भ*** *के नाम से बुलाया जाता है, जो पृथ्वी पर धन धान्य की वर्षा करते हैं।*

परमेश्वर प्रभु परम ईश, करें जग निर्माण प्रभु करणीश ।
सृजत विश्व व् नियंत्रण कर्ता, कारण हरि जग के भर्ता ।।(१४५)

भावार्थ: *परम ईश प्रभु* ***परमेश्वर*** *हैं।* ***करणीश*** *प्रभु इस जग के निर्माण हेतु हैं। आप ही विश्व का निर्माण करते हैं एवं पोषण करते हैं, अतः* ***कारण*** *हैं।*

रचें भुवन विचित्र सदा, विकर्त प्रभु हैं वास्तुविदा ।
गहन सम न कृत्य क्षमता, करें दूर गुह माया ममता ।।(१४६)

भावार्थ: *प्रभु वास्तुकार होने से सदैव विचित्र भुवनों की रचना करते हैं, अतः* ***विकर्त*** *हैं। कोई भगवान् की कृत्य क्षमता को स्पर्श नहीं कर सकता, इसलिए* ***गहन*** *हैं। माया ममता से अपने स्वरुप को आवर्तित कर लेते हैं (ढक लेते हैं), अतः* ***गुह*** *हैं।*

व्यवसाय हरि दें कर्मज्ञान, व्यवस्थान दें पोषन संधान ।
अंत काल दें पद्मपाद, करें जब अर्चन संस्थान पाद ।।(१४७)

भावार्थ: *प्रभु ज्ञान देने वाले गुरु हैं, अतः* ***व्यवसाय*** *हैं। जग की पूर्ति करते हैं (व्यवस्था करते हैं), अतः उन्हें* ***व्यवस्थान*** *कहा जाता है। मरण पश्चात जिनके कमल रूपी चरणों में निवास मिलता है, एवं जो सभी से पूजित हैं, वह प्रभु* ***संस्थान*** *हैं।*

दें स्थानद फल कर्म अनुरूपा, हैं ध्रुव अविनासी स्वरूपा ।
परम पावन है प्रभु प्रसिद्धि, परर्द्धि प्रभु की क्षमा ही रीति ।।(१४८)

भावार्थ: *कर्मों के अनुसार जो पद देते हैं, वह* ***स्थानद*** *हैं। प्रभु अविनासी है, अतः* ***ध्रुव*** *हैं। ऐसे भगवान् जिनकी क्षमा ही रीति है, तथा जिनकी पवित्र प्रसिद्धि चहुं ओर है, वह* ***परर्द्धि*** *हैं।*

तुम्हीं परम सत्य के वक्ता, परमस्पष्ट धर्म अधिवक्ता ।
हो तुष्ट हरि तुम त्रप्तानंदा, पुष्ट हैं पूर्ण प्रभु परमानंदा ।।(१४९)

भावार्थ: *धर्म एवं सत्य के अधिवक्ता प्रभु* ***परमस्पष्ट*** *हैं। सदैव तृप्त रहने वाले त्रप्तानंद प्रभु* ***तुष्ट*** *हैं। परमानंद में रहने वाले हर प्रकार से पूर्ण प्रभु* ***पुष्ट*** *हैं।*

सुमरत नाम समाहित धर्मा, शुभेक्षण नाशें दुष्कर्मा ।
रमणें योगी नित्यस्वरूपा, राम अवध नरेश प्रतिरूपा ।।(१५०)

भावार्थ: *जिनके नाम स्मरण से दुष्कर्मों का अंत होता है एवं धर्म समाहित होता है, ऐसे प्रभु को* ***शुभेक्षण*** *नाम से जाना जाता है। जिन नित्यस्वरूप भगवान् में योगी रमण करते हैं, एवं जो अवध नरेश दशरथ जी के प्रतिरूप हैं (उनके पुत्र हैं) उनका नाम* ***राम*** *है।*

प्रलय काल समाहित आत्मा, विराम प्रभु हैं परमात्मा ।
विराज करें न सेवन विषया, दें मोक्ष मार्ग हरि पूज्या ।।(१५१)

भावार्थ: *प्रलय काल में जिनमें आत्मा समाहित हो जाती है ऐसे परमात्मा प्रभु* ***विराम*** *हैं। विषय सेवन में जिन्हें राग नहीं है, ऐसे प्रभु को* ***विराज*** *कह कर सम्बोद्धित किया जाता है। पूज्य भगवान्* ***मार्ग*** *(भक्तों को) मोक्ष पद देते हैं।*

पवित्र शरीर नेय भजन से, विश्व नेतृत्व स्वरुप नय से ।
आत्मनिर्भर अनय नियंत, न नृप कोई अतिरिक्त अनंत ।।(१५२)

भावार्थ: ***नेय*** *भगवान् के जप से शरीर अत्यंत पवित्र हो जाता है।* ***नय*** *प्रभु समस्त संसार के नेता हैं।* ***अनय*** *भगवान् स्वतंत्र हैं। उनके अतिरिक्त हमारा कोई स्वामी नहीं है।*

वीर करें कार्य सुचेष्ट, समान न कोई शक्तिमश्रेष्ठ ।
धर्म हरि सत बोधन दाता, धर्मविदुत्तम ग्रंथन ज्ञाता ।।(१५३)

भावार्थ: *महाबलशाली भगवान् **वीर** सदैव शुभ कर्म करते हैं। प्रभु के समान कोई विश्व में नहीं है, अतः वह **शक्तिमश्रेष्ठ** हैं। सत्य का ज्ञान कराते हैं, अतः **धर्म** हैं। शास्त्रों और ग्रंथों के ज्ञाता हैं, इसलिए **धर्मविदुत्तम** हैं।*

गति अवरोधा वैकुण्ठ नियंत, अमापित सभी तुला अनंत ।
हरि आदिजन्म दें फल सुकर्म, नाशें पुरुष सभी दुष्कर्म ।।(१५४)

भावार्थ: *गति को अवरोध करने वाले (जगत के प्रारम्भ में बिखरे हुए जीवों को परस्पर मिलाकर उनकी गति को रोकने वाले) प्रभु जिनका कोई मापदंड नहीं है, वह **वैकुण्ठ** हैं। प्रभु **आदिजन्म** हैं (जिनके जन्म काल का कोई पता नहीं है)। दुष्कर्मों को नष्ट करने वाले प्रभु **पुरुष** हैं।*

वायुविहीन सों हो जीव अंता, पवन रूप तुम प्राण नियंता ।
करें अंत प्राणद प्रलयकाला, हैं प्रणव पूज्य हरि निराला ।।(१५५)

भावार्थ: *वायु विहीन वातावरण से जीव का अंत हो जाता है, उनके लिए आप पवन रूप **प्राण** हैं। प्रलयकाल में सभी जीवों को अंत करने वाले (मुक्ति देने वाले) प्रभु **प्राणद** हैं। विचित्र (महा शक्तिशाली) भगवान् सर्व पूजित हैं अतः **प्रणव** हैं।*

प्रपंच रूप विस्तृत भगवाना, पृथु नाम है ग्रंथन जाना ।
जन्मे ब्रह्मा हरि वीर्य, हैं हिरण्डयगर्भ सब जग पूज्य ।।(१५६)

भावार्थ: *प्रपंच रूप से विस्तृत होने के कारण प्रभु को **पृथु** नाम से सभी ग्रंथों ने सम्बोद्धित किया है। पूज्य हरि ने अपने शुक्र से ब्रह्म देव को उत्पन्न किया, अतः वह **हिरण्डयगर्भ** नाम से जगत में पूज्य हैं।*

वधें रण जो रिपु हैं संता, हो शत्रुघ्न तुम धर्म नियन्ता ।
हों वर सों सफल सब कामा, व्याप्त सर्वभूत सतनामा ।।(१५७)

भावार्थ: *संत एवं देवताओं के शत्रुओं का रण में वध कर प्रभु धर्म को नियमित करते हैं, अतः **शत्रुघ्न** हैं। सर्व व्यापी सत्य नाम भगवान् के वरसे सभी कार्य सफल होते हैं, इसीलिये उन्हें **व्याप्त** नाम से पुकारा गया है।*

तुम्हीं वायु पावन गंध, हैं मध्य भू नभ अधोक्षज अंग ।
हैं नियंत्रक ऋतु षष्ठकाल, हों दर्श सुदर्शन नष्ट दुर्काल ।।(१५८)

भावार्थ: *प्रभु पुन्यगंध हैं, इसलिए* ***वायु*** *हैं। उद्योगपर्व में ऐसा वर्णित है कि भगवान् के अंग आकाश, अक्ष और पृथ्वी के मध्य में स्थित हैं, इसलिए* ***अधोक्षज*** *हैं। छयों मौसम (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत एवं शिशिर) के नियंत्रणकर्ता हैं, अतः* ***ऋतू*** *हैं।* ***सुदर्शन*** *भगवान् के दर्शन मात्र से सभी बुरे समय का नाश होता है।*

ज्ञानरूप प्रभु हैं कलना, काल करें सब जीवन गणना ।
स्थित नभ हिय मध्य श्रेष्ठी, परमेश्वर हरि हैं परमेष्ठी ।।(१५९)

भावार्थ: *ज्ञान स्वरुप प्रभु* ***कलना*** *(गणना करने वाले) समस्त जीवों की गणना करते हैं, अतः* ***काल*** *हैं। हृदय आकाश के मध्य में स्थित रहने वाले अत्यंत श्रेष्ठ परमेश्वर* ***परमेष्ठी*** *हैं।*

गृहीत भक्तों की अर्चन, परिग्रह स्वीकारें सब अर्पन ।
भयभीत असुर देख उग्र, पालक नियम प्रभु समग्र ।।(१६०)

भावार्थ: *भक्तों की सब अर्चन अर्पण स्वीकार करने वाले भगवान्* ***परिग्रह*** *हैं। जिनके नाम स्मरण से भयभीत होकर असुर श्रष्टि के नियमों का पालन करते हैं उन प्रभु का नाम* ***उग्र*** *हैं।*

करें निवास संवत्सर आत्मा, दक्ष करें सब कार्य उत्तमा ।
हैं साधन भवसागर तारन, विश्राम हरि शान्ति कारन ।।(१६१)

भावार्थ: *सब जीवों की आत्मा में जो वास करते हैं, वह* ***संवत्सर*** *हैं।* ***दक्ष*** *नाम से प्रभु सब उत्तम कार्यों को करते हैं। भवसागर तरना जिनका लक्ष्य है, ऐसी आत्माओं को* ***विश्राम*** *प्रभु शांति प्रदान करते हैं।*

सब कार्य करें समर्थ भगवान, दें विश्वदक्षिण सबको निर्वान ।
करें समाहित सत भूजन में, हैं विस्तार विख्यात भू भाग में ।।(१६२)

भावार्थ: ***विश्वदक्षिण*** *भगवान् सर्व कार्य में समर्थ हैं और उनके स्मरण से मोक्ष की प्राप्ति होती है। सांसारिक जीवों में सत्य समाहित करने वाले प्रभु* ***विस्तार*** *है, ऐसा सभी वर्णित करते हैं।*

हैं अचल स्थिर गुणमय स्वामी, हैं संत स्थावर अधिगामी ।
हें स्थित सदा सकल अवस्था, स्थाणु प्रभु संत की आस्था ।।(१६३)

भावार्थ: *अचल स्थिर और गुणमय प्रभु* ***स्थावर*** *की प्राप्ति संतों का लक्ष्य होता है। सदैव स्थिर सगुन अवस्था में रहने वाले प्रभु* ***स्थाणु*** *संतों की आस्था हैं।*

हैं हरि समस्त ज्ञान शिक्षक, प्रमाण प्रभु प्रतीति प्रवक्तक ।
कारण बिन कृपा कर्ता, बीजमव्ययम सम गीत मधुरता ।।(१६४)

भावार्थ: *समस्त ज्ञान के शिक्षक प्रभु प्रसन्नता के प्रवक्ता हैं (अतः प्रसन्नता फैलते हैं), अतः* ***प्रमाण*** *हैं। बिना कारण ही अत्यंत कृपा करने वाले भगवान् का* ***बीजमव्ययम*** *नाम संगीत की तरह लयमय है।*

पूजित विश्व सुखस्वरूपा, अर्चित अर्पित अर्थ सुरूपा ।
निःस्वार्थ हरि प्रेम मूर्ति, हैं अनर्थ प्रभु शान्ति मूर्ति ।।(१६५)

भावार्थ: *सुख के स्वरुप* ***अर्थ*** *भगवान् की विश्व अर्चना सहित पूजन करता है। निस्वार्थ ही प्रेम बरसाने वाले प्रभु* ***अनर्थ*** *कृपा और शान्ति के अवतार हैं।*

हैं महाकोश प्रभु अन्नदाता, महाभोग हरि आनंददाता ।
हैं हरि स्वामी समस्त सम्पदा, पूजें महाधन जन सर्वदा ।।(१६६)

भावार्थ: *अन्नदाता प्रभु* ***महाकोश*** *हैं। आनंद को प्रदान करने वाले भगवान्* ***महाभोग*** *हैं। सर्व पूजित* ***महाधन*** *हरि श्री (सम्पदा) के स्वामी हैं।*

द्वेषहीन अनिर्वेद भगवंता, अनिर्विण्ड़ तब नाम नियन्ता ।
अनल सिर रवि चंद्र हैं नेत्रा, स्थविष्ठ हरि वैराज चरित्रा ।।(१६७)

भावार्थ: *भगवान् द्वेषहीन एवं सकारात्मक हैं, अतः उन्हें* ***अनिर्विण्ड*** *नाम से जाना जाता है। संतगण विराट रूप (वैराज रूप) प्रभु* ***स्थविष्ठ*** *के आशीर्वाद की कामना करते हैं। (श्रुति कहती है कि प्रभु विराट हैं क्योंकि अग्नि उनका शिर है तथा सूर्य और चन्द्रमा नेत्र हैं)।*

अभु हैं अजर अमर अजन्मा, धर्मयूप हरि धर्म स्तम्भना ।
स्वीकारें यज्ञ हवि भगवान्, महामख हरि दें जीव निर्वान ।।(१६८)

भावार्थ: *अजर अमर और अजन्मा प्रभु* ***अभु*** *हैं। हरि का अवतार धर्म स्तम्भ की स्थापना के लिए ही हुआ है, अतः* ***धर्मयूप*** *हैं। प्रभु यज्ञ की हवि स्वीकार करते हैं।* ***महामख*** *प्रभु निर्वाण प्राप्त कराते हैं।*

नक्षत्रनेमि हरि तारक द्रष्टा, नक्षत्री की चंद्र सम प्रतिष्ठा ।
क्षमारूप हरि राम समाना, क्षम् समर्थ लक्ष्य पहुंचाना ।।(१६९)

भावार्थ: *प्रभु खगोलशास्त्र ज्ञाता हैं, अतः* ***नक्षत्रनेमि*** *हैं। चंद्र के सामान प्रतिष्ठा वाले भगवान्* ***नक्षत्री*** *हैं। श्री राम के समान क्षमाशील प्रभु जो जनों को लक्ष्य तक पहुंचाते हैं (मोक्ष दिलाते हैं), उन प्रभु का नाम* ***क्षम*** *है।*

हो विकारहीन जब कर ध्याना, क्षाम आत्मभाव संज्ञाना ।
संसृति सृजन होइ हरि चेष्टा, समीहन हैं सतपथ के द्रष्टा ।।(१७०)

भावार्थ: *आत्मभाव में संज्ञानित* ***क्षाम*** *प्रभु के ध्यान से समस्त विकारों का नाश होता है। जिनके प्रयास से सृष्टि की सृजना होती है एवं जो सत्य मार्ग दिखाने वाले हैं, उन भगवान् को* ***समीहन*** *कह कर पुकारा गया है।*

यज्ञ हरि स्वयं यज्ञस्वरूपा, हैं पूज्यनीय इज्य सतरूपा ।
मिले मोक्ष जब हरि पूजा, महेज्य सम है ना कोई दूजा ।।(१७१)

भावार्थ: *हरि सर्व यज्ञस्वरुप हैं, अतः* ***यज्ञ*** *हैं। सत्यरूप अति पूज्य प्रभु* ***इज्य*** *हैं। जिनके समान कोई दूसरा नहीं एवं जिनके पूजन से मोक्ष प्राप्ति होती है, ऐसे प्रभु* ***महेज्य*** *हैं।*

प्रभु सुमर हों पूर्ण अभिलाषा, क्रतु सत संतन की आशा ।
धर्मरक्षक प्रभु हैं सतरूपा, दें ज्ञान हरि सत्र विधिरूपा ।।(१७२)

भावार्थ: *सभी सत्यकर्मी और संतों की आशा, प्रभु* ***क्रतु*** *के स्मरण से समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं। सत्यरूप, धर्मरक्षक, न्यायदाता* ***सत्र*** *भगवान् ज्ञान का वितरण करते हैं (ज्ञान की शिक्षा देते हैं)।*

संत जब जाएं शरण नियंता, हरें संतागति सब चिंता ।
व्यापक सर्वदर्शी परमात्मा, मुक्त प्रभु हैं विमुक्तात्मा ।।(१७३)

भावार्थ: *जब संत प्रभु के शरणागत हो जाते हैं तो* ***संतागति*** *उनकी सभी चिंताओं का नाश करते हैं। सर्व व्यापी प्रभु* ***सर्वदर्शी*** *हैं। स्वभाव से ही जिनकी आत्मा सदैव मुक्त है, वह* ***विमुक्तात्मा*** *हैं।*

हैं सर्वज्ञ सर्व ज्ञानस्वरूप, हैं हरि ज्ञानमुत्तमम गुरु-रूप ।
दें अभयदान शरण जो आवा, व्रत सुव्रत नियंत कहावा ।।(१७४)

भावार्थ: *सर्व ज्ञानी प्रभु* ***सर्वज्ञ*** *हैं। गुरु रूप ज्ञान देने वाले भगवान्* ***ज्ञानमुत्तमम*** *हैं। शरण में आने वाले को अभयदान देना भगवान* ***सुव्रत*** *का व्रत है (प्रतिज्ञा है)।*

सुन्दर मुख नयन विशाला, सुमुख कंठ में शोभित माला ।
सर्वव्यापी हरि सूक्ष्म सरीरा, सुघोष नाद सम वेग समीरा ।।(१७५)

भावार्थ: *विशाल नेत्र और सुन्दर मुख वाले प्रभु* ***सुमुख*** *के कंठ में माला (वैजयंती) शोभायमान है। सर्व-व्यापी भगवान् अत्यंत* ***सूक्ष्म*** *शरीर धारण करने में सक्षम हैं। तीव्र वायु के समान गंभीर घोष करने वाले भगवान्* ***सुघोष*** *हैं।*

सुमर सुखद हो सुख सदा, सुहृत उदारी हरें आपदा ।
मन मोहक सुन्दर स्वरूपा, मनोहर हरि ऐश्वर्यरूपा ।।(१७६)

भावार्थ: सुखद *प्रभु के स्मरण से सदैव सुखता का अनुभव होता है। उदार हृदय वाले* ***सुहृत*** *आपदाओं का हरण करते हैं। मन को मोहित करने वाले सुन्दर और ऐश्वर्य स्वरुप के स्वामी प्रभु* ***मनोहर*** *हैं।*

जितक्रोध प्रभु जीतो क्रोधा, वधे वीरबाहु असुर योद्धा ।
करें विदीर्ण अधर्मी असुरा, उच्चारें विदारण जन धरा ।।(१७७)

भावार्थ: *क्रोध को जीतने वाले प्रभु* ***जितक्रोध*** *हैं। असुर योद्धाओं को मारने वाले भगवान्* ***वीरबाहु*** *हैं। अधर्मी असुरों को विदीर्ण (निहत) करने वाले प्रभु को विश्व* ***विदारण*** *कह कर सम्बोधित करता है।*

सुमर नाम न व्यापे माया, हो स्वापन भज पावन काया ।
तुम्हीं ईश दीन सब जाना, हैं स्ववश स्वतंत्र भगवाना ।।(१७८)

भावार्थ: *जिनके नाम स्मरण से माया नहीं व्याप्ती एवं तन पवित्र हो जाता है, वह भगवान्* ***स्वापन*** *हैं। सब दुखी दीनों के ईश्वर एवं संसार चलाने वाले प्रभु जो स्वभाव से स्वतंत्र हैं, वह* ***स्ववश*** *हैं।*

हैं सर्वगत व्यापी परमात्मा, असीमित आकार नैकात्मा ।
नैककर्मक्रत सब कर्मकर्ता, हैं जनन पालन संहारकर्ता ।।(१७९)

भावार्थ: *प्रभु की आत्मा सर्वगत है, अतः वह* ***व्यापी*** *हैं। भगवान् के आकार को मापा नहीं जा सकता, इसलिए* ***नैकात्मा*** *हैं। सृष्टि के समस्त कार्य - जनन, पालन एवं संहार,* ***नैककर्मक्रत*** *प्रभु द्वारा ही संचालित होते हैं।*

ब्रह्माण्ड बसत हरि के उदर, मारें असुर वत्सर समर ।
हैं वत्सल नियंत संतप्रेमी, हैं जगपालक वत्सी सतनेमी ।।(१८०)

भावार्थ: *जो रण में दैत्यों का संहार करते हैं तथा जिनके उदर में ब्रह्माण्ड बसता है, वह प्रभु* ***वत्सर*** *हैं। संत प्रेमी भगवान्* ***वत्सल*** *हैं। जग का पोषण करने वाला सत्यनाम* ***वत्सी*** *है।*

हैं रत्नगर्भ सम सागर रत्न, हैं धनेश्वरा हरि धन सम्पन्न ।
जन्मे हरि धर्म स्थापना, लें जन्म धर्मगुप धर्म रक्षना ।।(१८१)

भावार्थ: *प्रभु ही रत्नों से भरे सागर* ***रत्नगर्भ*** *हैं। धन धान्य के स्वामी भगवान्* ***धनेश्वरा*** *हैं। धर्म के स्थापन एवं रक्षा के लिए जो अवतरित हुए प्रभु* ***धर्मगुप*** *हैं।*

धर्म अधर्म रहित भगवाना, जन्मे धर्मकृत संत रक्षना ।
करें धर्म धारण हरि धर्मी, सत ब्रह्म असत मति भ्रमी ।।(१८२)

भावार्थ: *धर्म एवं अधर्म से रहित भगवान्* ***धर्मकृत*** *संतों की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं। धर्म की धुरी धारण करने वाले* ***धर्मी*** *हैं।* ***सत*** *ब्रह्म हैं। प्रभु के प्रपंच रूप को* ***असत*** *नाम से सम्बोधित किया गया है।*

अक्षर हैं अविनासी कूटस्थ, हैं क्षर नर सुर सतास्थ ।
लुप्त जीव भोग वासना, हैं अविज्ञाता रहित कामना ।।(१८३)

भावार्थ: *प्रभु अविनासी और कूटस्थ हैं, अतः* ***अक्षर*** *हैं।* ***क्षर*** *जीवरूप सतजनों की आस्था हैं। जीव भोग वासना में लिप्त रहते हैं, प्रभु इस से अलिप्त (कामना रहित) हैं, अतः* ***अविज्ञाता*** *हैं।*

हरि तेज सम सूर्य किरण, सहस्त्रांशु हरि अति ऊष्ण ।
तुम्हीं आत्मीय ज्ञान चेता, तुम्हीं विधाता विश्व रचेता ।।(१८४)

भावार्थ: ***सहस्त्रांशु*** *प्रभु का तेज सूर्य के समान प्रकाशित एवं अत्यंत ऊष्ण है। इस विश्व के जन्मदाता एवं आत्मिक ज्ञान को चेतन करने वाले प्रभु* ***विधाता*** *हैं।*

रचे शास्त्र वत्स स्वरूपणा, प्रभु नित्यसिद्ध कृतलक्षणा ।
प्रतिभा सम सूर्य मंडल, गभस्तिनेमि से जगमग अंचल ।।(१८५)

भावार्थ: *शास्त्रों के रचयिता एवं वत्स स्वरुप नित्यसिद्ध प्रभु* ***कृतलक्षणा*** *हैं। सूर्य मंडल समान प्रतिभा वाले भगवान्* ***गभस्तिनेमि*** *इस मंडल को प्रकाशित करते हैं।*

हैं सत्तवस्थ के सदगुन अंगा, सिंह बली पावन सुमंगा ।
तुम्हीं सुर असुरों के ईशा, हैं भूतमहेश्वर परम संतीशा ।।(१८६)

भावार्थ: *प्रभु **सत्तवस्थ** के प्रत्येक अंग सद्गुण के चिन्ह हैं। **सिंह** समर्थ, पवित्र तथा मंगल रूप हैं (सुमंगा नदी समान पवित्रता और मंगलता प्रदान करने वाले हैं)। **भूतमहेश्वर** सभी सुर, असुर, नर एवं समस्त संतों के ईश्वर हैं।*

पुरातन देव पूजे संसारा, आदिदेव लो नमन हमारा ।
उत्कृष्ट प्रभु तुम महादेव, देवेश हैं नियंत्रक सभी देव ।।(१८७)

भावार्थ: *जगत पूज्य पुरातन प्रभु **आदिदेव** हमारा नमन स्वीकार करें। उच्च कोटि के देव होने के कारण, प्रभु **महादेव** हैं। सभी देवताओं को नियंत्रित करने वाले भगवान् **देवेश** हैं।*

सुर पालक शासक नियंता, हैं देवभ्रदगुरु देव अनंता ।
भव बंधन रहित भगवाना, उत्तर सर्वश्रेष्ठ जग जाना ।।(१८८)

भावार्थ: *देवताओं के पालक, ईश और उनको नियन्त्र में रखने वाले प्रभु **देवभ्रदगुरु** हैं। भाव बंधनों से मुक्त सर्वश्रेष्ठ प्रभु **उत्तर** हैं।*

गोविन्द गौ भू पालन कर्ता, हैं गोपति गोपवेश हरिधर्ता ।
रक्षक जगत नाम है गोप्ता, ज्ञानगम्य ग्रंथन के वक्ता ।।(१८९)

भावार्थ: *गौ माँ और पृथ्वी के पालनकर्ता प्रभु **गोविन्द** हैं। गोप वेश धारण करने के कारण हरि को **गोपति** कहा गया है। जगत की रक्षा करने वाले हरि **गोप्ता** हैं। समस्त ग्रंथों का ज्ञान देने वाले भगवान् **ज्ञानगम्य** हैं।*

प्रथम पुरुष नाम पुरातन, शरीरभूतभ्रद करें तन पोषन ।
विश्व पालक तुम हो भोक्ता, कपीन्द्र कपि वराह देवता ।।(१९०)

भावार्थ: *प्रथम पुरुष होने के कारण जिनकी आयु कोई नहीं जानता, उन प्रभु को **पुरातन** नाम से सम्बोद्धित किया गया है। जीवों के शरीर का पोषण करने वाले भगवान्*

शरीरभूतभृद *हैं। विश्व का पालन करने वाले हरि* ***भोक्ता*** *हैं। कपि, वराह आदि देवों के स्वामी* ***कपीन्द्र*** *हैं।*

सत पावन यज्ञ हवि दक्षिना, स्वीकारें भूरिदक्षिण अर्चना ।
देव रूप में पीवत सोमा, सोमप दें फल यज के कर्मा ।। (१९१)

भावार्थ: *सत्य एवं पवित्र यज्ञ हवि को दक्षिणा के रूप में प्रभु* ***भूरिदक्षिण*** *स्वीकार करते हैं। पूज्यनीय श्रेष्ठ* ***सोमप*** *भगवान् देवरूप से सोमपान करते हैं और यजमानों की कामनाओं को पूर्ण करते हैं।*

मंथन समुद्र में हरो अमृत, दीन्हों देव सुधा तब अमृतप ।
पूजत महादेव सब शैव्या, हैं सोम उमा सहित पूज्या ।।(१९२)

भावार्थ: *समुन्द्र मंथन के समय अमृत हरण कर* ***अमृतप*** *भगवान् ने देवों को अमृत पिलाकर उन्हें अमर बनाया। पार्वती सहित स्थित पूज्य* ***सोम*** *भगवान् की सभी महादेव के रूप में पूजा करते हैं (महादेव और सोम एक ही रूप हैं)।*

विजय अनेक रण तुम पाई, हैं पुरुजित सत्य सुखदाई ।
विश्वरूप हो पुरु कहावा, सत्तम सतमत प्रेम समावा ।।(१९३)

भावार्थ: *अनेक युद्धों में प्रभु ने विजय विभूति प्राप्त की अतः विश्व में वह सत्य एवं सुखदायी* ***पुरुजित*** *नाम से प्रसिद्द हुए। विश्वरूप होने से उन्हें* ***पुरु*** *नाम से पुकारा गया। सत्य बुद्धि एवं प्रेम जिनमें समाया हुया है, वह भगवान्* ***सत्तम*** *है।*

दें दंड विनय प्रभु दुष्टा, जीतें हरि जय रिपु लघु चेष्टा ।
तुम सत्य संकल्प सत्यसन्धा, जन्मे दाशार्हा सूर्यसंधा ।।(१९४)

भावार्थ: *दुष्टों को दण्डित करने वाले प्रभु* ***विनय*** *हैं। शत्रुओं को अल्प प्रयास से ही जो जीत लेते हैं अतः वह* ***जय*** *हैं। सत्य संकल्प प्रभु* ***सत्यसन्धा*** *हैं। सूर्यवंश में जन्म लेने से* ***दाशार्हा*** *हैं (भगवान् श्री राम सूर्य-वंश में अवतरित हुए थे)।*

शिव सात्वत तंत्र रचेता, सात्वतामपति जग अभिलेखिता ।
तत्व अधिष्ठा जीव नियंता, विनयितासाक्षी तुम हो विनीता ।।(१९५)

भावार्थ: *शिव सात्वत (शिव तंत्र) के रचियता को* ***सात्वतामपति*** *कहकर सम्बोद्धित किया जाता है। तत्व नियंत्रित करने वाले बुद्धिमान भगवान्* ***जीव*** *हैं। विनियिता के साक्षी (विनयशील) प्रभु* ***विनयितासाक्षी*** *हैं।*

मुक्तिदाता मुकुंद हरि नामा, अमितविक्रम महा बलवाना ।
सुर असुर नर भूतन वासा, करें अम्भोनिधि सिंधु निवासा ।।(१९६)

भावार्थ: *मुक्ति देने वाले प्रभु* ***मुकुंद*** *हैं। महाबलशाली भगवान्* ***अमितविक्रम*** *हैं। सभी चार अम्भों (देवता, दैत्य, मनुष्य एवं पितर) में वास करने वाले हरि जिनका निवास स्थान समुद्र है, वह* ***अम्भोनिधि*** *हैं।*

अनन्तात्मा ज्ञान भंडारा, करें महोदधिशय शयन सागरा ।
तुम्हीं शिव संहार देवता, हरि अन्तक जग समापनकर्ता ।।(१९७)

भावार्थ: *प्रभु ज्ञान तत्व के भण्डार हैं, अतः* ***अनन्तात्मा*** *हैं। सागर में शयन करने वाले भगवान्* ***महोदधिशय*** *हैं। सृष्टि का संहार करते समय शिव रूप धारण करने वाले हरि* ***अन्तक*** *हैं।*

अजर अमर अज महामना, महार्हः तुम पूज्य निपुणना ।
नित्यसिद्धि है हरि स्वभावया, जितामित्र जीते सब दैत्या ।।(१९८)

भावार्थ: *अजर अमर एवं आदिजनमा प्रभु को* ***अज*** *नाम से पुकारा गया है। पूजा के योग्य (निपुण) होने के कारण उन्हें* ***महार्हः*** *कहा गया है। नित्यसिद्धि होने के कारण हरि को* ***स्वभावया*** *कहा गया है। सभी दैत्यों को जीतने के कारण (जित अमित्र) वह* ***जितामित्र*** *हैं।*

प्रमोदन करें आनंदित सन्ता, आनंद स्वरुप हो भगवंता ।
नंदन सुमर हिय हर्षाता, हैं नन्द रिद्धि सिद्धि के दाता ।।(१९९)

भावार्थ: *संतों को आनंदित करने वाले प्रभु* ***प्रमोदन*** *हैं। भगवान्* ***आनंद*** *स्वरुप हैं। जिनके नाम को हृदय में स्मरण करने से प्रसन्नता मिलती है, वह प्रभु* ***नंदन*** *हैं। रिद्धि सिद्धि देने वाले भगवान्* ***नन्द*** *हैं।*

सतगुण वासी हरि सत्यधर्म, है स्थित त्रिलोक त्रिविक्रम ।
कपिल सम ज्ञानी सब वेदा, महर्षि कपिलाचार्य घोषिदा ।।(२००)

भावार्थ: *सतगुण में वास करने वाले प्रभु* ***सत्यधर्म*** *हैं। तीनों लोकों में जो स्थित हैं (अर्थात सर्वव्यापी हैं) वह भगवान्* ***त्रिविक्रम*** *हैं। कपिल मुनी के समान सब वेदों के ज्ञानी भगवान् को वेद महिर्षि* ***कपिलाचार्य*** *के नाम से सम्बोधित करता है।*

रहें कृतरत नित्य परमात्मा, कृतज्ञ हैं कार्यरती जीवात्मा ।
मेदनीपति भूपति हरि दिव्या, नापे त्रिपद तीन पद विश्वा ।।(२०१)

भावार्थ: *प्रभु सदैव कर्मों में रत रहते हैं, अतः ऐसे कार्यरती जीवात्मा को* ***कृतज्ञ*** *नाम से सम्बोद्धित किया गया है। दिव्य प्रभु पृथ्वी के स्वामी हैं, इसलिए* ***मेदनीपति*** *हैं। पूरे ब्रह्माण्ड को जिन्होंने (वामन रूप) में तीन पग से नाप लिया, ऐसे भगवान्* ***त्रिपद*** *हैं।*

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति दशा, त्रिदशाध्यक्ष उन्मूलित इशा ।
मत्स्य रूप सिंधु अवतारा, करें महाश्रग तांडव जलधारा ।।(२०२)

भावार्थ: *तीनों दशाओं (जाग्रत, स्वप्न अथवा सुषुप्ति) में जो अंधकार को दूर करते हैं, वह प्रभु* ***त्रिदशाध्यक्ष*** *हैं। भगवान् ने मत्स्य रूप में सागर में जलधारा के मध्य तांडव किया था, इसलिए* ***महाश्रग*** *हैं।*

मरणेष करत संहार प्रलय, कृतान्तकृत हरि भू-पूज्य ।
लियो जन्म रूप वराह, तारो हिरण्डयक्ष महाविराह ।।(२०३)

भावार्थ: *प्रलय काल में* ***मरणेष*** *प्राणी को मृत्यु प्रदान करते हैं। समस्त पृथ्वी के पूज्य हरि* ***कृतान्तकृत*** *हैं। हिरण्डयक्ष को तारने के लिए वराह रूप में अवतरित भगवान्* ***महाविराह*** *हैं।*

हैं गोरक्षक ब्रजवासी गोविंद, सुषेण सत सैन्यपति विन्द ।
दिव्य स्वर्ण भुजबंध धारी, हैं कनकांगदी कृष्ण मुरारी ।।(२०४)

भावार्थ: *गौ माँ के रक्षक ब्रजवासी प्रभु* ***गोविन्द*** *हैं। लक्ष्य प्राप्त करने वाली सत्य रूपी सेना के स्वामी* ***सुषेण*** *हैं। जिनके दिव्य स्वर्ण के भुजबंध है, उन कृष्ण मुरारी के स्वरुप को* ***कनकांगदी*** *नाम से सम्बोधित किया गया है।*

गुह्य गुप्त ग्रंथों के ज्ञानी, गभीर परम धीर जग जानी ।
गहन कठिन हिय प्रविष्टा, हैं गुप्त प्रभु अप्रत्यक्ष अद्रष्टा ।।(२०५)

भावार्थ: *गुप्त ग्रंथों (गोपनीय उपनिषद आदि) के ज्ञाता हरि* ***गुह्य*** *हैं। परम शांत स्वभाव वाले भगवान् को जग* ***गभीर*** *नाम से जानता है। ह्रदय में कठिनता से प्रवेश करते हैं (भगवत प्राप्ति के लिए साधना की आवश्यकता है), अतः प्रभु* ***गहन*** *हैं। पूर्व जन्मों के कर्म फल देने वाले आप अप्रत्यक्ष स्वरुप* ***गुप्त*** *हैं।*

शोभित चक्र गदा शरीरा, चक्रगदाधर बली और धीरा ।
वेधा रचित विधि सम सुमंगा, स्वांग करें कर्म स्व-अंगा ।।(२०६)

भावार्थ: *शरीर पर चक्र और गदा से शोभायमान, शांत स्वभाव वाले परन्तु बलशाली प्रभु* ***चक्रगदाधर*** *हैं। प्रकृति के नियमों के रचयिता, मंगल करने वाले (सुमंगा नदी के समान पावन और मंगलकारी) भगवान्* ***वेधा*** *हैं। सदैव कर्मरत प्रभु* ***स्वांग*** *हैं (कार्य करने में अपने ही अंगों का प्रयोग करते हैं अतः किसी पर आभारी नहीं हैं)।*

अजित अजेय हरि त्रिलोका, कृष्ण नियंता भू सुर लोका ।
सत्य शील बल धीर चरित्रा, हैं दृढ हरि धर्म सत सूत्रा ।।(२०७)

भावार्थ: *तीनों लोकों में जिन्हे जीता न जा सके, वह प्रभु* ***अजित*** *हैं। पृथ्वी, सुरलोक आदि के जो शासक हैं, वह प्रभु* ***कृष्ण*** *हैं। जो सदैव सत्य एवं धर्म सूत्र में बंधे हैं एवं सत्य, शील, बल और धीरता जिनके चरित्र हैं, उन प्रभु को* ***दृढ*** *नाम से जाना जाता है ।*

प्रलय काल हर लेवें वेदन, संकर्षण हरि दिव्य भगवन ।
बिन प्रयास करें सब कृत्य, अच्युत तजें धर्म न सत्य ।।(२०८)

भावार्थ: *प्रलय काल में हर व्यथा को जो हर लेते हैं (ताकि मरण आसान हो जाए), ऐसे आकर्षित दिव्य प्रभु को* ***संकर्षण*** *कहा गया है। बिना परिश्रम के ही जो सब कार्य करने में सक्षम हैं, तथा कभी सत्य और धर्म का त्याग नहीं करते, ऐसे प्रभु को* ***अच्युत*** *नाम से सम्बोद्धित किया गया है।*

शीतल सम संध्य किरण, करें वरुण यज्ञ हवि ग्रहण ।
वारुण गुरु वशिष्ठ रूपा, वृक्ष सम स्वर्ग स्थित रूखा ।।(२०९)

भावार्थ: *सांय कालीन (सूर्य की) किरणों के सामान शीतलता धारण किये हुए यज्ञ हवि को स्वीकारने वाले प्रभु* ***वरुण*** *हैं। गुरु वशिष्ठ के समान (ज्ञानी)* ***वारुण*** *हैं। स्वर्ग में स्थित कल्पवृक्ष के समान भगवान्* ***वृक्ष*** *हैं।*

विराजित पद्म-हिय सब सिद्ध, पुष्कराक्ष प्रभु हैं आरद्ध ।
सृजन भरन समापन कर्म, हैं संभव मात्र मनन महामन ।।(२१०)

भावार्थ: *सिद्ध पुरुषों के कमल रूपी हृदय में वास करने वाले उनसे आराधित प्रभु* ***पुष्कराक्ष*** *हैं। जिनके मनन मात्र से सृष्टि का सृजन, पोषण एवं अंत कर्म संभव होते हैं, ऐसे भगवान् को* ***महामना*** *नाम से पुकारा गया है।*

छै भग धारी श्री यश ज्ञाना, ऐश्वर्य धर्म इनके हैं नामा ।
भगगुनधारी हैं भगवान, हरें भगहा भग जग अवसान ।।(२११)

भावार्थ: *जो भगगुनधारी हैं, छयों भग (ऐश्वर्य, धर्म, श्री, यश, ज्ञान और वैराग्य) जिनमे समाहित हैं, वह* ***भगवान्*** *हैं। प्रलय काल में जो भगों का हरण करते हैं वह प्रभु* ***भगहा*** *हैं।*

हैं आनंदी हरि आनंद स्थित, वनमाली के कंठ वैजयंत ।
हलायुध हल अस्त्र धार्या, जन्मे अदिति वामन आदित्या ।।(२१२)

भावार्थ: *आनंद में स्थित रहने वाले भगवान्* ***आनंदी*** *हैं। कंठ में जिनके वैजयंती माला सुशोभित है, वह* ***वनमाली*** *हैं। हल को जो अश्त्र रूप में धारण किये हैं, वह प्रभु* ***हलायुध***

*हैं। कश्यप महर्षि जी के द्वारा माँ अदिति के (गर्भ से) जन्मे वामन प्रभु को **आदित्य** नाम से जाना जाता है।*

ओज सम रवि ज्योतिरादित्य, सहें शीत गर्म सहिष्णु दिव्य ।
परम गति वेग संचालिता, हरि गतिसत्तम गति असीमिता ।।(२१३)

भावार्थ: *सूर्य के सामान तेज वाले प्रभु **ज्योतिरादित्य** हैं। शीत एवं उश्णता को जो समान रूप से सहते हैं, वह दिव्य भगवान् **सहिष्णु** हैं। परम गति से चलने वाले जिनकी गति को नापा नहीं जा सकता, ऐसे प्रभु **गतिसत्तम** हैं।*

हैं शार्ङ्ग धनुष धारी सुधन्वा, वधें खंडपरसु रिपु परसुवा ।
दारुण हरि कठोर रिपु-संता, दें द्रविणप्रद दान धन संता ।।(२१४)

भावार्थ: *शार्ङ्ग धनुष को धारण करने वाले भगवान् **सुधन्वा** हैं। परसु से जो (शत्रुओं को) खंडित करते हैं, वह **खंडपरसु** हैं। संतों के शत्रुओं के लिए जो कठोर हैं, वह प्रभु **दारुण** हैं। संतों को श्री (धन) दान देने वाले हरि **द्रविणप्रद** हैं।*

करें दिवस्प्रका बैकुण्ठवास, हैं सर्वदृगव्यास रूप व्यास ।
वाक्पति वाचस्पति नामा, अयोनिज स्व-संकल्प जन्मा ।।(२१५)

भावार्थ: *वैकुण्ठ में वास करने वाले प्रभु **दिवस्प्रका** हैं। भगवान् वेद व्यास के समान सम्पूर्ण ज्ञान जिनमे समाहित है, वह **सर्वदृगव्यास** है। वाणी के स्वामी को प्रभु **वाचस्पति** नाम से जाना जाता है। स्वसंकल्प से अवतरित होने वाले हरि **अयोनिज** हैं।*

देवव्रत नामक तीन हैं सामा, करति स्तुति संत त्रिसामा ।
सामग साम वेद के ज्ञाता, हैं निर्वाण प्रभु मोक्ष के दाता ।।(२१६)

भावार्थ: *देवव्रत नाम के तीनों सामाओं (उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित) से संतों द्वारा स्तुति किये जाते हैं, अतः **त्रिसामा** हैं। **साम** वेद के ज्ञाता हैं एवं इसका गान करते हैं, इसलिए **सामग** हैं। प्रभु मोक्षदाता हैं, इसलिए **निर्वाण** हैं।*

तुम औषध प्रभु करो निरोगा, भेषज हरि हरहिं सब रोगा ।
हरि भिषक भव सागर तारत, गुरु योगी हरि सन्यासकृत ।।(२१७)

भावार्थ: *प्रभु स्वयं ही निरोग करने वाली ओषिधि हैं, अतः* ***भेषज*** *नाम जपने से सभी रोगों का विनाश होता है। भवसागर को पार करने वाले भगवान्* ***भिषक*** *हैं। योगी अथवा सन्यासियों के गुरु हैं अतः* ***सन्यासकृत*** *हैं।*

शम गुरु शांत अविषय, समाहें जीव निष्ठा जब प्रलय ।
दें प्रकाश करें दूर तम, नाशें अज्ञान शांति शुभम ।। (२१८)

भावार्थ: *प्रभु गुरु हैं, अतः* ***शम*** *हैं। विषय सुखों से अनाशक्त होने के कारण* ***शांत*** *हैं। प्रलय काल में जिनमे सभी समाहित हो जाते हैं, वह* ***निष्ठा*** *हैं। अंधकार को दूर कर प्रकाश की स्थापना करने वाले एवं अज्ञान समाप्त करने वाले प्रभु* ***शांति*** *हैं।*

दें परायण उत्कृष्ट अयना, हैं अंग शुभांग मोहना ।
दें शांति शांतिद इष्टा, हेतु सृजन जग जन्मे स्रष्टा ।।(२१९)

भावार्थ: *श्रेष्ठ पद (अयन) देने वाले प्रभु* ***परायण*** *हैं। जिनके अंग मोहित करने वाले हैं तथा मंगलकारी हैं, वह प्रभु* ***शुभांग*** *हैं। शांति देने वाले इष्ट* ***शांतिद*** *हैं। सृष्टि का सृजन करने वाले प्रभु* ***स्रष्टा*** *हैं।*

अवतरे हरि कुमुद भूलोक्य, करें शयन सिंधु कुवलेश्य ।
हितीय गौ गोहित नियंता, गोपति भूपति जन रक्षिता ।।(२२०)

भावार्थ: ***कु*** *अर्थात पृथ्वी पर अवतरित हुए, इसलिए प्रभु को* ***कुमुद*** *कह कर सम्बोधित किया गया। सागर में शयन करते हैं, इस कारण भगवान्* ***कुवलेशय*** *हैं। गौ माँ के हितीय प्रभु* ***गोहित*** *हैं। गो (भूमि) के पति होने से जन रक्षक प्रभु* ***गोपति*** *नाम से पुकारे जाते हैं।*

अदृश्य स्वरूप प्रभु गोप्ता, देखें वृषभाक्ष हरि धर्मता ।
वृषप्रिय धारें सदैव धर्मा, अनिवर्ती की अरुचि अधर्मा ।।(२२१)

भावार्थ: *जिनका रूप अदृश्य रहता है (वह केवल भक्तों को साधना द्वारा ही दृश्य होते हैं), वह भगवान् **गोप्ता** हैं। भगवान् के नेत्र केवल धर्म (वर्ष) ही देखते हैं, अतः वह **वृषभाक्ष** हैं। सदैव धर्म को धारण करने वाले प्रभु **वृषप्रिय** हैं। अधर्म में जिन्हे कोई रूचि नहीं है, वह हरि **अनिवर्ती** हैं।*

विषयहीन भगवन्त आत्मा, जपत नाम सुख दें निवृत्तात्मा ।
करें विश्व सूक्ष्म जब प्रलय, दें मोक्ष हरि संक्षेप्ता भक्त प्रिय ।।(२२२)

भावार्थ: *विषयहीन भगवान् **निवृत्तात्मा** के स्मरण से सुख की प्राप्ति होती है। प्रलय काल में विश्व को सूक्ष्म बनाकर **संक्षेप्ता** प्रभु अपने प्रियों को मुक्ति देते हैं।*

करें रक्षा क्षेमकृत संत पदार्थ, पावन तन जब शिव सार्थ ।
श्रीवत्स चिन्ह वक्ष स्थित, हरि श्रीवत्सवक्ष पूज्य नियंत ।।(२२३)

भावार्थ: *भक्तों की वस्तुओं के रक्षक प्रभु **क्षेमकृत** हैं। **शिव** भगवान् को उद्देश्य बनाना शरीर को पवित्र कर देता है (अतः शिव को भजने से तन पवित्र होता है)। दिव्य प्रभु के वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह स्थित है, अतः वह **श्रीवत्सवक्ष** हैं।*

लक्ष्मी बसत हिय हरि मध्या, हैं श्रीवास भूजन आराध्या ।
लक्ष्मीपति श्रीपति हैं रघुवर, अति उत्तम प्रभु श्रीमंतावर ।।(२२४)

भावार्थ: *सबके आराध्य **श्रीवास** प्रभु के हृदय के मध्य में लक्ष्मी माँ का वास है। श्री (लक्ष्मी माँ) के स्वामी प्रभु **श्रीपति** हैं। श्रेष्ठ प्रभु **श्रीमंतावर** हैं।*

दें धन धान्य प्रभु श्रीदा, पूजित भूजन हरि श्रीसा सदा ।
हिय निवासित संत सिद्ध, श्रीनिवास ईश सभी ऋद्ध ।।(२२५)

भावार्थ: *धन धान्य देने वाले प्रभु **श्रीदा** हैं। सर्व पूजित श्री (लक्ष्मी माँ) के स्वामी **श्रीसा** हैं। संत सिद्धों के हृदय मैं बसने वाले सभी ऋद्धियों के स्वामी **श्रीनिवास** हैं।*

हैं श्रीनिधि संपत्ति के दाता, श्रीविभावन कर्म फलदाता ।
हैं श्रीधर स्थिति लक्ष्मी वक्ष, अवतरे मही भक्तन-रक्ष ।।(२२६)

भावार्थ: *धन धान्य के दाता प्रभु* ***श्रीनिधि*** *हैं।* ***श्रीविभावन*** *कर्म फल देते हैं। श्री (लक्ष्मी) जिनके वक्ष में विराजमान हैं, और जो भक्तों की रक्षा के लिए अवतरित होते हैं, इन भगवान् को* ***श्रीधर*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

हों सुमर श्रीकर भक्त सम्पन्न, करें मनन स्तवन अर्चन ।
पाए अति सुख जपत श्रेय, हैं श्रीमान महादेव अति पूज्य ।।(२२७)

भावार्थ: ***श्रीकर*** *के स्मरण से भक्त धन धान्य प्राप्त करते हैं, अतः ऐसे प्रभु का मनन, स्तवन और अर्चन करना चाहिए।* ***श्रेय*** *भगवान् के जपने से अत्यंत सुख की प्राप्ति होती है।* ***श्रीमान*** *हरि महादेव के भी अत्यंत पूज्य हैं।*

हैं लोकत्रयाश्रया त्रिलोकपति, सुखी भक्त पाकर आश्रति ।
सम सरोज स्वक्ष के नैना, रूप स्वंग मन छीने चैना ।।(२२८)

भावार्थ: *तीनों लोकों के स्वामी जिनका आश्रय भक्तों को सुख प्रदान करता हैं, वह प्रभु* ***लोकत्रयाश्रया*** *हैं। कमल के समान नयन वाले भगवान्* ***स्वक्ष*** *हैं। प्रभु का मनोहर रूप जो मन का चैन छीन ले, वह* ***स्वंग*** *है।*

हो अति आनंद सुमर शतानंद, हैं हरि नन्दि रुप परमानंद ।
हैं ज्योतिर्गणेश्वर नक्षत्रीश, नियंत्रित मन विजितात्मा ईश ।।(२२९)

भावार्थ: *असीमित आनंदमयी प्रभु* ***शतानंद*** *हैं। परमानंद के स्वरुप भगवान्* ***नन्दि*** *हैं। नक्षत्रगणों के स्वामी होने के कारण उन्हें* ***ज्योतिर्गणेश्वर*** *नाम से पुकारा जाता है। जिन्होंने मन (आत्मा) को जीत लिया, वह ईश्वर* ***विजितात्मा*** *हैं।*

है अंकन असंभव विधेयात्मा, सत्य सत्कीर्ति परम आत्मा ।
देख सकें आंवल कर माहीं, छिन्नसंशय असमंजस नाहीं ।।(२३०)

भावार्थ: *जिनका (स्वरुप) अंकन असंभव है, वह प्रभु* ***विधेयात्मा*** *हैं। भगवान् की कीर्ति सत्य है, अतः उन्हें* ***सत्कीर्ति*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। प्रभु हाथ पर रखे हुए आंवले को भी देख सकते हैं (सूक्ष्म दृष्टि धारक हैं) इसमें कोई संसय नहीं, इसलिए उन्हें* ***छिन्नसंशय*** *नाम से पुकारा जाता है।*

हैं उदीर्ण सब भांति श्रेष्ठ, सर्वतश्चक्षु सर्वभूत हरि प्रेष्ठ ।
कहें वेद अनीश स्वपति, शाश्वतस्थिर विकार हीनति ।।(२३१)

भावार्थ: *उत्कृष्ट प्रभु* ***उदीर्ण*** *हैं। सर्व प्रिय भगवान्* ***सर्वतश्चक्षु*** *हैं। जिन्हे वेद स्वपति (जिनका कोई स्वामी नहीं) कहते हैं, वह हरि* ***अनीश*** *हैं। (भक्तों को) विकारहीन करने वाले* ***शाश्वतस्थिर प्रभु हैं*** *।*

शयन हरि सिंधु तट अयना, भूशय गए जब लंक विजयना ।
लिए भूषण भू अनेक अवतारा, भूति हरि शासक संसारा ।।(२३२)

भावार्थ: *जब लंक विजय को प्रस्थान हेतु प्रभु (श्री राम) ने सागर तट पर शयन किया, तो उन्हें* ***भूशय*** *नाम से जाना गया। अनेक बार पृथ्वी पर अवतार लेकर उन्होंने भू को भूषित किया, इसलिए उन्हें* ***भूषण*** *कहा गया। विश्व के शासक प्रभु* ***भूति*** *हैं।*

शोकविगत करें हरि विशोक, शोकनाशन हरें सब शोक ।
अर्चिष्मान सम रवि प्रकाश, अर्चित पूजित थल व् अकाश ।।(२३३)

भावार्थ: *शोकहीन होने के कारण भगवान्* ***विशोक*** *कहलाये। (भक्तों के) समस्त शोकों का हरण करते हैं, इसलिए* ***शोकनाशन*** *नाम से बुलाया जाता है। सूर्य समान प्रकाशित प्रभु* ***अर्चिष्मान*** *हैं। जिनका पूजन भू और आकाश (सुरलोक) हर स्थान पर होता है, वह भगवान्* ***अर्चित*** *हैं।*

जस जल कुम्भ में सब जानी, है अंतःकरण कुम्भ जग वासनी ।
विकारहीन हरि विशुद्धात्मा, जपत विशोधन हो शुद्ध आत्मा ।।(२३४)

भावार्थ: *जिस प्रकार कुम्भ में जल रहता है, उसी प्रकार अत्यंत भाग्यशाली प्रभु के अन्तःकरण में जग रहता है, इस कारण उन्हें* ***कुम्भ*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। विकारहीन होने के कारण उन्हें* ***विशुद्धात्मा*** *नाम से जाना जाता है। जिनके भजने से आत्मा पवित्र हो जाती है, वह प्रभु* ***विशोधन*** *हैं।*

अनिरुद्ध व्यूहभंजन ज्ञाता, अप्रतिरथ को प्रतिपक्ष सराहता ।
कान्ति भव्य हरि समाहित, अवतरित हुए प्रद्युम्न जग हित ।।(२३५)

भावार्थ: *जो प्रभु हर प्रकार के व्यूह भंजन के ज्ञाता हैं, उन्हें* ***अनिरुद्ध*** *नाम से पुकारा जाता है। जिन प्रभु की प्रतिपक्ष भी सराहना करता हैं, वह* ***अप्रतिरथ*** *हैं। भव्य कांति के साथ जिन भगवान् ने जगत हित के लिए जन्म लिया, उन्हें* ***प्रद्युम्न*** *नाम से जाना गया।*

असीमित बल के हरि स्वामी, अमितविक्रम वीर अनुगामी ।
जब कालनेमिनिहा प्रहारो, तब कालनेमि असुर संहारो ।। (२३६)

भावार्थ: *शूरवीर जिनका अनुसरण करतें हैं और जो स्वयं असीमित बल के स्वामी हैं, वह भगवान्* ***अमितविक्रम*** *हैं।* ***कालनेमिनिहा*** *प्रभु के प्रहार से कालनेमि असुर का वध हुआ।*

अति शूर वीर जन्मे रघुकुल, शौरि हुए अवतरित शूर कुल ।
शूरजनेश्वर तुम हो शूरेशा, हैं त्रिलोकात्मा त्रिलोकन ईशा ।।(२३७)

भावार्थ: *रघुकुल में जन्मे (श्री राम) अति शूर प्रभु* ***वीर*** *हैं। शूर कुल (सूर्यवंश) में अवतरित होने के कारण हरि* ***शौरि*** *कहलाये। शूर वीरों के स्वामी भगवान्* ***शूरजनेश्वर*** *हैं। तीनों लोकों के ईश्वर* ***त्रिलोकात्मा*** *हैं।*

रवि किरण जस ओज व्यापित, तस केशव प्रभा प्रकाशित ।
बधो अश्व रूप केसी नियंत, हो नाम केशिहा हरि अनंत ।।(२३८)

भावार्थ: *(सूर्य की किरणों को केश कहते हैं) अतः जिनकी सूर्य की किरणों के समान प्रभा जग को प्रकाशित करती है, वह प्रभु* ***केशव*** *हैं। केसी नाम के असुर का वध करने वाले दिव्य हरि* ***केशिहा*** *के स्मरण से (प्राणी) पवित्र हो जाते हैं।*

फलत संत साधु सब कामना, कामदेव दें हृदय सांत्वना ।
भर्ता तुम्हीं जग कामना, अवतरण कामपाल हित संतना ।।(२३९)

भावार्थ: *साधू पुरुषों की कामनाओं को फलित कर प्रभु* ***कामदेव*** *उन्हें शान्ति प्रदान करते हैं। जग जनों की कामनाओं का पालन करते हुए* ***कामपाल*** *ऐसे संतों का हित करते हैं।*

हैं पूर्ण काम अतैव हरि कामी, कान्त दिव्य देह के स्वामी ।
कृतागम धर्म ग्रंथ सम्मत, अनिर्देश्यवपु के रुप अवर्णित ।।(२४०)

भावार्थ: *पूर्ण काम हैं अतः प्रभु* ***कामी*** *हैं। दिव्य तन के स्वामी होने से* ***कान्त*** *हैं। धर्म ग्रंथों के ईश्वर* ***कृतागम*** *हैं। जिनके रूप को निर्दिष्ट (वर्णित) नहीं किया जा सकता वह भगवान्* ***अनिर्देश्यवपु*** *हैं।*

हैं सर्वव्यापी सर्वत्र गमनी, समाहित विष्णु मही गगनी ।
हैं वी युक्त हरि श्री भगवंत, दें नाम वीर ज्ञानी अनंत ।।(२४१)

भावार्थ: *सर्वत्र गमन करने वाले एवं सर्वव्यापी प्रभु* ***विष्णु*** *धरती और गगन में समाहित हैं।* ***वी*** *से युक्त (गति, व्याप्ति, जनन, कांति इत्यादि) धातुपाठ समझने वाले प्रभु* ***वीर*** *हैं।*

पवित्र अविषयी हैं अनंत, हैं, विभूति पार्थ धनञ्जय नियंत ।
तप वेद ब्रह्म योग के ज्ञानी, हैं ब्रह्मण्य सत यशस्वी जानी ।। (२४२)

भावार्थ: *विषयहीन पवित्र प्रभु* ***अनंत*** *हैं। अर्जुन की विभूति भगवान्* ***धनञ्जय*** *हैं। तप, वेद, ब्रह्म और योग के ज्ञाता यशस्वी सत्य प्रभु* ***ब्रह्मण्य*** *हैं।*

तप उदित तब दें आशीषा, ब्रह्मकृत साधक की आशा ।
रचें विश्व रूप धर ब्रह्मा, दें ब्रह्म हरि ज्ञान सत परमा ।।(२४३)

भावार्थ: ***ब्रह्मकृत*** *प्रभु के आशीर्वाद से तप का उदय होता है, अतः वह साधकों की आशा हैं। विश्व की रचना प्रभु* ***ब्रह्मा*** *रूप से करते हैं। परम सत्य ज्ञान में लीन रहने से हरि* ***ब्रह्म*** *हैं।*

ब्रह्मविवर्धन हरि शिक्षक ज्ञानी, हैं ब्रह्मवित्त ग्रंथन विज्ञानी ।
ब्राह्मण ब्रह्मभेद सब जाना, स्वामी ब्रह्म तब ब्रह्मी जाना ।।(२४४)

भावार्थ: *प्रभु ज्ञानपूर्ण शिक्षक हैं, अतः* ***ब्रह्मविवर्धन*** *हैं। समस्त ग्रंथों का ज्ञान जिनमें समाहित है, वह* ***ब्रह्मवित्त*** *हैं। ब्रह्मभेद को जानने वाले* ***ब्राह्मण*** *हैं। ब्रह्म के ईश* ***ब्रह्मी*** *हैं।*

स्वज्ञानी सब वेद ब्रह्मज्ञ, ब्राह्मणप्रिय प्रिय ब्रह्म और यज्ञ ।
लघु रूप पर पाद विक्षेपा, धरहिं महाक्रम बामन रूपा ।।(२४५)

भावार्थ: *सब वेदों का जिन्हें स्वतः ज्ञान है, वह* ***ब्रह्मज्ञ*** *है। ब्रह्म और यज्ञ के प्रिय* ***ब्राह्मणप्रिय*** *हैं। लघु रूप परन्तु अत्यंत विशाल पग धारी बामन रूप में अवतरित प्रभु* ***महाक्रम*** *हैं।*

करें जनन पोषित संहार, हैं हरि महाकर्मा आधार ।
तपे सूर्य जिनके अति तेजा, दें प्रकाश शशि महातेजा ।।(२४६)

भावार्थ: *जग सृजन, पालन एवं संहार कर्ता, संतों का सहारा (मोक्षदाता) प्रभु* ***महाकर्मा*** *हैं। सूर्य जिनके तेज से ओजित होता है, तथा जो चन्द्रमा को प्रकाश देते हैं, वह भगवान्* ***महातेजा*** *हैं।*

वासुक सर्प के हो तुम ईश, हैं हरि महोरग भुजंगीश ।
दें यज्ञ फल अश्वमेध समान, महाक्रतु तुम सुयज्ञ महान ।।(२४७)

भावार्थ: *महान सर्प वासुक के प्रभु स्वामी हैं, अतः* ***महोरग*** *हैं। अश्वमेध समान यज्ञों के नियन्ता* ***महाक्रतु*** *भगवान् स्वयं महान यज्ञ हैं।*

करें संचालित महायज्व यज्ञ, प्रभु महायज्ञ हैं जपयज्ञ ।
तुम्हीं यज्ञकर्ता मोक्षदाता, हो महाहवि यज्ञ अंगीकर्ता ।।(२४८)

भावार्थ: *यज्ञ को संचालित करने वाले प्रभु* ***महायज्व*** *हैं। यज्ञों में जपयज्ञ भगवान्* ***महायज्ञ*** *हैं। हरि स्वयं ही यज्ञ कर्ता हैं तथा और यज्ञ हवि को स्वीकार कर मोक्षदाता हैं, अतः* ***महाहवि*** *हैं।*

करें स्तव पूजन सुर भूता, हैं स्तवप्रिय प्रिय स्तुतिकर्ता ।
पूजें स्तोत्र काव्य संगीति, स्तुति प्रभु अर्चन की रीति ।।(२४९)

भावार्थ: *जिनकी देव और भूजन पूजा करते हैं वह* ***स्तव्य*** *हैं। स्तुतिकर्ताओं के प्रिय* ***स्तवप्रिय*** *हैं। काव्य रूप में पूजा विधि* ***स्तोत्र*** *हैं। भगवान् के अर्चना की पद्धिति* ***स्तुति*** *है।*

तुम सर्वरूप हो हरि स्तोता, धरें भक्त रूप स्वयं स्तुता ।
हैं पंचायुध युक्त रक्षिता, रणप्रिय हरि असुर संहारिता ।।(२५०)

भावार्थ: *सर्वरूप होने के कारण प्रभु स्वयं* ***स्तोता*** *हैं, जो भक्त रूप धारण कर* ***स्तुता*** *भी हैं। लोक रक्षा के निमित्त पांच आयुध धारी* ***रणप्रिय*** *प्रभु असुरों का संहार करते हैं।*

पूर्ण हरि हैं हीन-विकारत, नाशें अघ जब पुण्य सुमरत ।
पुण्यमयी प्रभु की कीर्ति, दें पुण्यकीर्ति पावन अनुभूति ।।(२५१)

भावार्थ: *प्रभु में कोई अभाव नहीं है (सब गुणों से युक्त एवं विकारों से विहीन हैं), अतः* ***पूर्ण*** *हैं।* ***पुण्य*** *नाम के स्मरण से समस्त पापों का नाश होता है। हरि की कीर्ति सत्य एवं पुण्यमयी है, उनके* ***पुण्यकीर्ति*** *नाम स्मरण से पवित्रता की अनुभूति होती है।*

अनामय सब रहित व्याधी, मनोजव की गति सम आंधी ।
धर्म शिक्षक हरि तीर्थकरा, प्रजनित वीर्य वसुरेता धरा ।।(२५२)

भावार्थ: *समस्त व्याधियों से रहित प्रभु* ***अनामय*** *हैं। जिनके मन की गति आंधी के समान (अति तीव्र) है, वह भगवान्* ***मनोजव*** *हैं। धर्म ज्ञान देने वाले हरि* ***तीर्थकर*** *हैं। वसु (पवित्र स्वरुप) के वीर्य से उत्पन्न (वीर्य धारता) प्रभु* ***वसुरेता*** *हैं (रेता वीर्य को कहा जाता है)।*

कुबेर रूप धन वितरण कर्ता, हैं वसुप्रद सन्त सतकर्ता ।
सम मोक्ष श्रेष्ठ फल देता, हैं वसुप्रदा विज्ञान शिक्षिता ।।(२५३)

भावार्थ: *कुबेर रूप में संत और सतपथगामीयों को जो धन का वितरण करते हैं, वह प्रभु* ***वसुप्रद*** *हैं। समस्त विद्याओं (विज्ञान) के शिक्षक और मोक्ष के समान श्रेष्ठ फल देने वाले भगवान्* ***वसुप्रदा*** *हैं।*

वासुदेव हैं वसुदेव-सुत, की जन्म सों भू उपद्रव-मुक्त ।
बसें हिय नर नारि नियंत, वसु तुम हो अमर अनंत ।।(२५४)

भावार्थ: *वसुदेव जी के पुत्र* ***वासुदेव*** *हैं, जो पृथ्वी को उपद्रवों से मुक्त करने के लिए अवतरित हुए। सभी जनों के हृदय में बसने वाले अमर अजर अनंत भगवान्* ***वसु*** *हैं।*

प्रभु तुम निर्णायक निष्पक्षा, बसें वसुमना हिय हर पक्षा ।
ब्रह्म रूप स्वीकृत हवि यज्ञा, सद्गति दें सुगति और प्रज्ञा ।।(२५५)

भावार्थ: *हर पक्ष (पक्ष एवं प्रतिपक्ष) के हृदय में बसने वाले निष्पक्ष न्यायाधीश प्रभु* ***वसुमना*** *हैं। प्रत्येक यज्ञ में जो ब्रह्म रूप आहुति अर्पित की जाती है, वह* ***हवि*** *हैं। जिनकी स्तुति से सुगति और ज्ञान की प्राप्त होती है, वह भगवान्* ***सद्गति*** *हैं।*

विश्व उत्पत्ति सत्कृति कार्य, जन्मे प्रभु कीन्हें सुकार्य ।
जाति भेद रहित अद्वैता, विलक्षण नाम हरि का सत्ता ।।(२५६)

भावार्थ: ***सत्कृति*** *प्रभु का अवतरण विश्व उत्पत्ति समान शुभ एवं श्रेष्ठ कार्य के लिया हुआ है। जो जातीय भेदभाव से रहित अद्वैत प्रभु हैं, उनको* ***सत्ता*** *नाम के विलक्षण नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

सत असत प्रपंच विहीना, सद्भूति प्रभु चिदानंद अग्रीना ।
तुम्हीं अयन सन्त सत्पुरुषा, हैं सत्परायण सत पंथ दर्शा ।।(२५७)

भावार्थ: *सत्य, असत्य प्रपंच आदि से रहित आदिदेव आनंददायक प्रभु* ***सद्भूति*** *हैं। सन्त और सत्पुरुषों के अयन (स्थान अथवा लक्ष्य), सत्यपथदर्शा भगवान्* ***सत्परायण*** *हैं।*

शूरसेन नायक सुर सेना, ओजित जग विगमित हो रैना ।
हो यदुश्रेष्ठ यदुवंश अग्रणी, सन्निवास का हृदय सतगुणी ।।(२५८)

भावार्थ: *देवताओं की सेना के सेनापति जो अंधकार मिटा कर जग को प्रकाशित करते हैं, वह प्रभु* ***शूरसेन*** *हैं। यदुवंशियों में प्रथम होने के कारण* ***यदुश्रेष्ठ*** *हैं। सद्गुणों को हृदय में धारण करने वाले भगवान्* ***सन्निवास*** *हैं।*

मात यमुन के तुम सम्बन्धी, सुयामुन हो परिवेश सुगंधी ।
बसें भूतावास संत हृदया, हो सुमर वासुदेव नष्ट माया ।।(२५९)

भावार्थ: *माता यमुना के सम्बन्धी (ग्रंथों में देवकी, वसुदेव, नन्द, यशोदा, बलभद्र, सुभद्रा को यमुना माँ का सम्बन्धी बताया जाता हैं) जिनका परिवेश सुगन्धित है, उनको* ***सुयामुन*** *नाम से जाना जाता है। जीवों के हृदय में बसने वाले (जीवों के अन्तः करणी) भगवान्* ***भूतावास*** *हैं। माया का उन्मूलन करने वाले हरि* ***वासुदेव*** *हैं।*

सर्वासुनलय आश्रयदाता, अनल समाए सूर्य ओजता ।
संहारें सभी असुर दुष्टा, हैं दर्पहा संत-रक्षक इष्टा ।।(२६०)

भावार्थ: *(संतों के) आश्रयदाता प्रभु* ***सर्वासुनलय*** *हैं। सूर्य के समान जिनका तेज है वह* ***अनल*** *हैं। अभिमानी दुष्टों का संहार कर जो संतों की रक्षा करते हैं, वह भगवान्* ***दर्पहा*** *हैं।*

पाएं संत मान दर्पद कृपा, हो हिय आनंद दृप्त अनुकम्पा ।
दूभर धारण हिय हरि रूपा, दुर्धर हरि न सम अनुरूपा ।।(२६१)

भावार्थ: *जिनकी कृपा से संतों का सम्मान होता है, वह प्रभु* ***दर्पद*** *है। जिनकी अनुकम्पा से आनंद की प्राप्ति होती है, उन्हें* ***दृप्त*** *नाम से सम्बोधित किया जाता है। ऐसे प्रभु जिनके स्वरुप को हृदय में धारण करना कठिन है (साधना की आवश्यकता है), जिनके समान कोई और देवता नहीं, ऐसे प्रभु को* ***दुर्धर*** *नाम से जाना जाता है।*

अपराजित अजित भगवंता, विश्वमूर्ति सर्वभूत अनंता ।
शयन शय्या शेष समन्दरा, तन महामूर्ति सम मंदरा ।।(२६२)

भावार्थ: *अजित (जिन्हें जीता नहीं जा सकता - अजय) प्रभु* ***अपराजित*** *हैं। सर्वव्यापी भगवान्* ***विश्वमूर्ति*** *हैं। शेषनाग की शय्या पर शयन करने वाले प्रभु जिनका शरीर मंदरा पर्वत के समान (अति विशाल) है, वह* ***महामूर्ति*** *हैं।*

हैं दीप्तमूर्ति ऊर्जित आकारा, अमूर्तिमान हरि निराकारा ।
धारण मही अनेक अवतारा, अनेकमूर्ति तब सन्त पुकारा ।।(२६३)

भावार्थ: *ओजस्वी रूप वाले प्रभु* ***दीप्तमूर्ति*** *हैं। जिनके आकार को मापा नहीं जा सकता (निराकार) हैं, वह भगवान्* ***अमूर्तिमान*** *हैं। पृथ्वी पर अनेक बार उन्होंने अवतार लिया, अतः उन्हें* ***अनेकमूर्ति*** *नाम से संतों ने पुकारा।*

अनेकरूप अतैव अव्यक्ता, अव्यक्त हरि सन्त अधिवक्ता ।
अगणित हैं प्रभु के रूपा, प्रभु शतमूर्ति सुन्दर स्वरूपा ।।(२६४)

भावार्थ: *अनेक रूपधारी, संतों के अधिवक्ता (पक्षधर) प्रभु जिन को व्यक्त करना कठिन है, वह* ***अव्यक्त*** *हैं। सुन्दर स्वरुप वाले प्रभु के अगणित रूप हैं, इसलिए उन्हें* ***शतमूर्ति*** *कहा जाता है।*

सहस्त्र मुख हैं अतः शतानन, अनेक रूप पर एक आनन ।
अनेक रूप धर कारन माया, हैं नैक नेक ग्रंथन तब गाया ।।(२६५)

भावार्थ: *सहस्त्र मुख होने के कारण प्रभु* ***शतानन*** *हैं। अनेक रूप (सहस्त्र मुख) होने पर भी वह एकमुखी हैं, अतः* ***एक*** *हैं। माया के कारण भगवान् ने अनेक रूप धारण किये, इस नेकता के कारण ग्रन्थ उन्हें* ***नैक*** *नाम से सम्बोधित करते हैं।*

दें फल सवः हवि सम अमृत, हरि कः ब्रह्मस्वरुप अर्चित ।
किम रूप पुरुषारथ इष्टा, यत निर्देश हो उत्पत्ति स्रष्टा ।।(२६६)

भावार्थ: *यज्ञ हवि को अमृत में फलित करने वाले प्रभु* ***सवः*** *हैं। ब्रह्मस्वरूप में जिनकी स्तुति होती है, वह भगवान्* ***कः*** *हैं। प्रभु के पुरुषार्थ रूप* ***किम*** *हैं। भगवान्* ***यत*** *के निर्देश से ही (सृष्टि) की रचना होती है।*

हैं तत जगत विस्तार नियंत, हैं पदमनुत्तमम श्रेष्ठ अनंत ।
लोकबंधु ईश सब लोका, लोकनाथ शासित त्रिलोका ।।(२६७)

भावार्थ: *जगत का विस्तार करने वाले स्वामी* ***तत*** *हैं। श्रेष्ठ प्रभु* ***पदमनुत्तमम*** *हैं। सब लोकों के स्वामी* ***लोकबंधु*** *हैं। तीनों लोकों पर शासन करने वाले प्रभु* ***लोकनाथ*** *हैं।*

माधव मार्गदर्शक मधुवंशा, हैं भक्तवत्सल भक्त अनुषंगा ।
कंचन वर्ण हरि की काया, सुवर्णवर्ण तब अनंत कहलाया ।।(२६८)

भावार्थ: *मधुवंस (यादव वंस) के मार्गदर्शता* ***माधव*** *हैं। भक्तों से जिनका गहन सम्बन्ध है (अतः भक्तों को प्रेम करते हैं), वह* ***भक्तवत्सल*** *हैं। स्वर्ण के समान (उज्जवल) जिनकी काया है, ऐसे प्रभु को* ***सुवर्णवर्ण*** *कह कर पुकारा गया है।*

सुवर्णमय हरि अंग हेमांग, सुन्दर पावन तन प्रभु वरांग ।
कर शोभित चंदन भुजबंधा, हरि चंदनांगदी अति सुगंधा ।।(२६९)

भावार्थ: *कंचन समान अंग वाले प्रभु* ***हेमांग*** *हैं। सुन्दर पवित्र शरीर वाले प्रभु* ***वरांग*** *हैं। चन्दन से विभूषित भुजबंध एवं अत्यंत सुगंध वाले प्रभु* ***चंदनांगदी*** *हैं।*

बधे असुर वीरहा अनंत, विषम विलक्षन सत्य नियंत ।
हैं विषय रहित हरि शून्या, दें वर अमोघ घृताशी पुन्या ।।(२७०)

भावार्थ: *असुरों का वध करने वाले अनंत* ***वीरहा*** *हैं। सत्य और विलक्षण होने के कारण प्रभु को* ***विषम*** *कह कर पुकारा गया। विषयों में अरुचि के कारण प्रभु* ***शून्या*** *हैं। पुण्य प्रभु का वर (आशीष) अमोघ है, अतः वह* ***घृताशी*** *हैं।*

चिरस्थायी अचल तुम श्रेष्ठा, चलें चल वायु वेग उत्कृष्टा ।
अभिमानहीन हरि अमानी, मानद प्रभु संत सम्मानी ।।(२७१)

भावार्थ: *सदैव स्थिर रहने वाले श्रेष्ठ प्रभु* ***अचल*** *हैं। वायु वेग सम जिनकी गति है, वह भगवान्* ***चल*** *हैं। जिन्हें अभिमान नहीं है, ऐसे प्रभु* ***अमानी*** *हैं। संतों को सम्मान देने वाले हरि* ***मानद*** *हैं।*

हैं जगत पूज्य मान्या अनंत, हैं लोकस्वामी त्रिलोक नियंत ।
त्रिलोकध्रका हरि धारें वसुधा, अतिशय ज्ञानी प्रभु सुमेधा ।।(२७२)

भावार्थ: *जग से पूजित अनंत* ***मान्या*** *हैं। तीनों लोकों को नियंत्रित करने वाले प्रभु* ***लोकस्वामी*** *हैं। विश्व को धारण करने वाले भगवान्* ***त्रिलोकधृका*** *है। अत्यंत ज्ञानी प्रभु* ***सुमेधा*** *हैं।*

हों प्रगट आहुति यज्ञ मेधजा, धन्य करें कृतार्थ भूमिजा ।
आशीष अमोघ है सत्यमेधा, धरें धराधर भू अति मेधा ।।(२७३)

भावार्थ: *यज्ञ आहुति से प्रगट होने वाले प्रभु* ***मेधजा*** *हैं। भूमि से उत्पन्न (जीव जंतुओं) को* ***धन्य*** *प्रभु कृतार्थ करते हैं। (भूमिजा सीता माँ का नाम भी है क्योंकि वह भू अर्थात पृथ्वी से उत्पन्न हुईं थीं। उन्हें कृतार्थ करने वाले अर्थात उनसे विवाह करने वाले प्रभु श्री राम का नाम भी* ***धन्य*** *है)। भगवान् का आशीर्वाद अमोघ है, अतः उनका नाम* ***सत्यमेधा*** *है। पृथ्वी को धारण करने वाले अत्यंत बलशाली भगवान् को* ***धराधर*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

है सूर्यरूप सम उज्ज्वल प्रभा, करें तेजोवृष सब कर्म शुभा ।
असीम प्रभा तन भगवाना, द्युतिधर हरि संत तब जाना ।।(२७४)

भावार्थ: सूर्य समान उज्जवलित प्रभा वाले, सदैव शुभ कर्मों की प्रेरणा देने वाले प्रभु ***तेजोवृष*** *हैं। जिनका शरीर अत्यंत प्रकाशित है, उन प्रभु को संत* ***द्युतिधर*** *नाम से पुकारते हैं।*

सर्वशस्त्रभृतांवर हैं अति शूरा, शस्त्र सुशोभित उत्तम वीरा ।
स्वीकारें हरि अर्पित पुष्पा, प्रग्रह प्रभु दें शांति अनुष्का ।।(२७५)

भावार्थ: शस्त्र सुशोभित अत्यंत शूरवीर प्रभु **सर्वशस्त्रभृतांवर** है। (भक्तों द्वारा दिए गए) समर्पित पुष्पों को स्वीकार कर प्रेम एवं शांति देने वाले भगवान् **प्रग्रह** हैं।

अवरोधें हरि मार्ग असंता, निग्रह करत वशी सुर संता ।
व्यग्र हरि का जन्म न अंता, हैं नैकश्रन्ग सम वृषभ नियंता ।।(२७६)

भावार्थ: *असंतों को घेर कर उनका संहार करते हैं, तथा संतों और देवताओं को अपने वश मैं रखते हैं, उन प्रभु को* ***निग्रह*** *नाम से पुकारा जाता है। प्रभु का न कोई जन्म होता*

*है और न मृत्यु, अतः वह **व्यग्र** हैं। वृषभ रूप (चार सींग वाले रूप) में भगवान् **नैकश्रृन्ग** हैं।*

गद हरि-पित वसुदेव अनुज, हैं ज्येष्ठ आयुवर गदाग्रज ।
रूप अव्याकृत विराट सूत्रात्मा, तुरीय चतुर्मूर्ति परात्मा ।।(२७७)

भावार्थ: *प्रभु के पिता वसुदेव के अनुज गद हैं, उनसे पहले अवतरित होने के कारण उनका नाम **गदाग्रज** पड़ा। भगवान् की चार मूर्तियां हैं - अव्याकृत, विराट, सूत्रात्मा एवं तुरीय, अतः वह **चतुर्मूर्ति** हैं।*

चार भुजा धारी हो नियंता, चतुर्बाहु सुमिरैं सब संता ।
छंद वेद तन महापुरुष, हो हरि चतुर्व्यूह सुमिरन हर्ष ।।(२७८)

*भावार्थ: सभी संतों द्वारा सुमरित चार भुजा धारी प्रभु को **चतुर्बाहु** कहा गया है। भगवान् के चार व्यूह हैं - छंद, वेद, तन और महापुरुष, इन चार व्यूहों के स्वामी जिनके स्मरण से प्रसन्नता मिलती है, वह **चतुर्व्यूह** हैं।*

करें वेद उल्लेख चतुर वर्ण, करें विकास चतुर्गति सतगुण ।
मन बुद्धि अहंकार व् चित्ता, हैं चतुरात्मा विहीन इन सत्ता ।।(२७९)

भावार्थ: *वेदों में चार वर्णों का उल्लेख किया गया है - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और कर्मी, इन चारों वर्णों के धर्मदर्शिता प्रभु **चतुर्गति** हैं। मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त, ये चार अन्तःकरण हैं, प्रभु इन सभी से रहित हैं, अतः **चतुरात्मा** हैं।*

अर्थ धर्म काम और मोक्षा, प्रगटत चतुर्भाव स्वइच्छा ।
अथर्व यजुर साम ऋगवेद, हैं चतुर्वेदवित स्वयंभू वेद ।।(२८०)

भावार्थ: *शास्त्रों में चार भावों का उल्लेख है - अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, यह चारों भाव प्रभु की इच्छा से ही प्रगट होते हैं, अतः भगवान् **चतुर्भाव** हैं। यद्यपि चार वेदों का उल्लेख है - अथर्व, यजुर, साम और ऋगवेद, परन्तु प्रभु स्वयं ही वेद हैं, अतः **चतुर्वेदवित** हैं।*

व्यापत जगत एक ही अंशा, देव करें एकपात प्रशंसा ।
विश्व चक्र ज्ञानी भगवंता, हैं हरि समावर्त माया-हर्ता ।।(२८१)

भावार्थ: *देवताओं से प्रशंसित* ***एकपात*** *प्रभु विश्व में एक ही अंश से व्याप्त हैं। संसार चक्र के ज्ञानी* ***समावर्त*** *भगवान् (भक्तों की) माया का हरण कर लेते हैं।*

सर्वभूत सर्वव्याप आत्मा, विषयहीन प्रभु अनिवृतात्मा ।
अमर अजर हरि दुर्जया, भय दुरतिक्रम न होए अवज्ञा ।।(२८२)

भावार्थ: *सर्वभूत, सर्वव्यापक, विषयहीन आत्मा* ***अनिवृतात्मा*** *हैं। भगवान् अमर, अजर एवं अजेय है, अतः* ***दुर्जया*** *है। जिनके भय से (देवता भी) कोई अवज्ञा का साहस नहीं कर सकता, ऐसे प्रभु को* ***दुरतिक्रम*** *नाम से सम्बोधित किया गया है।*

मिलहिं घोर तप भगवाना, दुर्लभ नाम विश्व सब जाना ।
दुर्गम गम्य दुःख सब हरता, दें दर्शन दुर्ग अति कठिनता ।।(२८३)

भावार्थ: *प्रभु घोर तप से (दुर्लभता से) प्राप्त होते हैं, अतः विश्व उन्हें* ***दुर्लभ*** *नाम से पुकारता है। दुखों को हरने वाले भगवान्* ***दुर्गम*** *नाम से गम्य (जाने जाते) हैं। प्रभु का दर्शन अत्यंत कठिन है (घोर तप से ही भगवान की प्राप्ति होती है), अतः उन्हें* ***दुर्ग*** *कह कर सम्बोद्धित किया जाता है।*

बसहिं हिय अति दुष्कर योगी, दुरावास हैं असाध्य भोगी ।
दुरारिहा बधें सब असुर, हैं हरि विरुद्ध सभी आडम्बर ।।(२८४)

भावार्थ: *जो योगीओं के हृदय में भी कठिनता से बसते हैं (योगीओं को भी उन्हें प्राप्त करने के लिए घोर तप करना पड़ता है) तथा भोगीओं के लिए असाध्य हैं, वह प्रभु* ***दुरावास*** *हैं। आडम्बरों के विरुद्ध, एवं असुरों का संहार करने वाले भगवान्* ***दुरारिहा*** *हैं।*

सुन्दर अति भगवंत स्वरूपा, हैं शुभांग कामदेव अनुरूपा ।
लोकसारन्गा सार विश्व के, सुतन्तु नियंत तंतु इस जग के ।।(२८५)

भावार्थ: *भगवान् का स्वरुप कामदेव के समान सुन्दर है, अतः वह* ***शुभांग*** *हैं। विश्व के सार होने के कारण प्रभु को* ***लोकसारन्गा*** *कहा गया है। इस जगत के हरि तंतु हैं (आधार हैं), अतः* ***सुतन्तु*** *हैं।*

हैं जग पालक तन्तुवर्धना, हैं धर्मनिष्ठ अतः इन्द्रकर्मा ।
करें भव्य कार्य महाकर्मा, धर्म कर्म करें कृतकर्मा ।।(२८६)

भावार्थ: *जगत के पालनहार हैं, अतः* ***तन्तुवर्धना*** *हैं। धर्मनिष्ठ (श्रेष्ठ) कर्म करते हैं, इसलिए प्रभु* ***इन्द्रकर्मा*** *हैं। महान कार्यों के कर्ता* ***महाकर्मा*** *हैं। धर्मरूप कर्म करते हैं, इसलिए हरि को* ***कृतकर्मा*** *कहा गया है।*

हैं रचयिता प्रभु चतुर्वेद, समाहित कृतागम सभी वेद ।
प्रभु अवतरें सदैव स्वइच्छा, हेतु जन्म उद्भव सत-रक्षा ।।(२८७)

भावार्थ: *भगवान् ही चारों वेद के रचयिता हैं, अतः वेद उन्हीं में समाहित होने के कारण उन्हें* ***कृतागम*** *नाम से जाना गया है। सत्य की रक्षा के लिए अजन्मा प्रभु स्वयं की इक्षा से ही अवतरित होते हैं, इसलिए उन्हें* ***उद्भव*** *नाम से सम्बोद्धित किया गया है।*

सम नहीं सुन्दर कोई रूप, हैं सुन्द हरि शुभुंदन स्वरुप ।
रत्न जड़ित नाभि नियंत, शुभ रत्ननाभ सुन्दर सुमन्त ।।(२८८)

भावार्थ: *प्रभु के शोभन की तुलना नहीं की जा सकती, अतः वह* ***सुन्दर*** *हैं। करुणामयी (शुभुंदन) रूप वाले भगवान्* ***सुन्द*** *हैं। जिनकी नाभि रत्न जड़ित है, ऐसे सुन्दर ज्ञानी भगवान् को* ***रत्ननाभ*** *नाम से जाना गया है।*

मंजुल नैन नाम सुलोचन, अर्क सभी के संकट मोचन ।
हैं वाजसन हरि अन्नपूर्णा, मत्स्य स्वरूप श्रंगी अवतरणा ।।(२८९)

भावार्थ: *सुन्दर नेत्र वाले प्रभु* ***सुलोचन*** *हैं। सभी के पूज्य संकट हरने वाले भगवान्* ***अर्क*** *हैं। अन्नपूर्णा प्रभु* ***वाजसन*** *हैं। मत्स्य रूप में अवतार लेने वाले भगवान्* ***श्रंगी*** *हैं।*

रिपु जीतें जयंत अतिशय, सर्वविज्जयी हों जयी अवश्य ।
नख से शिख कंचन अंगा, हैं सुवर्णबिन्दु अति शुभंगा ।।(२९०)

भावार्थ: *शत्रुओं को अतिशय से जीतते हैं (अर्थात शत्रुओं को जीतने के हेतु हैं), अतः* ***जयंत*** *हैं। प्रभु की विजय अवश्य होती है अतः* ***सर्वविज्जयी*** *हैं। नख से शिख तक सम्पूर्ण अंग स्वर्ण निर्मित हैं, इसलिए भगवान्* ***सुवर्णबिन्दु*** *हैं।*

हैं अक्षोभित राग द्वेषा, अक्षोभ्य सुमर मिटे सब ईर्षा ।
ब्रह्मा सहित सभी के ईश्वर, जग जाने सर्ववागीश्वरेश्वर ।।(२९१)

भावार्थ: *जो राग द्वेष इत्यादि से अक्षोभित हैं, तथा जिनके स्मरण से ईर्षा भाव समाप्त हो जाता है, वह प्रभु* ***अक्षोभ्य*** *हैं। ब्रह्मा सहित सभी देवों के स्वामी* ***सर्ववागीश्वरेश्वर*** *हैं।*

है सम सरोवर महान हृदय, दें निर्वाण महाह्रद दिव्य ।
दुस्तर माया गर्त समाना, महागर्त महारथी भगवाना ।।(२९२)

भावार्थ: *निर्वाण देने वाले दिव्य प्रभु का हृदय सरोवर के सामान वृहद है, अतः वह* ***महाह्रद*** *हैं। भगवान् की माया गर्त के समान अति दुस्तर है, ऐसे महारथी प्रभु को* ***महागर्त*** *नाम से पुकारा गया है।*

हैं अनिवछिन्न तीनहुँ काला, करें महाभूत निशपंथ उजाला ।
बसत प्रभु माँ श्री के हृदय, हैं महानिधि दिव्य अति पूज्य ।।(२९३)

भावार्थ: *तीनों कालों से अनिवछिन्न (असंबंधित), अन्धकार से प्रकाश में ले जाने वाले प्रभु को* ***महाभूत*** *नाम से जाना जाता है। माँ श्री (लक्ष्मी) के हृदय में बसने वाले अति पूज्य दिव्य भगवान् को* ***महानिधि*** *पुकारा गया।*

मनमोहक हरि भू-भार मुक्ता, हैं कुमुद संत अनुमोदिता ।
वधो हिरण्डयाक्ष हरि पूज्य, दें कुंदर सम पुष्प लालित्य ।।(२९४)

भावार्थ: *मन को मोहने वाले भगवान् ने संतों को प्रसन्न करने एवं पृथ्वी को भार मुक्त (असंतों से) करने के लिए* ***कुमुद*** *रूप में जन्म लिया। (वराह अवतार में) हिरण्डयाक्ष को विदीर्ण करने वाले प्रभु का* ***कुंदर*** *स्वरुप (कुंद) पुष्प के समान पवित्र फल देने वाला है।*

दें दान भू सम कश्यप ऋषि, दें कुन्द मंगल आयुषि ।
शीतल भू वर्षहिं मेघा, हिय शांत प्रजन्य नाशें अघा ।।(२९५)

भावार्थ: *कश्यप ऋषी को पृथ्वी दान देने वाले प्रभु जो प्रगति, मंगल और दीर्घ आयु के प्रतीक हैं, उन्हें* ***कुंद*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। जिस प्रकार मेघ के वर्षने से भू शीतल होती है, उसी प्रकार प्रभु* ***पर्जन्य*** *तीनों प्रकार के पापों (दैहिक, दैविक एवं भौतिक) का नाश कर मन को शांति प्रदान करते हैं।*

पावन है प्रभु दिव्य नाम, सहज मिलें श्री अनिल भगवान ।
मिली सुधा जब सिंधु मन्थन, करें अमृताश अमृत वितरन ।।(२९६)

भावार्थ: *प्रभु पवित्र हैं, अतः* ***पावन*** *हैं। (संतों को) सहजता से मिलते हैं, अतः* ***अनिल*** *हैं। समुन्द्र मंथन में मिले अमृत को (देवों में) वितरण करने वाले प्रभु* ***अमृताश*** *हैं।*

हैं अमर प्रभु सौंदर्ययुक्त, अमृतवपु हरें सब विपत ।
हैं सर्वज्ञ सर्ववित मन्त्रा, सर्वतोमुख के मुख सर्वत्रा ।।(२९७)

भावार्थ: *विपदाओं का हरण करने वाले प्रभु अमर एवं अति सुन्दर हैं, अतः वह* ***अमृतवपु*** *हैं। सर्ववित मन्त्रा (मन्त्र इत्यादि सब कुछ जानने वाले) हैं, इसलिए* ***सर्वज्ञ*** *हैं। भगवान् के नेत्र और मुख सब ओर (सर्वव्यापी) हैं, अतः* ***सर्वतोमुख*** *हैं।*

मिलें सुलभ नैकहुँ निष्ठा, अभोक्त सुव्रत भोजन शिष्टा ।
करें कार्य सिद्ध स्वक्षमता, जीतें वैरी सहज शत्रुजिता ।।(२९८)

भावार्थ: *अल्प निष्ठा (निश्चय) से ही प्रभु मिल जाते हैं, अतः* ***सुलभ*** *हैं। भोजन में शिष्ट हैं (अर्थात भोजन मात्रा में नियमित हैं), अभोक्त हैं, इसलिए* ***सुव्रत*** *हैं। सर्व कार्य अपनी ही क्षमता से करते हैं (अर्थात किसी पर भी निर्भर नहीं हैं), अतः* ***सिद्ध*** *हैं। शत्रुओं को सहजता से ही जीत लेते हैं, इसलिए* ***शत्रुजिता*** *हैं।*

कांपें संत-रिपु सुन नामा, दें दुःख असुर शत्रुतापना ।
वरन रोध माया स्वइच्छा, अवतरे न्यग्रोध संत रक्षा ।।(२९९)

भावार्थ: *जिनके नाम सुनने मात्र से संतों के शत्रु कांपने लगते हैं, और जो असुरों को पीड़ा देने वाले है (अर्थात उनका संहार करने वाले हैं), उन प्रभु को* ***शत्रुतापना*** *नाम से सम्बोधित किया गया है। जो संतों की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं, तथा अपनी इक्षा से ही माया को स्वीकार अथवा अस्वीकार करते हैं, वह भगवान्* ***न्यग्रोध*** *हैं।*

हैं अन्नपूर्णा जीवन प्रदाना, उदुम्बर तुम श्रेष्ठ भगवाना ।
हैं अविनासी साकार प्रत्यक्ष, अश्वत्थ हैं सम वृहद वृक्ष ।।(३००)

भावार्थ: *श्रेष्ठ भगवान् जो अन्नपूर्णा रूप में जीवन दान (अन्न दान) देते हैं, वह प्रभु* ***उदुम्बर*** *हैं। प्रत्यक्ष रूप में साकार एक बड़े वृक्ष के सामान अविनासी प्रभु* ***अश्वत्थ*** *हैं।*

जब वधो चाणूर योद्धा, तब चाणूरांधृनिषूदन बोद्धा ।
ओज सम सहस्त्र सूर्य, है नाम सहस्रार्चि हरि दिव्य ।।(३०१)

भावार्थ: *जिन्होंने चाणूर नाम के महायोद्धा का वध किया, वह ज्ञानी भगवान्* ***चाणूरांधृनिषूदन*** *हैं। जिन दिव्य प्रभु का ओज सहस्त्र सूर्यों के समान है, वह* ***सहस्रार्चि*** *हैं।*

काली कराली सुलोहिता, मनोज सुधुम्र विश्वरुचिता ।
स्फुलिंगनी हैं सप्तरसना, सप्तजिव्ह हरि हृदयरमना ।।(३०२)

भावार्थ: *काली, कराली, सुलोहिता, मनोज, सुधुम्र, विश्वरुचि एवं स्फुलिंगनी, ये शास्त्र वर्णित सात जिव्हा है,। इन सात जिव्याओं के स्वामी हृदय में रमण करने वाले* ***सप्तजिव्ह*** *हैं।*

सप्त दीप्ति सप्त समिधा, हैं मंत्रवर्ण वाचित सप्तैधा ।
सप्त अभिधान हरि वाहन, श्रुति कहे हरि सप्तवाहन ।।(३०३)

भावार्थ: *मंत्रवर्ण ग्रन्थ के अनुसार भगवान् की सप्तदीप्ति एवं सप्तसमिधा हैं, अतः उन्हें* ***सप्तैधा*** *कहकर पुकारा जाता है। भगवान् के वाहन की सात उपाधियाँ हैं, इसलिए श्रुति उन्हें* ***सप्तवाहन*** *कहकर उच्चारित करती है।*

हैं आकार-रहित जगाधार, अमूर्ति करें दमन प्रतिकार ।
हैं निष्पाप अनघ परमेश्वर, हैं प्रपंचहीन अचिन्त्य ईश्वर ।।(३०४)

भावार्थ: *आकार रहित निराकार प्रभु जो प्रतिकार की भावना का दमन करते हैं, उन्हें* ***अमूर्ति*** *नाम से बुलाया गया है। निष्पाप प्रभु* ***अनघ*** *हैं। प्रपंचहीन होने के कारण उन्हें* ***अचिन्त्य*** *नाम दिया गया है।*

भयभीत असुर सुन भयकृदा, भयनाशन दूर करें आपदा ।
अति सूक्ष्म अणु परमात्मा, ब्रह्म स्वरुप है बृहत आत्मा ।।(३०५)

भावार्थ: ***भयकृदा*** *नाम सुनते ही असंत भयभीत हो जाते हैं।* ***भयनाशन*** *भगवान् कष्टों को दूर करते हैं। परमात्मा का आकार अति सूक्ष्म है, अतः वह* ***अणु*** *हैं। ब्रह्म स्वरुप होने के कारण ईश्वर को* ***बृहत*** *कहा गया है।*

श्री क्रश निवारें भौतिकता, दें स्थूल असीम दिव्यता ।
सत रज तम नियामक, हैं गुणभृत विश्व के शासक ।।(३०६)

भावार्थ: *सांसारिकता को दूर करने वाले (अतः निर्वाण की और ले जाने वाले) प्रभु* ***क्रश*** *हैं। सर्वात्मिक दिव्यत्ता के स्वामी* ***स्थूल*** *हैं। शुभ आचरण की ओर प्रेरित करने वाले सत, रज और तम गुणों के अधिष्ठाता भगवान् ***गुणभृत*** हैं।*

श्री निर्गुण द्वेषहीन भगवंता, महान सर्वगत परम नियंता ।
है न आधार अधृत जन्मना, रहें सुधृत सदैव स्वगरिमा ।।(३०७)

भावार्थ: *द्वेषहीन होने के कारण प्रभु को* ***निर्गुण*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। सर्वगत पवित्र भगवान् ***महान*** हैं। जिनके जन्म का कोई आधार नहीं है (अतः स्वेक्षा से जन्म लेते हैं), वह हरि ***अधृत*** हैं। (श्रुति कहती है) जो अपनी ही महिमा में रहते हैं, वह भगवान् ***सुधृत*** हैं।*

स्वास्य हरि वेद बखाना, प्राग्वंश जन्म काल न जाना ।
अवतरे हरि स्वैच्छा भूतल, करें वंशवर्धन पोषित थल ।।(३०८)

भावार्थ: *वेद का बखान करने वाले प्रभु* ***स्वास्य*** *हैं। भगवान् के जन्म का समय कोई नहीं जानता, अतः उन्हें* ***प्राग्वंश*** *कह कर पुकारा गया। स्वेक्षा से पृथ्वी पर अवतार लेने वाले भगवान् भूतल जीवों को पोषित करते हैं, इसलिए उन्हें* ***वंशवर्धन*** *नाम से सम्बोधित किया गया है।*

भूभार धरें बन शेषनाग, जपत भारभृत जागें सुभाग ।
गावें ग्रंथ गुण भगवाना, कथित नाम सब जग जाना ।।(३०९)

भावार्थ: *शेषनाग रूप में पृथ्वी का भार धारण करने वाले* ***भारभृत*** *भगवान् का नाम जपने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। जिन प्रभु की ग्रन्थ प्रशंसा करते हैं, और जिन्होंने जग में प्रसिद्धि पाई है, उन भगवान् को* ***कथित*** *नाम से बुलाया जाता है।*

वेद ग्रन्थ योग के ज्ञानी, योगी ऋषि कपिल समानी ।
स्थिर समाधी शांत चित्त, हैं योगीश दृढ़ प्रत्येक सत्त ।।(३१०)

भावार्थ: *ऋषि कपिल के समान वेद, ग्रन्थ, योग आदि के ज्ञाता प्रभु* ***योगी*** *हैं। जिनका मन सदैव शांत और समाधी में स्थित रहता है, और हर परस्थिति में दृढ रहते हैं, उन प्रभु को* ***योगीश*** *कह कर सम्बोद्धित किया गया है।*

फलें कामना जपत अनंता, सर्वकामद नाशें सब चिंता ।
नर नारी भटकें भवसागर, आश्रम देत विश्रांति निरंतर ।।(३११)

भावार्थ: *जिनके जपने से चिंताओं का नाश होता है और समस्त कामनाएं फलीभूत होती हैं, वह प्रभु* ***सर्वकामद*** *हैं। इस भवसागर में भटके हुए नर नारीओं को जो शांति प्रदान करते हैं, वह भगवान्* ***आश्रम*** *हैं।*

श्रमण सुन असंत भयभीता, क्षाम करें क्षीण विलीनता ।
दें शीतलता हरि सम वृक्षा, सुपर्ण पूर्ण करें सब इच्छा ।।(३१२)

भावार्थ: *प्रभु का* ***श्रमण*** *नाम दुष्टों को भयभीत कर देता है। विलीनता (प्रलय) पर* ***क्षाम*** *भगवान् (जीवों को) क्षीण कर देते हैं। (प्रलय काल में जीवों की क्षीणता उन्हें शरीर त्यागने में सुलभता कर देती है)। वृक्ष की छाया के समान शीतलता प्रदान करते हुए* ***सुपर्ण*** *(संसार वृक्ष रूप परमात्मा के सुन्दर पत्ते) (भक्तों की) सब इक्षाएं पूर्ण करते हैं।*

तुम्हरे नियंत प्रवाहित वायु, करें प्रदान वायुवाहन आयु ।
धनु सोहित धनुर्धर शरीरा, अवतरे राम रूप हरि धीरा ।।(३१३)

भावार्थ: *वायु को प्रवाहित कर* ***वायुवाहन*** *प्रभु (जीवों को) आयु प्रदान करते हैं। राम रूप में अवतरित धैर्यवान प्रभु के शरीर पर धनुष शोभायमान है, इसलिए उन्हें* ***धनुर्धर*** *कह कर सम्बोद्धित किया गया है।*

हैं दशरथ-नन्द धनुर्विज्ञानी, धनुर्वेद प्रभु पूजें ज्ञानी ।
दण्ड करें दण्डित असुरा, दमयिता करें दमन व्यग्रा ।।(३१४)

भावार्थ: *दशरथ जी के पुत्र (श्री राम) जिनकी ज्ञानी पूजा करते हैं, वह धनुर्विज्ञान में निपुण हैं, अतः* ***धनुर्वेद*** *हैं। असुरों को दण्डित करने वाले भगवान् ***दण्ड*** हैं। भू वासी जीवों की व्यग्रता को दमन करने वाले प्रभु* ***दमयिता*** *हैं।*

दें दंड दम बन न्यायाधीशा, फल कुकर्म भुगतें पापीशा ।
अजय प्रभु अपराजित नामा, सक्षम सर्वसह सब कामा ।।(३१५)

भावार्थ: *कुकर्मों को प्रोत्साहित करने वाले दुष्टों को न्यायाधीश के रूप में जो दण्डित करते हैं, वह प्रभु* ***दम*** *हैं। भगवान् को कोई पराजित नहीं कर सकता, वह अजेय हैं, अतः* ***अपराजित*** *नाम से जाने जाते हैं। सब कार्यों में सक्षम भगवान्* ***सर्वसह*** *हैं।*

शासक विश्व अतैव नियंता, हैं हरि नियम सूत्र संचालिता ।
अजर अमर अमिट भगवंत, हैं यम अनश्वर होए न अंत ।।(३१६)

भावार्थ: *भगवान् विश्व के शासक हैं, अतः* ***नियंता*** *हैं । (प्रकृति के) नियमों को सूत्रित (संचालित) करते हैं, अतः* ***नियम*** *हैं। अजर, अमर, अमिट, अनश्वर प्रभु* ***यम*** *हैं।*

हैं सतधर्म समृद्ध सत्यवान, हैं सात्विक सतप्रिय भगवान ।
हैं सत्य सर्वोत्तम शिक्षक, सत्यधर्मपरायण सब के पालक ।।(३१७)

भावार्थ: *समृद्ध सत्यधर्मी भगवान् **सत्यवान** हैं। सत्य ही जिनको प्रिय है, वह हरि **सात्विक** हैं। सत्य के सर्वोत्तम शिक्षक प्रभु **सत्य** हैं। धर्म (सु) का पालन करने वाले **सत्यधर्मपरायण** हैं।*

लक्ष्य मोक्ष जब काल प्रलय, हरि अभिप्राय संतन के पूज्य ।
प्रदान करें प्रभु अभिलाषा, हरि प्रियार भक्तन की आशा ।।(३१८)

भावार्थ: *अंत समय में मोक्ष को लक्ष्य बनाने वाले संतों के पूज्यनीय प्रभु **अभिप्राय** हैं। भक्तों की आशा **प्रियार** भगवान् उनकी प्रिय इक्षाओं को पूरित करते हैं।*

करें अर्चन पूजन नमस्कार, है अर्ह समर्पित संसार ।
जब जपें भजें नर भगवंता, दें प्रियकृत फल शुभंता ।।(३१९)

भावार्थ: *जिन प्रभु को प्रणाम करते हुए संसार समर्पित होकर पूजा एवं प्रशंसा करता है, वह भगवान् **अर्ह** हैं। जिनकी स्तुति, भजन एवं जप शुभ फल की प्राप्ति कराता है, वह प्रभु **प्रियकृत** हैं।*

संतन स्नेह हेतु अवतारा, प्रीतिवर्धन तब विश्व पुकारा ।
हरि हिय सम आकाशा, विहायसगति संत की आशा ।।(३२०)

भावार्थ: *संतों से प्रेम के कारण प्रभु अवतरित होते हैं इस कारण विश्व उन्हें **प्रीतिवर्धन** कह कर पुकारता है। सत्पुरुषों की आशा भगवान् **विहायसगति** का हृदय अत्यंत विशाल है। (अर्थात वह संतों के अवगुण नहीं देखते)।*

हैं नारायण ज्योति स्वरूपा, हैं हरि ज्योति रवि अनुरूपा ।
सुरुचि दें सुभग रूचि प्रज्ञा, हुतभुक भोगें आहुति यज्ञा ।।(३२१)

भावार्थ: *सूर्य के समान परम ज्योतिस्वरूप प्रभु* ***ज्योति*** *हैं। सुन्दर रूचि (दीप्ति) वाले अति बुद्धिमान हरि* ***सुरुचि*** *हैं। यज्ञ की आहुति स्वीकार करने वाले भगवान्* ***हुतभुक*** *हैं। (यज्ञ आहुति स्वीकार कर मनोवांछित फल देते हैं)।*

हैं विभु सर्वभूत देवप्रिय, ग्रहैं रवि रस सम आदित्य ।
सर्वत्र शोभित हरि विरोचन, दें जन्म सूर्य श्री दिव्यन ।।(३२२)

भावार्थ: *देवताओं के प्रिय सर्वव्यापी प्रभु* ***विभु*** *हैं। आदित्य के समान रस ग्रहण करने वाले प्रभु को* ***रवि*** *कह कर बुलाया गया है। सर्वत्र शोभायमान भगवान्* ***विरोचन*** *है। शोभित श्री (लक्ष्मी/ धन धान्य) को जन्म देने वाले हरि* ***सूर्य*** *है।*

दें सवित जन्म भूजन, नैन सूर्य सम अतः रविलोचन ।
नित्य सर्वगत अनन्त प्रिया, हुतभुग भोगैं यज्ञ हव्या ।।(३२३)

भावार्थ: *भू जीवों को उत्पन्न करने वाले प्रभु* ***सवित*** *हैं। सूर्य के समान नेत्र वाले भगवान्* ***रविलोचन*** *हैं। प्रिय, पावन तथा सर्वव्यापी हरि* ***अनंत*** *हैं। यज्ञ हवि को भोगने (स्वीकार करने) वाले प्रभु* ***हुतभुग*** *हैं।*

त्रिलोक पालन करें भोक्ता, करें सुखद शोक-मुक्ता ।
सत रक्ष हेतु जन्मे कई बार, नैकज करें दुष्टों पर वार ।।(३२४)

भावार्थ: *तीनों लोकों का पालन करने वाले भगवान्* ***भोक्ता*** *नाम से जाने जाते हैं। संतों को शोकमुक्त करने वाले प्रभु* ***सुखद*** *हैं। सत्य (धर्म) की रक्षा के लिए बार बार पृथ्वी पर जन्म लेने वाले हरि* ***नैकज*** *हैं।*

हैं प्रारूप अग्रज भगवाना, अनिर्विन्द्य अव्यग्र जगजाना ।
क्षमाशील सदामश्री इष्टा, आश्रित विश्व अतैव लोकधिष्ठा ।।(३२५)

भावार्थ: *भगवान् का रूप प्राथमिक है (उनसे बड़ा कोई नहीं), इसलिए वह* ***अग्रज*** *हैं। सदैव शांत रहते हैं, इसलिए जग में* ***अनिर्विन्द्य*** *नाम से जाने जाते हैं। क्षमाशील प्रभु* ***सदामश्री*** *हैं। विश्व जिनपर आधारित (आश्रयी)है, वह प्रभु* ***लोकधिष्ठा*** *हैं।*

विचित्र कर्म हरि अद्भुत, है काल विकल्प सनात सत ।
वय अधिक ब्रह्म अनंत, सनातनतम का आदि न अंत ।।(३२६)

भावार्थ: *प्रभु की कार्य करने की प्रणाली विचित्र है (भगवान् के स्वरुप, शक्ति, व्यापार और कार्य अद्भुत हैं), अतः वह* ***अद्भुत*** *हैं। काल भी प्रभु का ही विकल्प है, इसलिए वह* ***सनात*** *(चिरकाल वाची निपात) हैं। जिनका न कोई आदि है न अंत, और ब्रह्मा से भी अधिक आयु के हैं, वह हरि* ***सनातनतम*** *(अत्यंत प्राचीन) हैं।*

बड़वानल सम कपिल ईशा, कपि श्रेष्ठ समान तपीशा ।
समाए जग जब अंतकाल, अप्ययः हरि नाशें त्रिकाल ।।(३२७)

भावार्थ: *(बड़वानल का कपिल वर्ण होता है) बड़वानल रूप होने के कारण प्रभु को* ***कपिल*** *कहा गया है। सूर्य (तपीशा) के समान श्रेष्ठ है, अतः* ***कपि*** *हैं। (श्रुति में वराह को कपि कहा गया है, क्योंकि भगवान् ने वराह रूप में अवतार लिया था, इसलिए वह* ***कपि*** *कहलाये)। प्रलय काल में त्रिलोक नष्ट होकर प्रभु में समा जाता है, अतः भगवान्* ***अप्ययः*** *हैं।*

दें सुख हरि मंगलदाता, हैं स्वस्तिद प्रभु आनंददाता ।
जपें अनंत पाएं आनंद, है स्वस्तिकृत अवतार सुनंद ।।(३२८)

भावार्थ: *सुख, मंगल और आनंद प्रदान करने वाले प्रभु* ***स्वस्तिद*** *हैं। जिनके भजने से आनंद की अनुभूति होती है, ऐसे सुहाने (सुनन्द) अवतार को* ***स्वस्तिकृत*** *नाम से पुकारा गया है।*

ईश्वर रुप दे अति आनन्द, स्वस्ति पूजन सों ब्रह्मानंद ।
संतरक्षक शुभतादायक, स्वस्तिभुक हैं अमृतदायक ।।(३२९)

भावार्थ: अति आनंदमयी प्रभु के **स्वस्ति** रूप की उपासना से मन अति सुनन्द (सुहाना) हो जाता है। अमृत वितरित करने वाले, संतो की रक्षा कर उन्हें शुभता प्रदान करने वाले प्रभु को **स्वस्तिभुक** पुकारा जाता है।

सुमर नाम हो कल्याना, स्वस्तिदक्षिण विश्व तब जाना ।
हैं कर्म रोग कोप त्रिरौद्र, राग द्वेष रहित हरि अरौद्र ।।(३३०)

भावार्थ: *जिनके नाम के स्मरण (मात्र) से कल्याण होता है, उन प्रभु को* ***स्वस्तिदक्षिण*** *नाम से जग जानता है। कर्म, रोग और कोप, ये तीन रौद्र हैं, इन रौद्रों से रहित एवं राग द्वेष से विहीन प्रभु* ***अरौद्र*** *हैं।*

धारो धरती शेष अवतार, हरि कुंडली वसुंधरा आधार ।
धारो सुदर्शन हेतु जन रक्षा, चक्री वधें असुर स्वइच्छा ।।(३३१)

भावार्थ: *शेष रूप अवतार में पृथ्वी धारण करने के कारण प्रभु मही के आधार बने, अतः उन्हें* ***कुंडली*** *नाम से पुकारा गया। लोक रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र धारी भगवान् अपनी इक्षा से दुष्टों का वध करते हैं, वह* ***चक्री*** *नाम से जाने गए।*

हैं शूरवीर अत्यंत विलक्षण, वधें विक्रमी रिपु अल्प क्षण ।
ऊर्जितशासन विधि के ज्ञाता, अनुसरण सों सुखी हों संता ।।(३३२)

भावार्थ: *अति विलक्षण शूरवीर प्रभु जो शत्रुओं का वध अल्प समय में ही कर देते हैं,* ***विक्रमी*** *नाम से जाने जाते हैं। (प्रकृति के) नियमों को नियंत्रित करते हैं जिनका अनुसरण कर साधु सुख को प्राप्त होते हैं, उन्हें भगवान्* ***ऊर्जितशासन*** *के नाम से पुकारा जाता है।*

वरन असंभव हरि गुन शब्दा, शब्दातिग प्रभु हैं शुभदा ।
गाएं चरित वेद व् ग्रंथा, हैं शब्दसह प्रभु धर्म संस्था ।।(३३३)

भावार्थ: *प्रभु का वरणन शब्दों से नहीं किया जा सकता। ऐसे भगवान् जो शुभकारी हैं, उन्हें* ***शब्दातिग*** *नाम से जाना जाता है। समस्त वेद और ग्रन्थ जिनका चित्रण करते हैं, धर्म का पाठ पढ़ाने वाले ऐसे प्रभु को* ***शब्दसह*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

हरि शीतल सम चन्द्रमा, बसें शिशिर सन्त आत्मा ।
नाशें तम करें प्रकाश, शर्वरीकर सम रवि आकाश ।।(३३४)

भावार्थ: *चंद्र के समान शीतलता देने वाले* ***शिशिर*** *प्रभु संतों की आत्मा में बसते हैं। आकाश स्थित सूर्य के समान अंधकार दूर कर प्रकाश करने वाले भगवान्* ***शर्वरीकर*** *हैं।*

कोप रहित हितीय भगवंता, अक्रूर विषय रहित नियंता ।
पावन कर्म तन मन वानी, पेशल सुमर तरहिं सब ज्ञानी ।।(३३५)

भावार्थ: *क्रोध एवं विषयों (अवगुणों) से रहित हित करने वाले प्रभु* ***अक्रूर*** *हैं। जो तन, मन वाणी और कर्म से पवित्र हैं एवं जिनका नाम स्मरण से ज्ञानी (भवसागर) तर जाते हैं, उनको* ***पेशल*** *नाम से जाना जाता है।*

दक्ष हरि सब कर्म निपुण, दक्षिण नियंत्रित करें सब गुण ।
हैं हिती क्षमाशील भगवाना, हैं क्षमिनामवर हरि भूधरना ।।(३३६)

भावार्थ: *सर्व कर्म निपुण प्रभु* ***दक्ष*** *हैं। (जीवों के) सब गुण का कारण भगवान्* ***दक्षिण*** *हैं। मही को धारण करने वाले हितीय एवं क्षमाशील प्रभु* ***क्षमिनामवर*** *हैं।*

परम विद्वान् वेद विज्ञाता, हरि विद्वित्तं हिय संत समाता ।
हैं वीतभय निडर भगवाना, सुमर नाम हरि भयनाशना ।।(३३७)

भावार्थ: *संतों के ह्रदय में वास करने वाले वेदों के ज्ञाता अत्यंत विद्वान् प्रभु* ***विद्वित्तं*** *हैं। निडर भगवान् जो स्मरण करने वालों के लिए भयनाशना (भय को नाश करने वाले) हो जाते हैं, वह हरि* ***वीतभय*** *हैं।*

पावन परम प्रभु चरित्र, हैं पुण्यश्रवणकीर्तन संतन के मित्र ।
पारें भवसागर सम नाविक, उत्तारण अलंकृत सम राविक ।।(३३८)

भावार्थ: *(संतों के) सुमित्र, परम पवित्र चरित्र वाले प्रभु* ***पुण्यश्रवणकीर्तन*** *हैं। नाविक समान (भव) सागर पार कराने वाले सूर्य की किरणों की तरह अलंकृत भगवान्* ***उत्तारण*** *हैं।*

करें अंत दुष्कृतिहा दैत्य, पुण्य सुमर हो हिय पुनित्य ।
नाशें अनर्थ सूचक सपना, दुःस्वप्ननाशन हरि हैं सुमना ।।(३३९)

भावार्थ: *अपवित्रों (दुष्टों) का वध करने वाले प्रभु* ***दुष्कृतिहा*** *नाम से जाने जाते हैं। जिनके स्मरण से हृदय पवित्र हो जाता है, वह भगवान्* ***पुण्य*** *हैं। अनर्थ सूचक स्वप्नों को जो नष्ट कर देते हैं (अतः दुःस्वप्नों का प्रभाव नष्ट कर देते हैं), वह मन को भाने वाले (पुष्प समान) हरि* ***दुःस्वप्ननाशन*** *हैं।*

मुक्तिदाता हरि पाप हरता, हैं वीरहा भवसागर खेवता ।
सगुन समाहित रक्षण रक्षका, सत्पथी संत हरि अनुष्का ।।(३४०)

भावार्थ: *भवसागर को खेवने वाले (पार लगाने वाले) एवं पाप हरने वाले मुक्तिदाता प्रभु को* ***वीरहा*** *नाम से पुकारा जाता है। सत्य गुण समाहित रक्षा करने वाले भगवान्* ***रक्षण*** *हैं। सत्य पथ पर चलने वाले अनुग्रही हरि* ***संत*** *हैं।*

हैं जीवन प्राणरूप जगदीशा, पर्यवस्थित सर्ववित हैं ईशा ।
अनेकरूप धर भू अवतारा, अनन्तरूप धर भक्तन तारा ।।(३४१)

भावार्थ: *प्राण रूप से समस्त जीवों को जीवित रखते हैं, अतः* ***जीवन*** *हैं। सर्वव्यापी हैं, इसलिए* ***पर्यवस्थित*** *हैं। भक्तों को (भवसागर) तारने के लिए अनेक रूप धारण कर पृथ्वी पर अवतार लिया, इस कारण प्रभु को* ***अनन्तरूप*** *कहा गया।*

पराशक्ति भगवान् नियंता, अनंतश्री के भण्डार अनंता ।
हैं क्रोधहीन जितमन्यु कहाता, भयापह अभय के दाता ।।(३४२)

भावार्थ: *अपरिमित शक्ति वाले प्रभु जिनका भण्डार अनंत (कभी न समाप्त होने वाला है) है, वह* ***अनंतश्री*** *हैं। क्रोध (मन्यु) से रहित हैं (क्रोध को जीत लिया है), इस कारण उन्हें* ***जितमन्यु*** *नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। (संसार जीवों को) अभयदान देने वाले भगवान्* ***भयापह*** *हैं।*

देत फल जन कर्मानुसारा, हैं चतुरश्र प्रभु पञ्च अनुसारा ।
असंभव प्रमाण हरि चित्रन, लीन गभीरात्मा गहन चिंतन ।।(३४३)

भावार्थ: *पंचों के सामान जीवों को उनके कर्मानुसार फल देते हैं, अतः* ***चतुरश्र*** *हैं। हरि चरित्र का कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता (उनकी लीला अपरम्पार है), जो सदैव गहन चिंतन में लीन रहते हैं, वह* ***गभीरात्मा*** *हैं।*

विदिश दिशाओं के स्वामी, हैं इन्द्रादि व्यादिश अनुगामी ।
न्याय करत करम अनुकूल, हैं दिश वेद ग्रंथन के मूल ।।(३४४)

भावार्थ: *(सर्व) दिशाओं के स्वामी* ***विदिश*** *हैं। इन्द्र आदि सभी देव जिनका अनुसरण करते हैं, वह प्रभु* ***व्यादिश*** *हैं। वेद ग्रंथों के मूल* ***दिश*** *भगवान् सभी (जीवों) को उनके कर्मों के अनुसार न्याय कर फल देते हैं।*

असंभव आदि अनंत जाना, अनादि हरि ग्रंथन गाना ।
जग आधार भूर्भवः ईश्वर, हरि लक्ष्मी पूजें महीश्वर ।।(३४५)

भावार्थ: *प्रभु का आदि और अनंत का जानना असंभव है, ऐसा ग्रंथों में वर्णित है, अतः उन्हें* ***अनादि*** *नाम से जाना जाता है। समस्त जगत (जीवों) के आधार (भू) भगवान्* ***भूर्भवः*** *हैं। पृथ्वी के स्वामी होने के कारण, उन्हें* ***लक्ष्मी*** *नाम से जाना जाता है।*

सुमरत होइ हिय शुभ कम्पन, हरि सुवीर हैं विश्वनंदन ।
ईश भुजबंध अति कल्याना, रुचिरांगद तब ग्रंथन गाना ।।(३४६)

भावार्थ: *जिनके नाम स्मरण से हृदय में शुभ कम्पन होती है ऐसे विश्व के स्वामी* ***सुवीर*** *नाम से विख्यात हैं। भगवान् के भुजबंध अति कल्याणकारी हैं, ऐसा ग्रन्थ कहते हैं, अतः उन्हें* ***रुचिरांगद*** *नाम से जाना जाता है।*

करें उद्गम जनन जीवादि, हेतु जन्म हरि जनजन्मादि ।
हैं भयरूप वज्र से युक्त, भीम करें रिपु जीवन-मुक्त ।।(३४७)

भावार्थ: *जीवों में जीव (प्राण) उद्गम (स्रोत) करने वाले प्रभु* ***जनन*** *हैं। जीवों के जन्म का कारण भगवान्* ***जनजन्मादि*** *है। शत्रुओं का जीवन मुक्त करने वाले भयरूप वज्र से सुशोभित हरि* ***भीम*** *हैं।*

सुन हरि नाम भयी दुष्कर्मा, भीमपराक्रम हरि सुकर्मा ।
हैं पंचभूत मही आधारा, आधारनिलय संसार सहारा ।।(३४८)

भावार्थ: *दैत्य एवं दुष्कर्मियों के हृदय को भयभीत करने वाले सुकर्मीयों के रक्षक प्रभु* ***भीमपराक्रम*** *हैं। पृथ्वी (आदि) पंचभूतों के आधार जिनमें संसार का वास है, वह भगवान्* ***आधारनिलय*** *नाम से जाने जाते हैं।*

काल प्रलय जन धयन नियंत, दें मोक्ष अधात जब हो अंत ।
पुष्प पुंज समान अनन्ता, करें पुष्पहास नमन सब जनता ।।(३४९)

भावार्थ: *प्रलय में जीवों का धयन (पान) कर उन्हें अंत में अपने में लीन कर लेते हैं, ऐसे प्रभु को* ***अधात*** *नाम से बुलाया जाता है। खिले हुए पुष्प के समान सौजन्यता प्रदान करने वाले भगवान्* ***पुष्पहास*** *हैं।*

है प्रकर्ष प्रभु का स्वरूप, प्रजागर हैं प्रबुद्ध प्रारूप ।
हैं हरि ऊध्वग स्वशासक, सत पालक सत्पथाचारक ।।(३५०)

भावार्थ: *बुद्धिमान नियमित प्रभु का स्वरुप अत्यंत आकर्षक है, अतः वह* ***प्रजागर*** *हैं। स्वशासक (जिनका कोई शासक नहीं) भगवान्* ***ऊध्वग*** *हैं। सत्य का पालन करने वाले (सत्य पाथ पर चलने वाले) हरि* ***सत्पथाचारक*** *हैं।*

मृत जीवन के प्रानन दाता, प्राणद परीक्षित जीवनदाता ।
ओंकार नाम प्रणव आत्मा, करें पुण्यकर्म पण परमात्मा ।।(३५१)

भावार्थ: *मृतक जीवों को भी जीवन देने वाले, (मृतक) परीक्षित को जीवन दान दिया (भगवान कृष्ण ने माँ उत्तरा के गर्भ में अश्वथामा के वज्र से रक्षा की), ऐसे प्रभु को* ***प्राणद*** *कहकर सम्बोद्धित किया गया है। प्रभु के वाचक ओंकार का नाम* ***प्रणव*** *है। पुन्यकर्मी प्रभु* ***पण*** *हैं।*

निर्मल ज्ञानी और परमार्थी, प्रमाण सुवित हैं वेदार्थी ।
निलय जन परम पुरुषा, हैं प्राणनिलय अन्तः अरुषा ।।(३५२)

भावार्थ: *पवित्र, ज्ञानी, परमार्थी, वेदों के ज्ञाता एवं सुबुद्धि भगवान् को* ***प्रमाण*** *कह कर सम्बोद्धित किया गया है। श्रेष्ठ पुरुषों के आश्रयदाता प्रभु जिनका अन्तः करण अति स्पष्ट है, वह प्रभु* ***प्राणनिलय*** *हैं।*

हैं अन्नपूर्णा पोषण कर्ता, हैं प्राणभृत निर्वाहन कर्ता ।
है समीर जीवन आधार, यही प्राणजीवन उपहार ।।(३५३)

भावार्थ: *जीविका चलाने वाले पोषण कर्ता* ***अन्नपूर्णा*** *प्रभु को* ***प्राणभृत*** *कहा गया है। वायु जीवन का आधार है, इसको (जीवों के लिए) उपहार स्वरुप देने वाले प्रभु* ***प्राणजीवन*** *हैं।*

हरि सत्यरूप ब्रह्म शिक्षक, तत्व तथ्य सत परमार्थक ।
जल नभ थल अग्नि वाता, हैं तत्ववित्त पंचतत्व ज्ञाता ।।(३५४)

भावार्थ: *ब्रह्म की शिक्षा देने वाले* ***तत्व*** *भगवान् तथ्य, सत्य और परमार्थ के स्वरुप हैं। जल, नभ, थल, अग्नि एवं वायु, ये पंचतत्व हैं, इनके ज्ञाता प्रभु* ***तत्ववित्त*** *हैं।*

एक रूप प्रभु एक आत्मा, हैं एकात्मा पूज्य परमात्मा ।
नियंत्रक जन्म और अंता, हैं जन्ममृत्युजरातिग नियंता ।।(३५५)

भावार्थ: *परमपूज्य प्रभु का एक ही रूप और एक ही आत्मा है, अतः वह* ***एकात्मा*** *हैं। जन्म और मृत्यु को नियंत्रित करने वाले भगवान् को* ***जन्ममृत्युजरातिग*** *नाम से पुकारा गया है।*

भू भुव स्व चतुर्वेद के मूला, हरें भूर्भुवःस्वस्तरु सब शूला ।
जो मुक्ति दे भवसागर तारता, वही तार हरि मोक्ष दाता ।।(३५६)

भावार्थ: *भू, भुव एवं स्व (ये तीन शब्द) चारों वेदों के सार हैं, इनके ज्ञाता जो हर दुःख को दूर करते हैं, वह प्रभु* ***भूर्भुवःस्वस्तरु*** *हैं। भाव सागर पार कर मोक्ष मुक्ति देने वाले भगवान्* ***तार*** *हैं।*

दें हरि सविता जनम भू-आत्मा, हैं प्रपितामह पूर्वज ब्रह्मा ।
यज्ञ समर्पण करें हवि यज्ञा, हैं यज्ञपति यज्ञपालक प्रज्ञा ।।(३५७)

भावार्थ: *भू जीवों को उत्पन्न करने वाले भगवान् **सविता** हैं। ब्रहदेव के (भी) पूर्वज **प्रपितामह** हैं। (उनकी आयु कोई नहीं जानता, अति पुरातन हैं)। **यज्ञ** (अग्नि को) समर्पित हवि हैं। बुद्धिमान यज्ञ पालक प्रभु **यज्ञपति** हैं।*

प्रभु यज्वा हैं यज्ञ सुमंगा, हरि यज्ञांग वराह के अंगा ।
दें फल करें पूर्ण कामना, करें यज्ञवाहन जन कल्याना ।।(३५८)

भावार्थ: *सुमंगलकारी यज्ञ के यजमान प्रभु **यज्वा** हैं। यज्ञ वराह भगवान् के अंग हैं, इसलिए वह **यज्ञांग** हैं। समस्त जीवों से पूजित **यज्ञवाहन** प्रभु यज्ञ फलित कर कामनाओं को पूर्ण करते हैं।*

हैं यज्ञ रक्षक हरि यज्ञभृत, स्वीकारें हवि यज्ञ यज्ञकृत ।
अंगीकृत यज्ञभुक आहुति, यज्ञसाधन पथ हरि प्राप्ति ।।(३५९)

*भावार्थ: **यज्ञी** प्रभु यज्ञ को धारण करते हैं, यज्ञ की रक्षा करते हैं, अतः **यज्ञभृत** नाम से भी जाने जाते हैं। यज्ञ अग्नि आहुति को अंगीकार करने वाले भगवान् **यज्ञकृत** हैं। यज्ञ आहुति स्वीकारने वाले प्रभु को **यज्ञभुक** नाम से भी जाना जाता है। प्रभु की प्राप्ति के पथ (यज्ञ) को **यज्ञसाधन** नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।*

यज्ञ अंत शुभ फल दाता, हरि यज्ञान्तकृत मुक्तिदाता ।
यज्ञगुह्य गुप्त ज्ञान के ज्ञाता, अन्न प्रभु हैं जीवन दाता ।।(३६०)

भावार्थ: *यज्ञ के समापन पर जो शुभ फल देकर मुक्ति प्रदान करते हैं, वह प्रभु **यज्ञान्तकृत** हैं। गुप्त ज्ञान (ब्रह्म ज्ञान) के गुरु **यज्ञगुह्य** हैं। जीवों के आधार भगवान् को **अन्न** नाम से जग ने पुकारा है।*

भोगें अन्न अन्नाद दिव्या, ब्रह्म ज्ञान के आत्मयोनि अव्या ।
स्वइच्छा स्वयंजात जन्मता, वैखान हरि असुर संहारिता ।।(३६१)

भावार्थ: *अन्न का भोग करने वाले दिव्य प्रभु* ***अन्नाद*** *हैं। ब्रह्म (ज्ञान) प्राप्त शुद्ध भगवान्* ***आत्मयोनि*** *हैं। स्वइच्छा से जन्म लेने वाले हरि* ***स्वयंजात*** *हैं। असुरों को संहारने वाले* ***वैखान*** *हैं (प्रभु ने पृथ्वी खोदकर वराह रूप में हिरण्याक्ष का वध किया, इसलिए भी उन्हें वैखान कहा जाता है)।*

शांतिद्रूत ईश त्रिलोका, सामगायन हरि वेद गायका ।
हैं सुत-देवकी देवकीनंदन, रचें विश्व स्त्रष्टा भगवन ।।(३६२)

भावार्थ: *त्रिलोक स्वामी शांतिद्रूत प्रभु वेदों का गान करते हैं, अतः* ***सामगायन*** *हैं। देवकी के पुत्र* ***देवकीनंदन*** *हैं। विश्व के रचने वाले प्रभु* ***स्त्रष्टा*** *हैं।*

भूपति क्षितीश राम भगवन, नाशें पाप हरि पापनाशन ।
पाञ्चजन्य शंख को धारें, हरि शङ्खभृत संत पुकारें ।।(३६३)

भावार्थ: *पृथ्वी के स्वामी श्री राम* ***क्षितीश*** *हैं। प्रभु के* ***पापनाशन*** *नाम जपने से सभी पापों का अंत होता है। पाञ्चजन्य शंख धारी भगवान् को जग* ***शङ्खभृत*** *कहकर पुकारता है।*

नन्दक कृप नन्दकी धर्ता, चक्री हैं भव सागर मुक्ता ।
शार्ङ्गधन्वा हरि धनुषधारी, हैं गदाधर कौमोदकधारी ।।(३६४)

भावार्थ: *नन्दक नाम की तलवार को धारण करने वाले भगवान्* ***नन्दकी*** *हैं। भव चक्र (सागर) से मुक्त करने वाले (मोक्ष देने वाले) प्रभु* ***चक्री*** *हैं (सुदर्शन चक्रधारी होने के कारण भी उन्हें चक्री सम्बोधित किया जाता है)। धनुष (शार्ङ्ग) धारी होने के कारण उन्हें* ***शार्ङ्गधन्वा*** *कहा जाता है। कौमोदकी नमक गदा को धारण करने वाले हरि* ***गदाधर*** *हैं।*

धरें रथाङ्ग चक्र हरि सदा, नाशें रथाङ्गपानी सब आपदा ।
अक्षोभ्य अभयी रिपु अश्त्र, सर्वप्रहरणायुध ईश सब शस्त्र ।।(३६५)

भावार्थ: *रथाङ्ग चक्र को सदैव धारण करने वाले प्रभु* ***रथाङ्गपानी*** *(भक्तों के) समस्त कष्ट दूर करते हैं। (शत्रुओं के) शस्त्रों से जो अभयी हैं (शत्रुओं के शस्त्रों से जिन्हें डर नहीं*

*लगता), वह भगवान् **अक्षोभ्य** हैं। (सब प्रकार के) शस्त्रों के स्वामी प्रभु **सर्वप्रहरणायुध** हैं।*

श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् में उल्लेखित भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों की व्याख्या समाप्त हुई।

।। फल श्रुति।।

जपहिं विष्णुसहस्त्रनाम हिय
लक्ष्य उच्च उपांशु मानसरूप ।
इहलोक सुख परलोक मोक्ष
हो ययाति नहुष सम सुरूप ।।
भवसागर मुक्त परमगति पा
जीवन बने सुमंगल सतरूप ।
हो उदित ब्रह्म बोध शुभ कर्म
क्षत्रिय बनें अर्जुन अनुरूप ।।(क)

भावार्थ: *उच्च, उपांशु, मानसरूप (तीन प्रकार के जप) को लक्ष्य बनाकर जब भगवान् विष्णुसहस्त्रनाम का जप किया जाता है तो ययाति, नहुष (इत्यादि महापुरुषों) के समान इस लोक (इस जीवन) में सुख और परलोक (मरणोपरांत) में मोक्ष की प्राप्ति होती है। सत्यरूप होकर (नर नारियों का) जीवन मंगलमय होता है और भवसागर से मुक्त होकर जीव परमगति को प्राप्त होता है। ब्राह्मणों के शुभ कर्म उदित होते हैं और उन्हें ब्रह्म का बोध होता है। क्षत्रियों को अर्जुन जैसा क्षत्रित्व प्राप्त होता है (भगवान् कृष्ण स्वयं सारथी रूप में मिलते हैं)।*

धन बढ़े वैश्य हो कुबेर सम
हो परम सुखी हिय अति हर्षत ।
होए वृद्धि ज्ञान बनें धर्मार्थी
हों मनोरथ पूर्ण इच्छा धर्मस्त ।।
पाएं फल समान पुत्रेष्ठि यज्ञ
वर पाएं तस संतति तत्कालत ।

हो पावन चित्त भजे जब प्रभु

बनें यशी समाज प्रतिष्ठित ।।(ख)

भावार्थ: *वैश्य को कुबेर समान धन मिलता है और कर्मीओं को परम सुख की प्राप्ति होने से उनका हृदय हर्षित होता है। धर्मार्थीओं को धर्म ज्ञान की वृद्धि होती है और गृहस्थों की इच्छित कामनाएं पूर्ण होती हैं। संतान प्राप्ति इच्छुक युगलों को पुत्रेष्ठियज्ञ यज्ञ समान फल मिलता है, और तुरंत संतति प्राप्त होती है। भगवान् वासुदेव (श्रीविष्णुसहस्त्रनाम) के जप से हृदय को शान्ति मिलती है, यश के साथ कुल में प्रधानता (उच्च पद) की प्राप्ति होती है।*

हों भयहीन ओजस्वी निरोगी

पाएं गुण बल योग और तप ।

अघविहीन लीन सनातन ब्रह्म

हों शुद्ध चित्त मुक्त सब संतप ।।

कहें सब ग्रन्थ बन भक्त नियंत

वृत्त जन्म मरण तब नहीं तपत ।

पाएं शुद्ध आत्मा सुख समृद्धि

धन यश धीर क्षमा नीरवत ।। (ग)

भावार्थ: *इसका (विष्णुसहस्त्रनाम) जप करने से जीव को भय से मुक्ति मिलती है, वह ओजस्वी एवं निरोगी होता है। बल, योग (साधना), तप (सामर्थ्य) और सगुणों की वृद्धि होती है। पाप से रहित होकर उन्हें पापों से मुक्ति मिलती है। मन पवित्र होकर सनातन ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करता है। ग्रन्थ ऐसा कहते हैं कि इसके जप से भगवान् रोग एवं जन्म मरण के कष्ट को दूर कर आत्मा को सुख, समृद्धि, तथा धन, यश, धैर्यता, और क्षमा (दुष्कर्मों से) की प्राप्ति कराते हैं।*

हो क्रोधजित दोषमुक्त बुद्धि

धर्म ज्ञान सम साधक पावत ।

पाठ सों विष्णु सहस्त्रनाम

सुर असुर नर गन्धर्व वंशवत ।।

हों सदाचारी धर्म अनुसरणी

प्रभु कृपा सों हो जीवन उच्चत ।

तर्क वितर्क योग ज्ञान कर्म

सब गुण हैं परमेश्वर नियंत्रित ।।(घ)

भावार्थ: *इसका (विष्णुसहस्त्रनाम) जप करने से क्रोध का विनाश होता है (जीव क्रोध को जीत लेता है), बुद्धि दोषमुक्त होती है तथा साधकों के समान धर्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने से सभी सुर, असुर, प्राणी, गन्धर्व, आदि सभी योनिओं के वंशधर, धर्म में मन को स्थिर करने वाले तथा धर्म का आचरण करने वाले होते हैं, तथा तथा प्रभु की कृपा से ही जीवन उच्चतम पद को प्राप्त होता है। तर्क, वितर्क, योग, कर्म, ज्ञान आदि सभी गुण उन्हीं से नियंत्रित होते हैं (उन्हीं की कृपा से प्राप्त होते हैं)।*

हैं एक मात्र हरि महत्वपूर्ण

हैं अक्षय व्यापी प्रभु अजन्म ।

भजहिं विष्णु सहस्त्रनाम जब

पूर्ण हों कामना इहि जन्म ।।

ना हो भाव पराभव भक्तजन

भजें सदा जो विश्वेश्वर अनंत ।

हैं अजन्मा पुण्डरीकाक्ष ईश

जप मन हिय धारण नियंत ।। (ण)

भावार्थ: *एकमात्र प्रभु ही महत्वस्वरूप हैं। वह सर्व भूतात्मा, अजन्मा और अक्षय हैं। इसका (विष्णुसहस्त्रनाम) जप करने से इस जन्म में इक्षित सुख की प्राप्ति होती है। विश्व के स्वामी अनंत का भजन करने से कभी पराभव (तिरस्कार) का भाव नहीं होता। हे मन हृदय में ऐसे अजन्मा पुण्डरीकाक्ष को हृदय में धारण कर भज।*

महर्षि भगवान् श्री वेद व्यास जी द्वारा मूल संस्कृत ग्रन्थ
श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का हिंदी काव्य सम्पूर्ण

हरिः ॐ तत्सत ! हरिः ॐ तत्सत ! हरिः ॐ तत्सत !

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधि विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं-१५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है, तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

यह काव्य 'श्री विष्णु स्तुति - सहस्त्रनाम हिंदी काव्य' डॉ यतेंद्र शर्मा द्वारा जन कल्याण हेतु 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' को प्रचलित करने का एक प्रयास है। महर्षि भगवान् वेद व्यास ने मूल काव्य 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' की रचना संस्कृत श्लोकों में जन कल्याण हेतु कलियुग में आपदाओं से मुक्ति पाने का एक सुगम मार्ग के रूप में की थी। इसके महात्मय एवं जपने से चमत्कारिक शक्तियों द्वारा जन कल्याण कोई नया विषय नहीं है। अनगनित ग्रन्थ एवं ऋषियों ने इसके महात्मय के बारे में वर्णन किया है। संस्कृत लिपिवद्ध होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल ग्रन्थ के भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों को यथाचित रखते हुए हिंदी में भगवान् के नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है। कविता रूप में पाठ करने से स्वर उच्चारण पर अति आनंद आता है तथा तरंगों द्वारा भगवान् के प्रति आकर्षण बढ़ता है। यह ग्रन्थ सबके लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है। इस काव्यानुवाद ग्रन्थ में ३६५ चौपाइयां हैं। अगर एक चौपाई का भी हृदय से प्रतिदिन गायन किया जाए, तो एक वर्ष में सम्पूर्ण काव्यग्रंथ पढ़ा जा सकता है, एवं भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।